हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना,बुधवार | 23 अक्टुबर 2024 | वर्ष : 02 | अंक :158 | पृष्ठ -14 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति बनीं मुख्य यजमान,

एजेंसी

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन में आठवें दीपोत्सव को भव्य और दिव्य बनाने की तैयारी पूरी कर ली गयी है। इसी क्रम में डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल ने दीपोत्सव-2024 को ऐतिहासिक बनाने के लिए 22 अक्टूबर मंगलवार को प्रातः 7 बजे राम की पैड़ी पर मुख्य यजमान के रूप में वैदिक मंत्रोचार के साथ पूजन अर्चन किया। इस पूजन में सरयू मन्दिर के पुजारी नेत्रजा मिश्र सहित अन्य ने विधि विधान से दीपोत्सव की सफलता के लिए पूजन कराया। कुलपति ने बताया कि प्रभु श्रीराम के आशीर्वाद से प्रांतीय दीपोत्सव का विश्व रिकॉर्ड बनेगा। श्रीरामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के बाद का होने वाले इस पहले दीपोत्सव के लिए भारतीय जनमानस सहित देश-दुनिया के लोग बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षारत हैं।यह वीनर्स नकली दांतों से 300 गुना बेहतर है ! और कीमत बहुत सस्ती है और जानें विश्वविद्यालय प्रशासन दीपोत्सव की तैयारियों के दे रहा अंतिम रूपविश्वविद्यालय प्रशासन दीपोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप दे रहा है

नीतीश कैबिनेट में 25 फैसले;

मुंबई में बनेगा 22 मंजिला बिहार निवास, कैंसर मरीज रुक सकेंगे

नीतीश कैबिनेट की बैठक में आज 25 प्रस्तावों पर मुहर लगी। जिसके तहत लखीसराय, जमुई, बांका और अररिया में चार पुलों का निर्माण होगा। जिस पर 175 करोड़ रुपए खर्च होंगे। मुंबई में 22 मंजिला बिहार निवास बनेगा। मोइनुल हक स्टेडियम का पुनर्निर्माण होगा

एजेंसी

पटना: नीतीश कैबिनेट की बैठक में आज 25 प्रस्तावों पर मुहर लगी। जिसके तहत लखीसराय, जमुई, बांका और अररिया में चार पुलों का निर्माण होगा। जिस पर 175 करोड़ रुपए खर्च होंगे। मुंबई में 22 मंजिला बिहार निवास बनेगा। जिसमें सबसे निचले फ्लोर पर कैंसर मरीज रुक सकेंगे। और सबसे ऊपरी मंजलि पर अधिकारी रुकेंगे।इसके अलावा मोइनुल हक स्टेडियम का पुनर्निर्माण होगा, जिसमें डे और नाइट के क्रिकेट मैच हो सकेंगे। स्टेडियम की क्षमता 40 हजार होगी। 76 कार्पोरेट बॉक्स और 250 लोगों की क्षमता वाली मीडिया गैलरी होगी, साथ ही बास्केटबॉल कोर्ट, स्वीमिंग पुल, स्पा और जिम भी होगी। 70 कमरों का 5 स्टार होटल का निर्माण किया जाएगा, जहां रेस्टोरेंट और डिनर हाल होगा

मंत्रिपरिषद् की बैठक में कुल 25 (पचीस) एजेंडों पर निर्णय लिया गया। इस सन्दर्भ में मंत्रिपरिषद् की बैठक के बाद मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव, डॉ0 एस0 सिद्धार्थ ने सूचना भवन के प्रथम तल स्थित सभा कक्ष में प्रेस को संबोधित करते हुए सबसे पहले बताया कि खेल विभाग के अन्तर्गत मोईनुलहक स्टेडियम, राजेन्द्र नगर, पटना के पुनर्निर्माण के लिये भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड (बी०सी०सी०आई०) के द्वारा बिहार राज्य हेतु सम्बद्धता प्राप्त संस्था को दीर्घकालीन लीज पर सौपने के निमित्त डवन किये जाने हेतु अनुमति प्रदान की गई।मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अन्तर्गत मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग, बिहार, पटना के अधीन बिहार भवन, मुम्बई के निर्माण हेतु मुम्बई पत्तन प्राधिकरण द्वारा आवंटित भूमि का महाराष्ट्र मुद्रांक अधिनियम अनुसूची-1 के अनुच्छेद 36 (पट) के अंतर्गत स्टाम्प शुल्क की राशि रुपए 5,92,42,300/-(पाँच करोड़ बेरानबे लाख बेयालीस हजार तीन सौ रुपए) मात्र मुद्रांक जिलाधिकारी, मुम्बई को भुगतान के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य स्कीम के अंतर्गत रुपए 6.00 करोड़ (छः करोड़ रुपए) बिहार आकस्मिकता निधि से अग्रिम एवं व्यय की स्वीकृति दी गई।पथ निर्माण विभाग के अन्तर्गत पथ प्रमंडल, लखीसराय अन्तर्गत गुणसागर से शलौंजा पथ भाया सरसण्डा, खैरमा, बहरावाँ, सेठना तक कुल 15.00 कि०मी० पथ का चैड़ीकरण एवं मजबूतीकरण कार्य कुल 5956.85 लाख (उनसठ करोड़ छप्पन लाख पचासी हजार) रुपए के अनुमानित लागत पर प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान करने की स्वीकृति दी गई।

पथ निर्माण विभाग के ही तहत पथ प्रमंडल, समस्तीपुर अन्तर्गत मोहिउद्दीननगर-कुरसाहा-बाकरपुर-सुल्तानपुर-घाटोल-महम्दीपुर-बोचहाघाट पथ के कि०मी० 0.00 से 15.765 (कुल 15.765 कि०मी०) का निर्माण कार्य कुल 6897.79 लाख (अड़सठ करोड़ सन्तानबे लाख उनासी हजार) रुपए के अनुमानित लागत पर प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई।

देर से ही सही, Xi Jinping को आखिरकार मोदी की बात समझ में आ ही गयी,

एजेंसी

नई दिल्ली: लंबे तनाव के बाद आखिरकार भारत और चीन के संबंध सामान्य होते नजर आ रहे हैं। हम आपको बता दें कि भारत ने घोषणा की है कि भारतीय और चीनी वातार्कार पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त के लिए एक समझौते पर सहमत हुए हैं। इस समझौते को रूस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच संभावित मुलाकात से पहले पूर्वी लद्दाख में चार वर्षों से अधिक समय से जारी सैन्य गतिरोध के समाधान की दिशा में एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है। हम आपको बता दें कि विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि दोनों पक्षों के बीच पिछले कई हफ्तों तक हुई बातचीत के बाद इस समझौते को अंतिम रूप दिया गया और यह 2020 में पैदा हुए गतिरोध के समाधान का मार्ग प्रशस्त करेगा। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी बताया है कि भारतीय और चीनी सैनिक एक बार फिर उसी तरह से

आसान नहीं था चीनी सैनिकों को पीछे हटाना

गश्त शुरू कर सकेंगे, जैसे वे सीमा पर टकराव शुरू होने से पहले करते थे और चीन के साथ सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी हो गई है।हम आपको बता दें कि मोदी और जिनपिंग के रूस के काजान शहर में बिक्स शिखर सम्मेलन के इतर आज या बुधवार को द्विपक्षीय मुलाकात करने की संभावना है। समझा जाता है कि यह समझौता देपसांग और डेमचोक में गश्त की शुरूआत करेगा, क्योंकि दोनों इलाकों में कई मुद्दों को लेकर गतिरोध बरकरार था। हम आपको याद दिला दें कि जून 2020 में गलवान घाटी में हुई भीषण झड़प के बाद भारत और चीन के बीच संबंध निचले स्तर पर पहुंच गए थे।

झारखंड में बनेगी NDA सरकार, हार की ओर बढ़ रहा विपक्षी गठबंधन: चिरगा

एजेंसी

पटना: पटना। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने मंगलवार को भरोसा जताया कि एनडीए झारखंड में एक मजबूत सरकार बनाएगी, जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) हरियाणा के बाद अपनी अगली बड़ी हार की ओर बढ़ती दिख रही है। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख ने यह भी कहा कि वह राज्य में भाजपा की एक सीट की पेशकश सेसंतुष्ट हैं और उन्होंने उन अटकलों को खारिज कर दिया कि इस सौदे से उन्हें अपमानित महसूस हुआ है।झारखंड में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनेगी

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने मंगलवार को भरोसा जताया कि झारखंड में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनेगी।

अगली बड़ी हार की ओर बढ़ रहा है। लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा)-रामविलास के प्रमुख चिराग ने यह भी कहा कि वह झारखंड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा उनकी पार्टी को एक सीट की पेशकश किये जाने से संतुष्ट हैं। उन्होंने इस बात को खारिज कर दिया कि इस सीट समझौते से उन्हें अपमानित महसूस होना पड़ा है।पासवान ने संवाददाताओं से कहा, बहुत से लोग हैं, जो मेरे और प्रधानमंत्री के बीच दरार डालना चाहते हैं। वे कभी सफल नहीं होंगे। मैं यह बताना देना चाहता हूं कि हमारी पार्टी न केवल खुश है ।

परिवार से बिछड़े 93 हजार से अधिक बच्चों को योगी सरकार ने मां-बाप से मिलाया, परिवारों में लौटी खुशियां

एजेंसी

लखनऊ। प्रदेश में बाल संरक्षण के लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगातार प्रयासरत हैं। उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज बाल संरक्षण के क्षेत्र में प्रदेश सरकार लगातार महत्वपूर्ण कदम उठा रही है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदेश में बच्चों के अधिकारों और उनकी सुरक्षा को मजबूत किया जा रहा है। योगी सरकार की सक्रियता और जनहितकारी नीतियों के चलते अब तक 93,658 से अधिक बिछड़े हुए बच्चों को उनके माता-पिता या अभिभावकों से मिलाने में सफलता

प्राप्त की है। इस अभूतपूर्व प्रयास ने हजारों परिवारों में खुशियां लौटाई हैं। केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही योगी सरकार यूपी में विकास को एक नया आयाम दिया है। परिमाणस्वरूप उत्तर प्रदेश आज हर क्षेत्र में प्रगति की नई इबारत लिख रहा है।

दिल्ली में भाजपा ने शीशमहल बंगले से कमोड चोरी घोटाले को लेकर विरोध प्रदर्शन किया

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा की अगुवाई में 22 अक्टूबर दिल्ली के 27 प्रमुख चौराहों पर दिल्ली भाजपा युवा मोर्चा एवं महिला मोर्चा के कार्यकताओं द्वारा अरविंद केजरीवाल के शीशमहल बंगले से हुए कमोड (टायलेट सीट) घोटाले के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। आज सुबह पीक आफिस घंटों के दौरान 9.30 से 11 बजे की बीच प्रदर्शनकारी कार्यकताओं ने हाथों में नारे लिखे प्लेकार्ड लेकर अरविंद केजरीवाल के खिलाफ नारेबाजी की और उनसे कमोड (टायलेट सीट) घोटाले पर जवाब मांगा है। पूर्व मुख्य मंत्री अरविंद केजरीवाल के फिरोजशाह रोड़, नईदिल्ली स्थित आवास के नजदीक ली मेरिडियन

गोल चक्कर पर हुए विरोध प्रदर्शन में भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री डॉ अलका गुर्जर, प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा, मीडिया प्रमुख श्री प्रवीण शंकर कपूर, मोर्चों के संयुक्त प्रभारी सुमित भसीन, युवा मोर्चा अध्यक्ष सागर त्यागी, मोर्चा महामंत्री अरुण दराल और गौरव जोरसिया और महिला मोर्चा की उपाध्यक्षा प्रियल भारद्वाज सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता सम्मलित हुए।आज हुए विरोध प्रदर्शन में प्रदेश महामंत्री एवं सांसद योगेन्द्र चंदोलिया ने जलेबी चौक सुल्तानपुरी में, सांसद कमलजीत सहरावत ने द्वारका मोड़ चौराहे पर, सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने ब्रिटानिया चौक शकुरपुर में, नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता ने साई बाबा चौक रोहिणी में, प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल ने खजुरी चौक पर, महिला मोर्चा की अध्यक्षा श्रीमती ऋचा पांडेय मिश्रा ने आईटीओ चौक पर, प्रदेश महिला मोर्चा महामंत्री श्रीमती सरिता तोमर ने रेल भवन चौक पर आयोजित विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

89 लाख कमाई तो 4 करोड़ का कर्ज कैसे बांटे; तेजस्वी यादव पर जेडीयू का बड़ा हमला

एजेंसी

पटना: बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार का नेतृत्व कर रहे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) के नेताओं ने विपक्ष के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव पर अपनी कमाई से ज्यादा कर्ज बांटने का आरोप लगाया है। जेडीयू के नेताओं ने पटना में सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता और पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के चुनावी हलफनामों के आधार पर दावा

किया है कि उनकी पांच साल की घोषित आय 89 लाख है जबकि उन्होंने इस दौरान 4 करोड़ का कर्ज लोगों को दे

दिया।जदयू के प्रदेश प्रवक्ता नीरज कुमार, निहोरा यादव और अरविंद निषाद ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में संयुक्त रूप से ये बातें कही। जेडीयू नेताओं ने आरोप लगाया कि तेजस्वी यादव ने आय से अधिक कर्ज दिया है। वर्ष 2015 और 2020 के विधानसभा चुनाव के दौरान शपथ पत्र में तेजस्वी ने खुद इसकी जानकारी दी है। जेडीयू ने तेजस्वी यादव से पूछा है कि वो बताएं कि अपनी आय से अधिक कर्ज उन्होंने लोगों को कैसे दिया ?प्रवक्ताओं ने कहा कि तेजस्वी ने अपने पहले विधानसभा चुनाव 2015 के शपथ पत्र में बताया कि उनकी वार्षिक आय 5.60 लाख है।

बिहार उपचुनाव में ओवैसी बिगाड़ेंगे खेल? गया के बेलागंज और इमामगंज में AIMIM ने कैंडिडेट उतारे

एजेंसी

पटना: बिहार की चार विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम भी मैदान में उतर गई है। एआईएम ने गया जिले की बेलागंज और इमामगंज में कैंडिडेट का ऐलान कर दिया है। पार्टी ने बेलागंज से मोहम्मद जामिन अली को टिकट दिया है, जबकि इमामगंज से कंचन पासवान को उम्मीदवार बनाया गया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अख्तरूल ईमान ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। अक्टक्ट भोजपुर

जिले की तरारी और कैमूर जिले की रामगढ़ में भी अपने उम्मीदवार का ऐलान जल्द कर सकती है।बेलागंज विधानसभा सीट को आरजेडी का गढ़ माना जाता है। जहानाबाद से सुरेंद्र यादव यहां से लगातार 6 बार विधायक रहे। उपचुनाव में आरजेडी ने उनके बेटे विश्वनाथ सिंह को टिकट दिया है। उनके खिलाफ एनडीए से जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) ने पूर्व एमएलसी मनोरमा देवी को उतारा है। वहीं, पहली बार चुनावी मैदान में उतर रही प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने बेलागंज से प्रोफेसर खिलाफत हुसैन को टिकट दिया है। अब ओवैसी की पार्टी भी मैदान में उतर गई है। इससे बेलागंज का चुनावी समर रोचक बन गया है।

अररिया में रहना है तो हिंदू बनना होगा; गिरिराज सिंह की यात्रा में बोले भाजपा सांसद प्रदीप सिंह

एजेंसी

पटना: केंद्रीय गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा के दौरान अररिया से बीजेपी सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने ऐसा बयान दे दिया है। जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। प्रदीप सिंह ने कहा कि अगर अररिया में रहना है, तो हिंदू बनना होगा। खुद को हिंदू बोलने में भला शर्म कैसी? उनके इस बयान पर सोशल मीडिया पर लोग तरह-तरह के कमेंट्स कर रहे हैं। आपको बता दें गिरिराज सिंह की 5 दिवसीय हिंदू स्वाभिमान यात्रा जारी है। जो आज किशनगंज में खत्म होगी।गिरिराज सिंह की यात्रा के दौरान लोगों को संबोधित करते हुए सांसद प्रदीप सिंह ने कहा कि खुद को हिंदू बोलने में भला कैसी शर्म? हम तो कहते हैं कि अगर अररिया में रहना है तो हिंदू बनना होगा। जब बेटा-बेटी की शादी करनी हो, तब जात-पात खोज लीजिए, लेकिन जब हिंदुओं की एकजुटता की बात हो तब पहले हिंदू बनिए बाद में जाति को ढूंढिए। दरसअसल केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा 21 अक्टूबर को अररिया पहुंची थी। जहां ठाकुरबाड़ी परिसर में रात में एक सभा का आयोजन हुआ था। जिसमें गिरिराज समेत आचार्य दीपांकरजी महाराज समेत भाजपा और हिन्दू संगठन के लोग शामिल हुए थे। इसी कार्यक्रम में बीजेपी सांसद प्रदीप सिंह ने ये बयान दिया।

लश्कर-ए-तैयबा की उल्टी गिनती शुरू! 'बाबा हमास' को सुरक्षा बलों ने किया ध्वस्त,

कश्मीर में पनपे इस नये आतंकवादी संगठन की करतूतें...

एजेंसी

जम्मू-कश्मीर: जम्मू-कश्मीर के कई जिलों में कई छापे मारे जाने के बाद मंगलवार को एक नवगठित आतंकवादी संगठन के भर्ती मॉड्यूल को ध्वस्त कर दिया गया। माना जा रहा है कि प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का एक हिस्सा इस नए समूह को कथित तौर पर एक पाकिस्तानी आतंकवादी हैंडलर द्वारा संचालित किया जा रहा था, जिसे उसके उपनाम 'बाबा हमास' के नाम से जाना जाता है। समाचार एजेंसी के अनुसार, केंद्र शासित प्रदेश में छापे जम्मू-कश्मीर पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस विंग (सीआईके) द्वारा मारे गए।जम्मू-कश्मीर में नए आतंकी संगठन का भंडाफोड़

अधिकारियों ने बताया कि जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों ने मंगलवार को एक नए आतंकी संगठन का भंडाफोड़ किया, जिसके बारे में माना जा रहा है

कि वह प्रतिबंधित संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का एक हिस्सा है। अधिकारियों ने बताया कि जम्मू-कश्मीर पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस विंग (सीआईके) ने एक बड़ा ऑपरेशन चलाया, जिसमें श्रीनगर, गंदेरबल, बांदीपोरा, कुलगाम, बडगाम, अनंतनाग और पुलवामा समेत कई जिलों में छापेमारी की गई। पुलिस के मुताबिक, उन्होंने 'तहरीक लबैक या मुस्लिम' (टीएलएम) नामक एक संगठन का खात्मा किया, जिसके बारे में माना जा रहा है कि वह पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का एक हिस्सा है। अधिकारियों ने बताया कि इस संगठन को कथित तौर पर 'बाबा हमास' नामक एक पाकिस्तानी आतंकी हैंडलर द्वारा संचालित किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि छापेमारी अभी भी जारी है और विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है।यह आतंकवाद विरोधी अभियान लश्कर के एक अन्य संगठन, द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) द्वारा कथित तौर पर गंदेरबल जिले में एक हमले की जिम्मेदारी लेने के एक दिन बाद हुआ, जिसमें रविवार को एक डॉक्टर और छह प्रवासी कामगार मारे गए थे। सुरक्षा बलों के अनुसार, श्रीनगर निवासी टीआरएफ प्रमुख शेख सज्जाद गुल हमले का मास्टरमाइंड था।

डीएम ने किया राज्य स्तरीय विद्यालय अंडर 14 बालक कराटे खेल का शुभारंभ, 30 जिला के 180 खिलाड़ी ले रहे हैं भाग

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। जिलाधिकारी रोशन कुशवाहा द्वारा लाल कोठी परिसर समस्तीपुर में दिनांक 22 अक्टूबर 2024 से 24 अक्टूबर 2024 तक आयोजित राज्य स्तरीय विद्यालय अंडर 14 बालक कराटे खेल प्रतियोगिता का उदघाटन दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा बताया गया की समस्तीपुर में खेल में बहुत सारी संभावनाएं हैं सभी बच्चे पूरी मेहनत व लगन ईमानदारी से मेहनत करें तो निश्चित तौर पर राज्य / देश के कई प्लेटफार्म पर बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्होंने अंडर 14 बालक कराटे खेल प्रतियोगिता में भाग ले रहे युवाओं को संबोधित करते हुए कहा की युवा खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ प्रतिस्पर्धा में भाग लेना चाहिए साथ ही खेल प्रतिभा को निखारने के लिए बिहार सरकार खेल विभाग द्वारा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।इस दिशा में उन्होंने जिला खेल पदाधिकारी एवं आयोजनकर्ताओ को बाहर एवं दूसरे जिलों से आने वाले खिलाड़ियों सहित सभी प्रतिभागियों को बेहतर सुविधा मुहैया कराने उनके आवासन, खानपान एवं खेल मैदान की बेहतर से बेहतर व्यवस्था करने हेतु निर्देश दिया गया। मौके पर अपर समाहर्ता अजय कुमार तिवारी, डीडीसी संदीप शेखर प्रियदर्शी, सिविल सर्जन एसके चौधरी, अनुमंडल पदाधिकारी सदर दिलीप कुमार, डीपीआरओ रजनीश कुमार राय, प्रभारी जिला खेल पदाधिकारी आकाश एवं परिक्ष्यमान वरीय उप समाहर्ता अंजली सिंह उपस्थित थे।इसके पश्चात शिक्षक सुमित कुमार सिंह ने खेल भावना से खेलने हेतु सभी खिलाड़ियों को शपथ दिलाई एवं खेल के नियमों से सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। समस्तीपुर तथा नवादा जिले की टीम के साथ प्रदर्शनी मैच का आयोजन किया गया, इसमें नवादा की टीम कर 4 - 2 से विजयी रही।विदित हो कि इस राज्य स्तरीय अंडर 14 बालक कराटे खेल प्रतियोगिता में 30 जिला के 180 खिलाड़ी विभिन्न भार वर्ग में भाग ले रहे हैं जो 20 से 25, 25 से 30, 30 से 35, 35 से 40, 40 से 45, 45 से 50, 50 से 55, 55 से 60 एवं 60 से अधिक वेट कैटेगरी में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे।

तारारी में एनडीए की जीत सुनिश्चित-डॉ दिलीप जायसवाल

उपमुख्यमंत्री और एनडीए के वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में विशाल प्रशांत का नामांकन दाखिल

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

22 अक्तूबर भोजपुर (आरा), तारारी तारारी विधानसभा उपचुनाव के लिए एनडीए प्रत्याशी श्री विशाल प्रशांत के भव्य नामांकन समारोह का आयोजन भोजपुर जिले के आरा में किया गया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे, जिन्होंने एनडीए को समर्थन देने का संकल्प लिया। जनता के इस विशाल समर्थन से यह स्पष्ट होता है कि एनडीए की जीत सुनिश्चित है और तारारी का भविष्य विकास के नए मार्ग पर अग्रसर होगा।इस नामांकन समारोह में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ दिलीप जायसवाल शामिल हुए साथ ही बिहार के उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, श्री विजय सिन्हा, जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय कुमार झा, एवं एनडीए के अन्य वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इन नेताओं ने विशाल प्रशांत की उम्मीदवारी का समर्थन करते हुए जनता को एनडीए सरकार की विकास योजनाओं से अवगत कराया और एक बार फिर एनडीए की जीत के लिए समर्थन की अपील की।भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने इस अवसर पर कहा, "यह चुनाव केवल एक राजनीतिक मुकाबला नहीं है, बल्कि यह तारारी के विकास और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने का अवसर है। एनडीए सरकार ने अब तक जो विकास कार्य किए हैं, वे जनता के सामने हैं, और आगामी चुनावों में जनता का समर्थन हमें और भी आगे बढ़ाने में मदद करेगा। विशाल प्रशांत के नेतृत्व में तारारी का समग्र विकास होगा।डॉ. दिलीप जायसवाल ने जोर देते हुए कहा कि इस चुनाव में जनता एनडीए को समर्थन देकर अपने क्षेत्र की प्रगति और खुशहाली का मार्ग प्रशस्त करेगी। उन्होंने जनता से आग्रह किया कि वे भारी संख्या में मतदान कर एनडीए प्रत्याशी श्री विशाल प्रशांत को विजयी बनाएं और एनडीए के विकास के एजेंडे को आगे बढ़ाएं।

उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, श्री विजय सिन्हा और जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार झा ने भी अपने संबोधन में तारारी वासियों से अपील की कि वे एनडीए को अपना समर्थन दें। उन्होंने कहा कि यह उपचुनाव एनडीए के विकासशील योजनाओं और जनता की भलाई के लिए किए गए कार्यों को जनता तक पहुँचाने का एक और अवसर है।

इस नामांकन समारोह में शामिल हजारों लोगों के उत्साह और समर्थन से यह साफ हो गया है कि एनडीए को जनता का अपार समर्थन मिल रहा है। क्षेत्रीय विकास, रोजगार सृजन, कृषि सुधार और बुनियादी ढांचे के विस्तार जैसे मुद्दों पर एनडीए का ध्यान केंद्रित है, और जनता ने इन योजनाओं पर भरोसा जताया है।

एनडीए के शासनकाल में अग्रणी एवं विकसित राज्य बन रहा है बिहार :- अरविन्द सिंह

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना, 22 अक्टूबर :- भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा कि जहां राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू यादव जी के शासनकाल में बिहार बीमारू एवं पिछड़ा राज्य बनकर रह गया था, वहीं आज एनडीए सरकार के शासनकाल में बिहार अग्रणी और विकसित राज्य बन रहा है।

जबकि मा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सहयोग के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में अव्वल बन रहा है बिहार। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत आइजीआइएमएस (कक्क्टर) में बहाल हुई (बाई प्लेन कैथ लैब) की सुविधा जिससे हार्ट और ब्रेन के मरीजों को बड़ी राहत मिलेगी और वहीं ब्रेन ट्यूमर, ब्रेन हेमरेज, ब्रेन में खून का थक्का, ब्रेन की नस फटने आदि के इलाज में इससे काफी सहूलियत मिलेगी।

श्री अरविन्द ने कहा कि एनडीए सरकार के प्रयासों के कारण ही देश में बिजली की राजधानी बन रहा है बिहार का नबीनगर। जहां दो बड़े पावर प्लांट के जरिए नबीनगर में 2,980 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। भारतीय रेल बिजली कंपनी लिमिटेड(इफ्इउछ) लगाएगा 22 मेगावाट उत्पादन क्षमता का सोलर पावर प्लांट।

वहीं एनडीए सरकार में मुख्यमंत्री बालिका स्नातक प्रोत्साहन योजना से बेटियों के सपनों को मिल रही नई उड़ान, 25 हजार बेटियों को मिली हैं पच्चास - पच्चास हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि। एनडीए सरकार बिहार को प्रगतिशील एवं विकसित राज्य बनाने के लिए पूरी तरह प्रयासरत एवं दृढ़ संकल्पित हैं।

इन सारे विकास के योजनाओं से एनडीए उपचुनाव में प्रचंड बहुमत से मा मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में विजय प्राप्त करेगा।

राजगीर के बाद अब पटना में अंतर्राष्ट्रीय मैच का होगा आयोजन- सम्राट चौधरी

बिहार के खिलाड़ी भी आईपीएल मैच खेलेंग

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना दिनांक झ 22.10.2024

आज उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बताया कि मोईनुलहक स्टेडियम, राजेन्द्र नगर, पटना के पुनर्निर्माण के लिये भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड (बी.सी.सी.आई.) के द्वारा बिहार राज्य हेतु सम्बद्धता प्राप्त संस्था को दीर्घकालीन लीज पर सौपने के निमित्त टङ्क्व किये जाने हेतु मंत्रिमंडल द्वारा आज अनुमति प्रदान की गयी है । मोईनुलहक स्टेडियम, राजेन्द्र नगर, पटना, राज्य में अवस्थित एक प्रतिष्ठित स्टेडियम है। पूर्व में यहाँ कई अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है। वर्तमान में यह काफी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार, पटना से इस स्टेडियम के पुनर्निर्माण हेतु खेल विभाग, बिहार द्वारा सशर्त अनापत्ति प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया था।विदित हो कि देश के कई अन्य राज्यों में भी भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड (बी.सी.सी.आई.) के द्वारा सम्बद्धता प्राप्त संस्था को दीर्घकालीन लीज पर जमीन उपलब्ध करा कर स्टेडियम का निर्माण/पुनर्निर्माण कराया जा रहा है। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के द्वारा मोईनुलहक स्टेडियम, राजेन्द्र नगर, पटना के पुनर्निर्माण हेतु भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड (बी.सी.सी.आई.) के द्वारा बिहार राज्य हेतु सम्बद्धता प्राप्त संस्था को दीर्घकालीन लीज पर सौंपने के निमित्त हस्तांतरण हेतु प्रस्तावित भूमि का कुल रकवा 31.36 एकड़ भूमि का वास्तविक बाजार मूल्य 20,25,000/- (बीस लाख पच्चीस हजार) रुपए प्रति डिसमील यानि कुल रू० 6,35,04,00,000/- (छः अरब पैंतीस करोड़ चार लाख) रुपए उक्त भूमि को पट्टा पर दिये जाने की परिस्थिति में कुल मूल्य का 5 प्रतिशत वार्षिक व्यवसायिक लगान प्रतिवर्ष देय होता।

एनडीए के शासनकाल में अग्रणी एवं विकसित राज्य बन रहा है बिहार :- अरविन्द सिंह

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना, 22 अक्टूबर :- भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा कि जहां राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू यादव जी के शासनकाल में बिहार बीमारू एवं पिछड़ा राज्य बनकर रह गया था, वहीं आज एनडीए सरकार के शासनकाल में बिहार अग्रणी और विकसित राज्य बन रहा है।

जबकि मा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सहयोग के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में अव्वल बन रहा है बिहार। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत आइजीआइएमएस (कक्क्टर) में बहाल हुई (बाई प्लेन कैथ लैब) की सुविधा जिससे हार्ट और ब्रेन के मरीजों को बड़ी राहत मिलेगी और वहीं ब्रेन ट्यूमर, ब्रेन हेमरेज, ब्रेन में खून का थक्का, ब्रेन की नस फटने आदि के इलाज में इससे काफी सहूलियत मिलेगी। श्री अरविन्द ने कहा कि एनडीए सरकार के प्रयासों के कारण ही देश में बिजली की राजधानी बन रहा है बिहार का नबीनगर। जहां दो बड़े पावर प्लांट के जरिए नबीनगर में 2,980 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। भारतीय रेल बिजली कंपनी लिमिटेड(इफ्इउछ) लगाएगा 22 मेगावाट उत्पादन क्षमता का सोलर पावर प्लांट।

वहीं एनडीए सरकार में मुख्यमंत्री बालिका स्नातक प्रोत्साहन योजना से बेटियों के सपनों को मिल रही नई उड़ान, 25 हजार बेटियों को मिली हैं पच्चास - पच्चास हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि। एनडीए सरकार बिहार को प्रगतिशील एवं विकसित राज्य बनाने के लिए पूरी तरह प्रयासरत एवं दृढ़ संकल्पित हैं।

मोहम्मद आतिफ इकरा अमान के साथ रिश्ता आजदावाज से मुंसलिक

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिला के बिस्फी प्रखंड के परोही गाँव निवासी हाजी ताज मोहम्मद के पुत्र मोहम्मद आतिफ का निकाह केवटी प्रखंड निवासी मोहम्मद अमानुल्लाह की पुत्री इकरा अमान से हुआ निकाह मौलाना रेहान अंजुम मिसबाही ने पढ़ाया इस मोके पर मुबारक बाद देने वालों मे मोङ्क मेराज, मोङ्क फैसल, मोङ्क साकिब, मोङ्क बेलाल आफताब आलम शामश तबरेज, मोङ्क मेराजुद्दीन, अब्दुल्लाह, शकील अहमद प्यारे, सहित बड़ी तादाद मे नो उरस को खुश गवार अजदावाजी जिंदगी गुजराने के लिए दुआ दी

डीएम एस पी ने भुतही महावीरी झंडा की तैयारियों का लिया जायजा

मो. सदरे आलम नोमानी

सीतामढ़ीः 23 व 24 अक्टूबर को भुतही में आयोजित होने वाली महावीरी झंडा को शांतिपूर्ण व सौहार्द्र पूर्ण माहौल में सम्पन्न कराने को लेकर जिला प्रशासन तत्पर है। देर शाम जिलाधिकारी रिची पांडेय व पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार तिवारी भुतही पहुंच झंडा को लेकर की गई तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान भुतही रैन, भुतही ब्रह्मस्थान, भुतही मदरसा, फूलकाहां मोड़, फतहपुर समेत विभिन्न संवेदनशील, अति संवेदनशील स्थानों का निरीक्षण किया। वहीं फतहपुर व महुलिया में की गई बारकेंडिंग को देखा। झंडा के दौरान विधि व्यवस्था को लेकर डीएम और एसपी ने मौके पर मौजूद बीडीओ सत्येंद्र व थानाध्यक्ष कुमार प्रभाकर को निदेश दिया।इस दौरान डीएम व एसपी ने बीडीओ व थानाध्यक्ष को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए बताया कि बगैर लाइसेंस के कोई जुलूस नहीं निकाली जाएगी। असमाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखें। माहौल बिगाड़ने वालों तत्वों से सख्ती से निपटने का निदेश दिया। वहीं सीसीटीवी के संबंध में भी जानकारी ली। इस दौरान मौके पर मौजूद भुतही महावीरी झंडा समिति के सदस्यों, पूर्व मुखिया मनोज कुमार, कचोर पैक्स संजय कुमार पूर्वे, मधेसरा पैक्स अरुण कुमार समेत अन्य से वस्तु स्थिति की जानकारी ली। बताया कि दुर्गा पूजा, मुहर्रम, झंडा में जिन लोगों ने शांति एवं सद्भावना के लिए काम किया उन्हें सम्मानित किया जाएगा।

नगर विकास एवं आवास विभाग, पटना का कारनामा, अपने द्वारा संकल्प में सृजित पद ज्ञात नहीं

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर सिद्दीकी

पटना राज्य के नगर निकायों को सौपें गए कित्यो के निष्पादन हेतु पुनर्संरचना के तहत पदों का सृजन संकल्प ज्ञापन - 01/ स्था ० (विविध) 22/2018 - 1435 / न०वि०आ०वि०, पटना, दिनांक - 05.03.19 के द्वारा नगर निकायों के लिए 11 लेखा पदाधिकारी का (पटना नगर निगम को छोड़कर) बिहार लेखा सेवा के पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति से भरे जाने का संकल्प लिया गया था। पुनः नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार, पटना के ज्ञापांक - 01/ स्था० (विविध) - 03/2021-1526/ न०वि०आ०वि० पटना दिनांक - 31.03.2021 के द्वारा पूर्व के लिए गए 11 लेखा पदाधिकारी का पद समाप्त करते हुए प्रत्यार्पित कर दिया गया, परन्तु गया नगर निगम के तत्कालीन नगर आयुक्त, अभिलाषा शर्मा, भाप्रसे के द्वारा नगर विकास एवं आवास विभाग को निगम के पत्रांक - 1564 दिनांक - 10.06.2024 के द्वारा वर्तमान में कार्यरत लेखा पदाधिकारी पर मनगढंत आरोप लगाते हुए नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार, पटना से वित्त विभाग, बिहार, पटना से लेखा पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति हेतु पत्र दिया गया है।इतना ही नहीं नगर विकास एवं आवास विभाग, बिहार, पटना के राशिद इकबाल, सरकार के अवर सचिव के द्वारा पत्रांक - 10/ न०प्र०नि० (विविध) - 53/2024-1556/ न०वि०आ०वि०, बिहार, पटना, दिनांक - 23.09.24 के द्वारा संयुक्त सचिव, वित्त विभाग बिहार पटना को संकल्प ज्ञापांक - 1435 दिनांक - 05.03.2019 के आलोक में लेखा पदाधिकारी का प्रतिनियुक्ति का अनुरोध किया गया है जबकि संकल्प ज्ञापांक - 1526 दिनांक - 31.03.2021 के द्वारा लेखा पदाधिकारी का सृजित 11 पद का प्रत्यार्पित कर अपर मुख्य राजस्व एवं लेखा पदाधिकारी और सहायक राजस्व का पद सृजित किया गया, जिसकी नियमावली का गठन के उपरांत भरी जाएगी।

सनद रहे कि सरकार के संकल्प ज्ञापांक में सृजित पद पर नियुक्त लेखा पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति गया नगर निगम में करने का निर्णय वित्त विभाग बिहार, पटना द्वारा भी लिया जा सकता है जो घोर अनियमितता का परिचायक है

सिमरी पंचायत स्थित पश्चिम टोल में आयोजित श्रीश्री 108 महाविष्णु यज्ञ को लेकर 251 कुंवारी कन्याओं के द्वारा भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गई

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिला के प्रखंड क्षेत्र के सिमरी पंचायत स्थित पश्चिम टोल में आयोजित श्रीश्री 108 महाविष्णु यज्ञ को लेकर 251 कुंवारी कन्याओं के द्वारा भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गई ।अखिल भारतीय श्रीपंच झाड़िया निमोर्ही अनी अखाड़ा बृंदावन मथुरा से आए नागा बाबा कृष्ण किशोरी दास जी के नेतृत्व में यज्ञ स्थल से निकली यह कलश शोभायात्रा पूरे गांव का भ्रमण कर बड़की पोखर पंहुची ।जंहा सरोवर के पूजन के बाद कलश में जल लेकर पुनः यज्ञ स्थल पर पंहुची ।जंहा कलश स्थापना के बाद रामधुन सहित सुंदर कांड पाठ शुरू कर दिया गया । कलश शोभायात्रा से पूरे क्षेत्र आध्यात्मिक माहौल में तब्दील था ।इस अवसर पर हरिद्वार से आए साधु हरिनारायण दास ,अयोध्या के स्वामी श्रीराम दास जी महाराज,निमोर्ही अखाड़ा से श्री बिंदु जी महाराज के साथ स्थानीय सरपंच हीरालाल यादव,जुगुत लाल यादव,बुद्धू यादव,सोती लाल यादव, प्रबोध यादव,अजित यादव,जीवेंद्र कुमार जीवन,लालू साह,रंजीत साहू,अंजनी यादव सहित पूरे गांव के नर-नारी सहित बच्चे लोग शामिल थे ।नागा बाबा कृष्ण किशोर दास ने बताया कि यज्ञ का आयोजन विश्व कल्याणार्थ के साथ सनातन धर्म की रक्षा के लिए की जारही है ।

बिहार में दीपावली एवं छठ महापर्व के दौरान समस्तीपुर मंडल में भीड़ नियंत्रण हेतु सुदृढ़ व्यवस्था

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

- बिहार में दीपावली एवं छठ महापर्व के दौरान समस्तीपुर मंडल में भीड़ नियंत्रण हेतु सुदृढ़ व्यवस्था
- स्टेशनों पर सुदृढ़ व्यवस्था हेतु मंडल के अधिकारियों की मुख्यालय के अधिकरियों के साथ हुई बैठक
- यात्रियों की सुगम आवागमन, सुविधा एवं सुरक्षा हेतु उठाए जाएंगे कई कदम
- आवश्यकता पड़ने पर खोले जाएंगे अतिरिक्त टिकट काउंटर्स
- कंट्रोल रूम से रखी जाएगी 24 घंटे निगरानी

समस्तीपुरः22/10/24 आगामी दीपावली एवं छठ महापर्व के दौरान बड़ी संख्या में यात्रा करने वाले रेल यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए समस्तीपुर मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर सुदृढ़ व्यवस्था हेतु मुख्यालय के अधिकारियों के साथ मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अन्य शाखाधिकारिओं की आज एक बैठक का आयोजन हुआ।
बैठक में मुख्य रूप से यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा हेतु उठाए जाने वाले कदमों पर आवश्यक निर्णय लिए गए।
बैठक में रेल टिकट की सुलभता हेतु मंडल के प्रमुख स्टेशनों पर अतिरिक्त रिजर्वेशन काउंटर तथा अतिरिक्त अनारक्षित टिकट काउंटर की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया ।उल्लेखनीय है कि वर्तमान में मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर एटीवीएम मशीन कार्यरत हैं। साथ ही एटीवीएम से टिकट लेने में यात्रियों की सहायता हेतु फैसिलिटेटर भी तैनात किए गए है आवश्यकता पढ़ने पर इसे बढ़ाया भी जाएगा ।इसके अलावा निर्णय लिया कि मंडल के प्रमुख स्टेशनों पर 'टॅ८ कल्ी'स्त्र ड्ड४' बूथ भी खोले जाएंगे। इसके साथ ही मेडिकल बूथ भी खोले जाएंगे।
इसके साथ साथ स्टेशनों पर यात्रियों की सहायता हेतु आरपीएफ, जीआरपी, वाणिज्य विभाग सहित अन्य विभागों के अतिरिक्त स्टाफ की भी तैनाती की जाएगी।
इसके साथ ही मंडल के स्काउट एवं गाइड की भी तैनाती की जाएगी जो यात्रियों को गाइड करेंगे ।इसके साथ साथ व्यवस्था की निगरानी हेतु सभी प्रमुख स्टेशनों पर सभी विभागों के अधिकारियों को भी नियुक्त किया जाएगा ।स्टेशनों पर दिव्यांगजन, वृद्धजन एवं अन्य आवश्यकता वाले यात्रियों हेतु व्हीलचेयर की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी ।साथ ही यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी लिफ्ट और एस्केलेटर लगातार कार्य करते रहें ।इसके लिए दिवाली के बाद से सभी लिफ्ट और एस्केलेटर्स पर कर्मचारी की नियुक्ति भी जाएगी। जो इसका निर्बाध संचालन सुनिश्चित करेंगे तथा ज्यादा भीड़ होने पर यात्रियों की सहायता करेंगे ।मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर जनता भोजन की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। साथ ही खान पान के अन्य स्टाल को भी निर्देश दिए जा रहे हैं कि वे अपने स्टाल पर खाने पीने के पैकेटबंद सामानों की पर्याप्त व्यवस्था रखें। मंडल के स्टेशनों पर पर्याप्त संख्या में वाटर वेंडिंग मशीन उपलब्ध है। अधिकांश मशीन सामान्य श्रेणी के कोच के पास हैं, जिससे कि सामान्य श्रेणी के यात्रियों को पानी लेने के लिए ज्यादा दूर नहीं जाना पड़े। साथ ही पानी के सभी नल सही कार्य कर रहे हों ,इसकी लगातार जांच भी की जाएगी ।यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी ट्रेनों में पानी उपलब्ध रहे। ट्रेनों में साफ सफाई हेतु ट्रेनों में अतिरिक्त ओबीएचएस स्टाफ को लगाया जाएगा ।बैठक में यह निर्णय लिया गया कि बुकिंग काउंटर और वेटिंग हाल में स्पेशल ट्रेनों की लिस्ट प्रदर्शित की जाएगी। एनटीईएस पर नियमित फीडिंग के साथ स्टेशनों पर स्पेशल ट्रेनों की टाइमिंग और उनके निर्धारित प्लेटफार्म के संबंध में लगातार अनाउंसमेंट भी किया जाएगा।
यात्रिओ के सुगम आवागमन के लिए सभी स्टेशनों के सभी प्रवेश द्वारों तथा निकास द्वारों को अतिक्रमण मुक्त किया जाएगा ।
स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए स्टेशनों पर साफ सफाई और कूड़ा निस्तारण की आवृत्ति बढ़ा दी जाएगी ।स्टेशनों पर वाणिज्य कर्मचारी एवं टीटीई द्वारा अतिरिक्त सुरक्षा बल के साथ समन्वय स्थापित कर सामान्य श्रेणी के कोच में चढ़ने-उतरने के साथ फुटओवर ब्रिज और कॉन्कोर्स होते हुए यात्रियों का कतारबद्ध आवागमन सुनिश्चित किए जाएंगे। प्लेटफार्म और फुट ओवर ब्रिज से पार्सल और अन्य सामान हटाकर उन्हें यात्री आवागमन हेतु अवरोध मुक्त रखा जाएगा ।स्टेशन के कंट्रोल रूम 24 घंटे कार्य करेंगे। जहां आरपीएफ के स्टाफ निगरानी रखेंगे ।व्यवस्था के लिए राज्य से होमगार्ड के जवानों की मांग की गई हैं जिन्हें भीड़ नियंत्रण व्यवस्था में लगाया जाएगा ।राज्य के फायर ब्रिगेड की तैनाती भी प्रमुख स्टेशनों पर की जाएगी। बेहतर तथा त्वरित संचार हेतु आवश्यक अधिकारी तथा कर्मचारियों को वॉकी टॉकी भी प्रदान किया जाएगा ।इसके लिए अतिरिक्त वॉकी टॉकी का प्रावधान किया जाएगा ।इसके साथ ही संबंधित जिले के डॉक्टर्स के नाम तथा संपर्क नम्बर भी स्टेशनों पर रखे जाएंगे ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनसे संपर्क किया जा सके।
बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि किसी भी अवस्था में जाने वाली तथा आने वाली गाड़ियों को आइलैंड प्लेटफार्म पर एक साथ नही लिया जाएगा। इसके साथ साथ ट्रेनों के गार्ड सभी यात्रियों के ट्रेन में चढ़ जाने के बाद ही गाड़ी चलाने के लिए हरी झंडी दिखाएंगे और ट्रेनों के लोको पायलट स्टेशन आते समय तथा ट्रेन खोले जाते समय यात्रियों की सुरक्षा हेतु धीरे धीरे ट्रेन को आगे बढ़ाएंगे तथा बाहर नजर रखेंगे।

करटे: एक जीवनशैली और उसके प्रभाव

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- करटे केवल एक खेल नहीं है, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली है जो आत्म-रक्षा, मानसिक अनुशासन, शारीरिक सुदृढ़ता, और आंतरिक शांति के संयोजन पर आधारित है। इस प्राचीन जापानी मार्शल आर्ट के माध्यम से न केवल शारीरिक शक्ति का विकास होता है, बल्कि मानसिक संतुलन और आत्म-विश्वास में भी वृद्धि होती है।
- शोटो कान कराटे का महत्व
- शोटो कान कराटे, कराटे की एक प्रमुख शैली है, जिसे विशुद्ध तकनीकीता, गति और शक्ति के कारण पहचाना जाता है। यह शैली अपने अनुशासन, सही मुद्रा, और कुशल तकनीकों के लिए जानी जाती है। इसके अभ्यास से व्यक्ति आत्म-रक्षा की कला में निपुण होता है और मानसिक सशक्तिकरण भी प्राप्त करता है। शोटो कान कराटे में सटीक तकनीकों और कड़ी मेहनत के द्वारा आत्म-निर्भरता और आत्म-नियंत्रण का विकास होता है।
- वर्ल्ड एमेच्योर शोटो कान कराटे फेडरेशन की भूमिका
- वर्ल्ड एमेच्योर शोटो कान कराटे फेडरेशन, शोटो कान कराटे के प्रचार और प्रशिक्षण के लिए एक प्रतिष्ठित संगठन है। इस फेडरेशन का उद्देश्य कराटे को एक वैश्विक मंच पर बढ़ावा देना और इसके अनुयायियों को उच्चतम स्तर की तकनीकी शिक्षा प्रदान करना है।
- इस प्रतिष्ठित फेडरेशन के अध्यक्ष क्यूशी सुमन रॉय, कराटे के क्षेत्र में एक अनुभवी और कुशल मार्गदर्शक हैं। उनके नेतृत्व में, फेडरेशन ने कराटे को एक खेल के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवनशैली के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- वहीं, फेडरेशन के तकनीकी निदेशक सिहान एमडी जहांगीर, कराटे की तकनीकी बारीकियों के विशेषज्ञ हैं। उनके मार्गदर्शन में, कई युवा कराटेका न केवल तकनीकी रूप से सशक्त बने हैं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और अनुशासन के उच्चतम स्तर को भी प्राप्त किया है।
- कराटे के लाभ

1. आत्म-रक्षा: कराटे की तकनीकें आत्म-रक्षा की कला सिखाती हैं, जो व्यक्ति को किसी भी आपात स्थिति में सुरक्षित रखने में सहायक होती हैं।
2. शारीरिक स्वास्थ्य: कराटे के नियमित अभ्यास से शरीर की फिटनेस और लचीलापन में वृद्धि होती है। यह हृदय स्वास्थ्य, मांसपेशियों की ताकत, और सहनशक्ति को बढ़ाता है।
3. मानसिक अनुशासन: कराटे का अभ्यास मानसिक अनुशासन और आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देता है। यह ध्यान और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को भी सुधारता है।
4. आत्म-विश्वास: कराटे की नियमित प्रैक्टिस व्यक्ति के आत्म-विश्वास को बढ़ाती है। यह एक सकारात्मक दृष्टिकोण और मानसिक सुदृढ़ता का विकास करती है।

- निष्कर्ष

कराटे केवल एक खेल नहीं है, यह एक सम्पूर्ण जीवनशैली है जो अनुशासन, शक्ति, और आत्म-रक्षा के गुणों को आत्मसात करती है। वर्ल्ड एमेच्योर शोटो कान कराटे फेडरेशन, क्यूशी सुमन रॉय और सिहान एमडी जहांगीर के मार्गदर्शन में, कराटे के अनुयायियों को उच्चतम स्तर की तकनीकी शिक्षा और मार्गदर्शन मिल रहा है। कराटे के माध्यम से आत्म-रक्षा, मानसिक अनुशासन, और शारीरिक स्वास्थ्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया जा सकता है।

- इस लेख के माध्यम से, कराटे के महत्व को समझा जा सकता है और यह स्पष्ट है कि कराटे केवल एक मार्शल आर्ट नहीं, बल्कि एक जीवन जीने की कला है।

दुकान से लौट रहे युवक को फायरिंग में लगी गोली, डीएमसीएच में चल रहा है उपचार

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के तहत चकमेहसी थाना क्षेत्र के कमती टोल वार्ड बारह सोमनाहा वाटर वेज से सटे सड़क किनारे हुई फायरिंग में एक युवक गांव का ही गोली लगने से जख्मी हो गया। घटना सोमवार के देर रात की बताई गई है। सूचना मिलते ही चकमेहसी थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को इलाज के लिए सीएचसी में देर रात लायी जहां प्राथमिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए डीएमसीएच रेफर कर दिया गया। बाद में चकमेहसी थाना की पुलिस परिजनों के साथ युवक को डीएमसीएच पहुंचाया जहां इलाज जारी है। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार युवक सोमनाहा के ही मोशाय डीह चौक पर मोबाइल रिपेयरिंग की दुकान चलाता था। रात्रि के दस बजे घर लौट रहा था, इसी क्रम में कामती टोल के पास सड़क पर 08 से 10 की संख्या में बदमाशों ने घटनास्थल के पास खड़े थे। पास से गुजरने के दौरान जैसे ही वह खड़ा हुआ जबतक युवक कुछ समझ पाता किसी ने ताबरतोड़ पांच राउंड फायरिंग कर दी। जिसमें एक गोली युवक के बाएं हाथ की उंगली में जा लगी। इसके बाद ग्रामीणों द्वारा चकमेहसी थाने की पुलिस को सूचित किया गया। चकमेहसी थाने की पुलिस सूचना पर पहुंचकर युवक को इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया। वही चकमेहसी पुलिस ने मौके से चार खोखा बरामद किया। घायल युवक की पहचान सोमनाहा पंचायत सोमनाहा गांव के वार्ड संख्या 12 निवासी कामेश्वर राय का 25 वर्षीय पुत्र राहुल कुमार के रूप की गई।

देश में संविधान लोकतंत्र पर हो रहे हमले : सत्यनारायण सिंह

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी समस्तीपुर जिला के सरायरंजन लोकल कमिटी अन्तर्गत शेरपुर नरसारी शाखा का पांचवां एवं भोजपुर शाखा का तीसरा अलग अलग सम्मेलन सम्पन्न हुआ। क्रमशः मुकेश कुमार पासवान, विमल चौरसिया की अध्यक्षता एवं जिला सचिव मंडल सदस्य सत्यनारायण सिंह सुरेश महतो के पर्यवेक्षण में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम दोनों शाखा में झंडोत्तोलन एवं शहीद वेदी पर पुष्पांजलि अर्पित कर सम्मेलन का विधिवत उदघाटन करते हुए माकपा जिला सचिव मंडल सदस्य सत्यनारायण सिंह ने पार्टी के संविधान कार्यक्रम के साथ 1920 में ताशकंद स्थापना से लेकर आजादी की लड़ाई में कम्युनिस्टों की भूमिका देश की वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए संविधान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हो रहे हमले के खिलाफ संघर्ष तेज करने का आहवान किया। सचिव द्वारा रिपोर्ट पेश किए गये। सर्वसम्मति से शेरपुर नरसारी के फेकन पासवान एवं भोजपुर में चन्दन कुमार शाखा सचिव चुने गये। समापन भाषण सुरेश महतो ने कहा किसान मजदूरों को संगठित कर जनता के ज्वलंत सवालों पर संघर्ष के माध्यम से ही पार्टी को मजबूत कर सकते हैं। सम्मेलन में विमल पासवान, लड्डू लाल पासवान, मुकेश कुमार, अरूण कुमार पासवान, विमल चौरसिया, मो इस्लाम, चंदन कुमार आदि ने भाग लिया।

जहानाबाद में श्रीकृष्ण सिंह जयंती पर होगा भव्य कार्यक्रम, शामिल होंगे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अखिलेश प्रसाद सिंह

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना. मंगलवार, 22 अक्टूबर, 2024बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह जहानाबाद में पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष प्रो राम जतन सिंहा के द्वारा आयोजित श्रीकृष्ण सिंह जयंती में कल दिनांक 23 अक्टूबर 2024 दिन बुधवार को शामिल होंगे।
इस आशय की जानकारी देते हुए बिहार कांग्रेस मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने बताया कि पूर्व अध्यक्ष प्रो राम जतन सिंहा और उनके पुत्र अमित सिंहा के द्वारा जहानाबाद टाउन हॉल में बिहार केसरी पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्रीकृष्ण सिंह की 137वीं जयंती मनाई जाएगी जिसमें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह मुख्य अतिथि के रूप में में मौजूद रहेंगे।

प्रखंड विकास पदाधिकारी की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर बैठक

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

इस बैठक में सभी से अनुरोध किया गया कि लाभार्थियों को सामग्री आपूर्ति समय पर करवाते हुए गृह निर्माण का कार्य प्रारंभ हो

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को गृह निर्माण कार्यों में तेजी लाने के लिए सहयोग करने हेतु विभिन्न पंचायत के राज मिस्त्री, ईंट विक्रेता, बालू, गिट्टी, सीमेंट विक्रेता एवं मुखिया के साथ सभी आवास सहायक की बैठक की गई। इस बैठक में सभी से अनुरोध किया गया कि लाभार्थियों को सामग्री आपूर्ति समय पर करवाते हुए गृह निर्माण का कार्य प्रारंभ हो ताकि 100 दिनों के अंदर आवास पूर्ण हो सके एवं गृह प्रवेश का कार्यक्रम संपन्न हो सके।

नगर परिषद की बैठक में हंगामा के कारण हुई स्थगित

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। दलसिंहसराय नगर परिषद मे सोमवार को बैठक में जमकर हंगामा हुआ और बैठक स्थगित हो गई। बैठक साफ सफाई के साथ अन्य योजनाओं में अनियमितता को लेकर धरने पर बैठे पार्षद की बैठक हुई थी जो हंगामा की भेंट चढ़ गई। बैठक में पार्षदों के हस्ताक्षर करने को लेकर हुई विवाद के बाद सभापति और पार्षदों के बीच हुई नोकझोंक के बाद बैठक के दौरान जमकर हंगामा हुआ। जिसके बाद बैठक को स्थगित कर दिया गया। बैठक में हुए नोकझोंक और हंगामा का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसमें साफ दिख रहा है। बैठक के दौरान आसन्न पद बैठे सशक्त स्थाई समिति के सदस्य और वार्ड पार्षद के बीच कड़ी नोकझोंक हो रही है। इस दौरान कुछ वार्ड पार्षद और कार्यपालक पदाधिकारी अभिसार कुमार शर्मा, वार्ड पार्षद और पंचायत समिति सदस्य को शांत करा रहे है। इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो रहे वीडियो पर लोग तरह तरह के कमेंट करते नजर आ रहे हैं। इस संबध में कार्यपालक पदाधिकारी अभिसार कुमार शर्मा ने बताया कि सभापति के आहवान पर नगर परिषद की सामान्य बैठक 21 अक्टूबर को आयोजित की गई थी। बैठक के दौरान कुछ मुद्दों पर वार्ड पार्षदों द्वारा नोकझोंक करने के कारण सभापति के द्वारा बैठक को स्थगित कर दिया गया था।

चतुर्थ मंगलवार की बैठक में जिलाधिकारी समस्तीपुर ने सभी सम्बंधित पदाधिकारियों के साथ भाग लिया

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

मुख्य सचिव बिहार की अध्यक्षता में चतुर्थ मंगलवार की बैठक में जिलाधिकारी समस्तीपुर श्री रोशन कुशवाहा ने सभी सम्बंधित पदाधिकारियों के साथ भाग लिया। समीक्षा के क्रम में सर्वप्रथम खाद एवं आपूर्ति विभाग की समीक्षा की गई जिसमें सभी जिलों को निर्देश दिया गया कि अधिप्राप्ति का कार्य 1 नवंबर से प्रारंभ है जिसकी नोडल एजेंसी राज्य खाद्य निगम है ।सभी जिलों को दिशा निर्देश भेज दिया गया है जिसके आलोक में अधिप्राप्ति का कार्य करना प्रारंभ करेंगे। विदित हो की रैयती किसान के लिए अधिप्राप्ति का लक्ष्य 250 क्विंटल , जबकि गैर रैयत के लिए 100 क्विंटल का लक्ष्य विभाग द्वारा निर्धारित किया गया है ।इस साल का कुल निर्धारित अधिप्राप्ति का लक्ष्य 45 लाख टन है इसको प्राप्त करने के लिए सभी जिलाधिकारी को अधिक से अधिक किसानों का रजिस्ट्रेशन करवाने ,मिलर की संख्या मे वृद्धि करने और पूरी व्यवस्था को पारदर्शी रखने हेतु मुख्य सचिव महोदय द्वारा निर्देश दिया गया ।इसके पश्चात कृषि विभाग की समीक्षा के क्रम में फसल क्षति के मुआवजा भुगतान हेतु आवेदनो का निष्पादन यथाशीघ्र करने का निर्देश दिया गया । मुख्य सचिव महोदय द्वारा सभी जिलों को निदेश दिया गया कैंप मोड में काम करते हुए पंचायत स्तर/ अनुमंडल स्तर/जिला स्तर पर प्राप्त आवेदनों का प्रतिदिन सभी जिलाधिकारी रिव्यू करें एवं उनका त्वरित गति से निष्पादन कराना सुनिश्चित करें। परिवहन विभाग की समीक्षा के क्रम में मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना एवं मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना के निर्धारित लक्ष्यो को यथाशीघ्र प्राप्त करने हेतु निर्देश दिया गया। इसके अलावा हेलमेट कवरेज, एक्सीडेंटल विक्टिम को मुआवजा ,बस स्टैंड के लिए चिह्नित भूमि पर कार्य ,हिट एंड रन मामलों तथा नॉट हिट एंड रन मामलों की समीक्षा कर आवश्यक कार्रवाई का निर्देश दिया गया । खेल विभाग अंतर्गत अवसंरचना निर्माण हेतु विभिन्न जिलों से विभिन्न मैदान/ एथलेटिक ट्रैक/ सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक एवं पंचायत तथा नगर पंचायत में खेल मैदान हेतु स्थल उपलब्ध कराने हेतु निर्देश दिया गया। सामान्य प्रशासन की समीक्षा के क्रम में विभिन्न कार्यालयों के रंग -रोगन, मरम्मती, चिकित्सा प्रतिपूर्ति हेतु लंबित मामलों का यथाशीघ्र निष्पादन ,बिहार प्रशासनिक सेवा नवीन पदाधिकारी का चरित्र सत्यापन करके विभाग को भेजना तथा यदि आवश्यक हो कर्मियों का प्रशिक्षण तो उसकी सूचना भेजने का निर्देश दिया गया ।राजस्व एवं भूमि सुधार की समीक्षा क्रम में दाखिल-खारिज एवं परिमाजन के मामलों पर विशेष ध्यान आकृष्ट करते हुए उसके निष्पादन के दर को बढ़ाने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा रिकॉर्ड रूम के अभिलेखों की स्कैनिंग सभी अंचलों में शुरू करने निर्देश दिया गया ।साथ ही राजस्व कर्मचारियों पर कार्रवाई के लंबित प्रतिवेदनों को भेजने का निर्देश दिया गया ।परिमार्जन प्लस , अभियान बसेरा के तहत सर्वेक्षित परिवारों को दिसंबर तक पर्चा दे देने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा अपर समाहर्ता /भूमि सुधार समाहर्ता/ अंचल अधिकारियों के खराब पुराने वाहन को रद्द कर नए वाहन की अधियाचना भेजने का निर्देश दिया गया। गृह विभाग के मामलों की समीक्षा करते हुए निदेश दिया गया कि सीसीए के मामलों को अपलोड करना है, साथ ही भूमिहीन थानों के लिए जमीन उपलब्ध कराने ,चरित्र प्रमाण पत्र के सत्यापन के लंबित मामलों का निष्पादन करने, सीएम डैशबोर्ड पर लंबित मामले, भू समाधान पोर्टल के साथ-साथ कब्रिस्तान एवं मंदिर चारदीवारी के लंबित मामलों का निष्पादन यथाशीघ्र करने हेतु निदेश दिया गया। वित्त विभाग के अंतर्गत सरफैसी एक्ट के लंबित मामलों का निष्पादन टाइमलाइन के अंदर करने का निर्देश दिया गया सूचना जनसंपर्क विभाग में सोशल मीडिया पर विशेष प्रचार प्रसार के लिए निर्देश दिया गया। जिला स्तर पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष मे जिलाधिकारी महोदय के साथ अपर समाहर्ता समस्तीपुर श्री अजय कुमार तिवारी ,उप विकास आयुक्त श्री संदीप शेखर प्रियदर्शी,अपर समाहर्ता आपदा प्रबंधन श्री राजेश कुमार सिंह सहित सभी संबंधित विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी मौजूद थे।

झारखंड चुनाव में लालू परिवार को नहीं मिला महत्व: सम्राट चौधरी की तीखी आलोचना

सम्राट चौधरी का बयान: झारखंड में हेमंत सोरेन ने लालू परिवार को दिखाई हैसियत

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

तारीख 22 अक्तूबर झारखंड चुनाव में शिबू सोरेन द्वारा राजद की उपेक्षा पर बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने लालू परिवार पर किया तीखा हमला पटना, बिहार: बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने झारखंड विधानसभा चुनावों में लालू परिवार और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की राजनीति पर तीखा हमला करते हुए कहा है कि लालू परिवार की अपरिपक्व और दिशाहीन राजनीति के कारण ही आज उनकी पार्टी को झारखंड में कोई तवज्जो नहीं मिल रही है।

सम्राट चौधरी ने कहा, "आज जो स्थिति है, वह लालू परिवार की विफलताओं का परिणाम है। लालू प्रसाद यादव, जिन्होंने कभी बिहार की राजनीति में प्रमुख स्थान रखा, उनकी अगुवाई में राजद सिर्फ परिवारवाद तक सिमट गई है।इसी कारण, झारखंड में उनकी पार्टी को हेमंत सोरेन और जेएमएम से कोई मान्यता नहीं मिली। लालू परिवार की राजनीति अब केवल एक मजाक बनकर रह गई है।उन्होंने आगे कहा कि तेजस्वी यादव और राजद बार-बार झारखंड में सीटों के लिए इंतजार करते रहे, लेकिन जेएमएम ने साफ तौर पर उनकी मांगों को अनदेखा कर दिया। इससे साफ जाहिर होता है कि लालू परिवार की राजनीति अब राज्य के बाहर कोई महत्व नहीं रखती।

सम्राट चौधरी ने यह भी कहा, "झारखंड में इंडिया गठबंधन में शामिल होते हुए भी राजद का यह हाल बताता है कि यह पार्टी अब कमजोर और अप्रासंगिक हो गई है। लालू परिवार ने राजनीति को सिर्फ अपने परिवार के लाभ के लिए इस्तेमाल किया है, जिसका परिणाम आज हम सबके सामने है। यह परिवार बिहार और झारखंड की जनता के मुद्दों से पूरी तरह से दूर है।उन्होंने यह भी जोड़ा कि जनता अब लालू परिवार की राजनीति को समझ चुकी है, और यही वजह है कि झारखंड के क्षेत्रीय दल भी उन्हें कोई सम्मान देने के लिए तैयार नहीं हैं। "राजद अब सिर्फ एक छाया है, जो बिहार की सीमाओं के बाहर अपना वजूद नहीं बचा पा रही है,

हांसा में पैक्स अध्यक्ष का चुनाव लड़ेंगे डीलर नरेश कुमार महतो

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर ब्लॉक के अंतर्गत नागरबस्ती के जाने माने निवासी नरेश कुमार महतो जो वर्तमान में डीलर हैं। वे इस दफा हांसा पंचायत में पैक्स अध्यक्ष चुनाव में अध्यक्ष के रूप में चुनाव लड़ने का मन बना लिया है।जिन्हें भी जानकारी मिल रही है कि नरेश कुमार महतो पैक्स अध्यक्ष का चुनाव लड़ेंगे सभी ने उन्हें समर्थन देने की बात कह रहे हैं। इधर पूछे जाने पर उम्मीदवार नरेश कुमार महतो ने बताया कि जिन किसानों को पूर्व में खाद, यूरिया आदि नहीं मिल रहा था उन्हें खेती करने के लिए सभी सामग्री सरकारी दर पर उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि किसान को खेती करने के लिए सामग्री मैं अपने स्तर से और सभी सदस्यों के सहमति से दी जाएगी। बताया जाता है कि श्री महतो बिल्कुल साफ सुथरे व्यक्ति हैं, यहां के किसानों को एक दफा काम करने का मौका देना चाहिए। बहरहाल कुल मिलाकर देखा जाय तो नरेश कुमार महतो जैसा उम्मीदवार हांसा पंचायत में नहीं है।

बिहार में बदलो बिहार न्याय यात्रा चल रही है बीते कल पदयात्रा समस्तीपुर में प्रवेश कर गई

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

भारत कि कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी+लेनिनवादी) के आवाहन पर पूरे बिहार में बदलो बिहार न्याय यात्रा चल रही है बीते कल पदयात्रा समस्तीपुर में प्रवेश कर गई थी. पदयात्रा के दौरान कुछ कदम हम भी पदयात्रियों के साथ चले .पहले तो हमें लगा कि यह यात्रा आरामदायक होता लेकिन ऐसा कुछ नहीं था हमने कल अपने आंखों से देखा जितने भी पद यात्री थे जो नेपाल के बॉर्डर से लगातार पदयात्रा कर रहे थे उनमें से कुछ लोगों के पैरों में छाले पड़ रहे थे कुछ लोगों के पैर सूजन के कारण घाव बनकर उभर रहे थे . फोड़े फुंसी हो रहे थे लेकिन इतनी कठिनाई के बाद भी पदयात्री जोश जुनून के साथ आगे बढ़ रहे थे. हमें आश्चर्य तब हुआ जब हमने उस पदयात्रा में से एक पदयात्री को कहा आप हमारे साथ मोटरसाइकिल पर बैठ जाइए हम आपको आगे की मंजिल तक छोड़ देते हैं. आगे पदयात्री का जवाब सुनकर आप भी हैरान हो जाएगा.

पदयात्री ने हमसे कहा कॉमरेड यह पांव के छाले ये फुंसी उन दर्दों के सामने कुछ नहीं है जो दर्द वर्तमान में हम गरीबों शोषितों वंचितों हो रहा है .

आगे उन्होंने यह भी कहा हम इस पदयात्रा के बाद भी अपने लोगों के लिए आंदोलन करेंगे जब तक हमारे लोगों को उनका अधिकार नहीं मिल जाता तब तक हम संघर्ष करते रहेंगे.

साथियों यह तो रहा हौसला बुलंद करके आए पद यात्रियों की बात साथियों आपको हम एक बात और बताना चाहते हैं

पद यात्रियों के खाने-पीने से संबंधित वस्तुओं का जो इंतजाम होता है वह इंतजाम वह तमाम परिवार एक-एक मुट्ठी चावल दाल इत्यादि वस्तु एकत्रित करते हैं जिनके लिए आज भाकपा माले संघर्ष कर रही है.साथियों यह कल जो मैंने पूरा दिन में भर में देखा वही लिखा हूं साथियों संघर्ष के रास्ते में व्यक्ति अकेला ही निकलता है उसके बाद लोग जुड़ते जाते हैंसाथियों भाकपा माले के इस संघर्ष को मैं दिल से लाल सलाम करता हूं.

महापर्व छठ पर शिक्षकों के साथ नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं: राजेश राठौड़

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- छठ पर शिक्षकों की छुट्टियां काटना धर्म नहीं : राजेश राठौड़
- छठ पर्व पर मिले शिक्षकों को चार दिन की छुट्टी : राजेश राठौड़

पटना. मंगलवार, 22 अक्टूबर, 2024 बिहार सरकार के द्वारा निकाले गए ताजा आदेश में जहां महापर्व छठ पर राज्य के शिक्षकों के छुट्टियों में कटौती को बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने असामाजिक और अधार्मिक सोच करार दिया है। बिहार कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि बिहार में महापर्व छठ का विशेष महत्व होता है और इस पर्व को विधिवत और बहुत ही शुद्धता के साथ सभी बिहारवासी मनाते हैं। इस पर्व में चार दिनों का विधिवत पूजन होता है और बिहार सरकार के ताजा आदेश में इस छुट्टी में शिक्षा विभाग ने कटौती कर दी है जो अधार्मिक और गैर न्याय संगत प्रतीत हो रहा है। जदयू और भाजपा की जोड़ी केवल जनता और शिक्षकों को परेशान करने पर उतारू है। सभी को पता है कि महापर्व छठ पर बिहार के लोग दूर दूर से परिवार के साथ इस अनुष्ठान में भाग लेने आते हैं और ऐसे में लगातार अध्यापन से अल्प अवकाश मिलने पर परिवार के साथ समय बिताने का भी मौका मिलता है लेकिन सनातन धर्म का झूठा अलम्बरदार बनने वाले भाजपाई कहीं से भी इस फैसले का विरोध नहीं किए क्योंकि उन्हें केवल चुनावों में ऐसे मामले दिखते हैं।

प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने कहा कि राज्य सरकार को अविलंब जनहित और महापर्व को देखते हुए अपने इस छुट्टी में कटौती के फैसले को वापस लेना चाहिए अन्यथा कांग्रेस पार्टी इसका जमकर विरोध करेगी जब तक ये फैसला नीतीश भाजपा सरकार वापस नहीं ले लेती।

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला कृषि टास्क फोर्स की बैठक

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला कृषि टास्क फोर्स की बैठक हुई आयोजित।

अब प्रत्येक माह प्रखंड कृषि पदाधिकारीयो की होगी रैंकिंग, विभिन्न इंडिकेटर के आलोक में ओवरऑल प्रदर्शन के आधार पर होगी रैंकिंग।

निम्न प्रदर्शन करने वाले प्रखंड कृषि पदाधिकारियों के विरुद्ध होगी करवाई।

जिले में नहरों से सिंचाई,नलकूप, डीजल अनुदान, फसल क्षति अनुदान, धान अधिप्राप्ति की तैयारी,कृषि फीडर से विधुत आपूर्ति,उर्वरक की उपलब्धता,छापेमारी आदि का किया समीक्षा।

कृषि कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी किसानों तक अनिवार्य रूप से पहुचाये

जिले के किसानों को कृषि फीडर से विधुत कनेक्शन में किसी भी प्रकार की समस्या नही हो,इसे सुनिश्चित कर जिले के किसानों को ससमय पूरी सहजता से कृषि यंत्रीकरण योजना का लाभ दिलाने का दिया निर्देश

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कल 21 अक्टूबर सोमवार की देर शाम में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला स्तरीय कृषि टास्क फोर्स की बैठक आयोजित हुई। उन्होंने फसल क्षति अनुदान, धान अधिप्राप्ति की तैयारी, नहरों से सिंचाई,नलकूप, कृषि फीडर से बिजली आपूर्ति,उर्वरक की उपलब्धता आदि का समीक्षा कर संबधित अधिकारियों को निर्देश भी दिये। समीक्षा के क्रम में जिलधिकारी ने कहा कि अब प्रत्येक माह प्रखंड कृषि पदाधिकारीयो की रैंकिंग होगी ।उन्होंने कहा कि कृषि के विभिन्न इंडिकेटर के आलोक में ओवरऑल प्रदर्शन के आधार पर रैंकिंग की जाएगी।

सशस्त्र सीमा बल के जवानों द्वारा भारत नेपाल सीमा पर किया प्रतिबंधित दवाइयों के साथ एक संदिग्ध नेपाली व्यक्ति को गिरफ्तार

विशेष संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल,मधुबनी जिला के जयनगर के कार्यक्षेत्र भारत-नेपाल सीमा चौकी पीपरोंन के जिम्मेवारी के इलाके में वाह्य सीमा चौकी पीपरोंन के जवानो द्वारा गस्त डयूटी के दौरान उप निरीक्षक कार्तिक पुनिया के साथ अन्य जवानों द्वारा की गई कार्यवाही में भारतीय-नेपाल सीमा स्तम्भ संख्या 284/35 से 200 मीटर भारतीय क्षेत्र में दो नेपाली व्यक्तियों अरविंद कुमार (उम्र 27 वर्ष) सुपुत्र कमेश्वर साह गांव खुटा पीपराधी , वार्ड नंबर -1, मोतिहारी, जनकपुरी(नेपाल) एवं अविनाश नारायण यादव (उम्र 30 वर्ष) सुपुत्र उमेश यादव, गांव सिंगयाही , वार्ड नंबर -2, जिला - मोतिहारी, (नेपाल) को प्रतिबंधित दवाइयां ए प्लास्टिक जार ।

मधुबनी जिला के बेरोजगार युवाओं के लिए प्रतिमाह एक हजार रुपये भत्ता प्राप्त करने का अवसर

रोजनामा इंडो गल्फ
मो.अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिला के बेरोजगार युवाओं के लिए प्रतिमाह एक हजार रुपये भत्ता प्राप्त करने का अवसर ।*12 वी पास 20 से 25 वर्ष आयु वर्ग के मधुबनी जिला के बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार तलाशने हेतु, अधिकतम दो वर्षों के लिए प्रतिमाह एक हजार रुपये भत्ता प्राप्त करने का अवसर। अधिक जानकारी हेतु कल दिनांक-23.10.2024 को जिला प्रशासन के फेसबुक लाइव से पूर्वाहन 11.30 बजे जुड़े।

मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना के व्यापक प्रसार -प्रसार एवं काउंसलिंग कार्य आज

वरिष्ट संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के निर्देश के अलोक में जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र मधुबनी के द्वारा संचालित योजनाओं यथा बिहार स्टूडेंट कार्क्रेडिट कार्ड योजना,कुशल युवा कार्यक्रम, मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना के व्यापक प्रसार -प्रसार एवं काउंसलिंग कार्य आज Government Polytechnic मधुबनी में किया गया । कार्यक्रम में लग-भाग 450 से अधिक छात्र/छत्राओ ने बढ़-चाढ़ कर भाग लिया। उक्त कार्यक्रम में ऊफ्लउ के सहायक प्रबंधक -मुकेश कुमार, कर्मी- जितेन्द्र कुमार (रहड) के द्वारा विस्तार योजना के लाभ सहित आवेदन की प्रक्रिया आदि की जानकारी दी गई। उक्त जानकारी प्रबंधक,डीआरसीसी जब अखिलेश कुमार भारती ने दी।मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना के व्यापक प्रसार -प्रसार एवं काउंसलिंग कार्य आज

दीपावली एवं छठ के अवसर पर यात्री सुविधा के मद्दे नजर समस्तीपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों से कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

समस्तीपुर। दीपावली एवं छठ के दौरान यात्रियों की अत्याधिक भीड़ के मद्दे नजर समस्तीपुर मंडल से खुलने / पहुंचने वाली कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। इनमें बरौनी, दरभंगा, जयनगर, सीतामढ़ी, सहरसा स्टेशनों से आनंद विहार / नई दिल्ली/ दिल्ली के लिए चलायी जा रही स्पेशल ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :- गाड़ी संख्या 04021 / 04022 सीतामढ़ी - आनंद विहार- सीतामढ़ी स्पेशल - गाड़ी संख्या 04022 आनंद विहार टर्मिनल- सीतामढ़ी स्पेशल 29.11.2024 तक बुधवार एवं शुक्रवार को आनंद विहार टर्मिनल से 11 : 40 बजे खुलकर अगले दिन 15 : 45 बजे सीतामढ़ी पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04021 सीतामढ़ी - आनंद विहार टर्मिनल स्पेशल 30.11.2024 तक गुरूवार एवं शनिवार को सीतामढ़ी से 18 : 00 बजे खुलकर अगले दिन 18 : 05 बजे आनंद विहार टर्मिनल पहुंचेगी।

गाड़ी संख्या 04031 / 04032 सहरसा - आनंद विहार - सहरसा स्पेशल - गाड़ी संख्या 04032 आनंद विहार टर्मिनल - सहरसा स्पेशल 30.11.2024 तक सप्ताह के बुधवार एवं शुक्रवार को छोड़कर शेष दिन आनंद विहार टर्मिनल से 05 : 15 बजे खुलकर अगले दिन 10 : 30 बजे सहरसा पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04031 सहरसा - आनंद विहार टर्मिनल स्पेशल 01.12.2024 तक सप्ताह के गुरूवार एवं शनिवार को छोड़कर शेष दिन सहरसा से 13 : 00 बजे खुलकर अगले दिन 16 :10 बजे आनंद विहार टर्मिनल पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04059 / 04060 जयनगर - आनंद विहार - जयनगर स्पेशल - गाड़ी संख्या 04060 आनंद विहार टर्मिनल - जयनगर स्पेशल 15.11.2024 तक मंगलवार एवं शुक्रवार को आनंद विहार टर्मिनल से 10 : 30 बजे खुलकर अगले दिन 15 : 15 बजे जयनगर पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04059 जयनगर - आनंद विहार टर्मिनल स्पेशल 16.11.2024 तक बुधवार एवं शनिवार को जयनगर से 17 : 00 बजे खुलकर अगले दिन 19 : 55 बजे आनंद विहार टर्मिनल पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04061 / 04062 बरौनी - आनंद विहार - बरौनी स्पेशल - गाड़ी संख्या 04062 आनंद विहार टर्मिनल - बरौनी स्पेशल 17.11.2024 तक रविवार को आनंद विहार टर्मिनल से 09 : 00 बजे खुलकर अगले दिन 06 : 30 बजे बरौनी पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04061 बरौनी - आनंद विहार टर्मिनल स्पेशल 18.11.2024 तक सोमवार को बरौनी से 08: 00 बजे खुलकर अगले दिन 10 : 10 बजे आनंद विहार टर्मिनल पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04067 / 04068 दरभंगा - दिल्ली - दरभंगा स्पेशल - गाड़ी संख्या 04068 दिल्ली - दरभंगा स्पेशल 15.11.2024 तक मंगलवार एवं शुक्रवार को दिल्ली से 19 : 30 बजे खुलकर अगले दिन 16 : 30 बजे दरभंगा पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 04067 दरभंगा - दिल्ली स्पेशल 16.11.2024 तक बुधवार एवं शनिवार को दरभंगा से 18 : 00 बजे खुलकर अगले दिन 16 : 35 बजे दिल्ली पहुंचेगी।

यूपी उपचुनाव में सपा के लिए कांग्रेस छोड़ेगी दावेदारी

यूपी उपचुनाव में सपा के लिए कांग्रेस छोड़ेगी दावेदारी कहा-महाराष्ट्र में कम से कम सीटों पर लड़ें अखिलेश; गठबंधन बना रहेगा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 9 सीटों पर होने वाले उप चुनाव के लिए कांग्रेस और सपा के बीच सीट शेयरिंग पर पेंच फंस गया है। कांग्रेस ने सपा को एक नया प्रस्ताव दिया है, जिसमें 2 बातें अहम हैं। पहला कि यूपी की सभी सीटों पर सपा अकेले चुनाव लड़े। कांग्रेस पूरा साथ देगी। दूसरा प्रस्ताव महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से जुड़ा है। कांग्रेस ने कहा कि महाराष्ट्र में समाजवादी पार्टी कम से कम सीटों पर चुनाव लड़े या अपनी दावेदारी छोड़ दे। महाराष्ट्र चुनाव में अखिलेश ने महाविकास अघाड़ी से 15 सीटों की मांग रखी है। हालांकि सपा का कहना है कि कांग्रेस की ओर से अब तक इस तरह का कोई प्रस्ताव नहीं मिला है। दोनों पार्टियां कह रही हैं कि गठबंधन कायम रहेगा और दोनों पार्टियां मिलकर चुनाव लड़ेंगी। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने दैनिक भास्कर को बताया कि पार्टी प्रदेश में समाजवादी पार्टी के साथ चुनाव लड़ेगी। यह भी संभव है कि कांग्रेस एक भी सीट पर चुनाव न लड़े और समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को चुनाव लड़ाएं और उसे हमारे कार्यकर्ता पूरा समर्थन दें। वहीं, समाजवादी पार्टी का कहना है कि कांग्रेस जिन चार सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है, उसके बारे में उनके पास कोई प्लान नहीं है। अगर कांग्रेस चुनाव चार सीटों पर लड़ना चाहती है तो वह बताए कि उन सीटों पर किस तरह से उनका उम्मीदवार सपा से बेहतर होगा।

कांग्रेस से बातचीत के लिए अधिकृत किए गए समाजवादी पार्टी के नेता उदयवीर सिंह कहते हैं कि समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के लिए दो सीटें छोड़ी हैं। इसकी आधिकारिक जानकारी भी कांग्रेस के नेताओं को दे दी गई हैं। इस पर कांग्रेस का अब तक कोई जवाब नहीं आया है। ऐसे में समाजवादी पार्टी यह मानकर चल रही है कि कांग्रेस यूपी में दो सीटों पर चुनाव लड़ेगी। सपा INDI गठबंधन के तहत ही चुनाव लड़ेगी। महाराष्ट्र को लेकर है खामोशी सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस महाराष्ट्र में समाजवादी पार्टी को अधिक सीट नहीं देना चाहती। इसलिए वह यूपी के उप चुनाव पर किसी तरह का फोकस नहीं कर रही है। सपा ने 12 सीटों की मांग कांग्रेस के सामने जरूर रखी है, लेकिन कांग्रेस की ओर से इस बारे में कोई जवाब नहीं दिया गया है।

समाजवादी पार्टी ने महाराष्ट्र में पांच सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित भी कर दिए हैं। यूपी में 13 नवंबर को उप चुनाव होना है जबकि महाराष्ट्र में 20 नवंबर को वोटिंग होगी।सपा ने कांग्रेस को वही सीटें दी, जहां जीतना मुश्किलगाजियाबादः कांग्रेस 22 साल पहले जीती, फिर कभी नहीं गाजियाबाद में समाजवादी पार्टी सिर्फ एक बार 2004 में जीत हासिल पाई है। वह भी तब जब उसकी सत्ता में उप चुनाव हुए। जबकि, कांग्रेस यहां आखिरी बार 22 साल पहले जीती थी। 2022 का विधानसभा चुनाव छोड़ दें तो कांग्रेस इस सीट पर हमेशा सपा से आगे रही है। 2017 में जब सपा-कांग्रेस के बीच गठजोड़ हुआ तो सपा ने यह सीट कांग्रेस के लिए छोड़ दी थी। हालांकि, कांग्रेस यह सीट हार गई थी और भाजपा ने बड़ी जीत दर्ज की। गाजियाबाद सीट पर पिछले पांच चुनावों की बात करें तो भाजपा तीन और बसपा व कांग्रेस एक-एक बार चुनाव जीतने में कामयाब रही है। 2022 चुनाव में कांग्रेस को यहां 11 हजार 778 वोट ही मिले। इसी तरह अलीगढ़ की खैर सीट पर भी कांग्रेस 40 साल से नहीं जीती है। 2022 में कांग्रेस की मोनिका को सिर्फ 1,514 वोट मिले, जबकि भाजपा के अनूप वाल्मीकि को एक लाख 39 हजार से ज्यादा वोट मिले थे।

अजय राय बोले- संभव है कि कांग्रेस एक भी सीट पर न लड़े

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बताया कि पार्टी प्रदेश में समाजवादी पार्टी के साथ चुनाव लड़ेगी। यह भी संभव है कि कांग्रेस एक भी सीट पर चुनाव न लड़े और समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को चुनाव लड़ाएं और उसे हमारे कार्यकर्ता पूरा समर्थन दें। वहीं, समाजवादी पार्टी का कहना है कि कांग्रेस जिन चार सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है, उसके बारे में उनके पास कोई प्लान नहीं है। अगर कांग्रेस चुनाव चार सीटों पर लड़ना चाहती है तो वह बताए कि उन सीटों पर किस तरह से उनका उम्मीदवार सपा से बेहतर होगा। कांग्रेस से बातचीत के लिए अधिकृत किए गए समाजवादी पार्टी के नेता उदयवीर सिंह कहते हैं कि समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के लिए दो सीटें छोड़ी हैं। इसकी आधिकारिक जानकारी भी कांग्रेस के नेताओं को दे दी गई हैं। इस पर कांग्रेस का अब तक कोई जवाब नहीं आया है। ऐसे में समाजवादी पार्टी यह मानकर चल रही है कि कांग्रेस यूपी में दो सीटों पर चुनाव लड़ेगी। सपा INDI गठबंधन के तहत ही चुनाव लड़ेगी।

संक्षिप्त डायरी

कोचिंग से लौट रही बहनों के अपहरण की कोशिश

गोरखपुर । के खोराबार इलाके में दो नाबालिग बहनों के साथ एक भयावह घटना सामने आई। स्कार्पियो सवार शोहदों ने कोचिंग से लौट रही इन बहनों का अपहरण करने की कोशिश की। यह आरोपी पहले भी उन्हें रास्ते में परेशान कर चुके थे। पीड़ित बहनें रोजाना इंजीनियरिंग कॉलेज के पास कोचिंग के लिए जाती थीं। कोचिंग से घर लौटते समय चार युवकों का समूह उन्हें लगातार छेड़ता और शादी का दबाव बनाता था। जबरदस्ती गाड़ी में बिठाने की कोशिश दरअसल, शनिवार की शाम करीब 6:30 बजे, जब दोनों बहनें कोचिंग से लौट रही थीं, तभी स्कार्पियो सवार तीन युवक अचानक आ पहुंचे। उन्होंने जबरन दोनों को गाड़ी में बिठाने की कोशिश की, लेकिन बहनों के शोर मचाने पर आसपास के लोग तुरंत जुट गए, जिससे घबराकर आरोपी भाग गए। तीन आरोपी गिरफ्तार, कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया घटना के बाद, दोनों बहनें घर पहुंचकर अपनी मां को आपबीती सुनाई। मां ने तुरंत खोराबार पुलिस को तहरीर दी, जिसके बाद पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपियों की तलाश शुरू की।पुलिस ने रविवार को तीनों आरोपियों–मनीष गुप्ता (राघोपुर, चौरीचौरा), अनूप गुप्ता (सिरजम चौक, देवरिया), और शुभम गुप्ता (मोतीराम अड्डा, झंगहा)–को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने तीनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

करवा पर चौथ पति-पत्नी और बॉयफ्रेंड का हंगामा

गोरखपुर। के गुलरिहा थाना क्षेत्र में करवा चौथ के मौके पर एक अनोखे विवाद ने पुलिस को भी चौंका दिया। रविवार को एक महिला के पति और प्रेमी के बीच कहासुनी के बाद पुलिस ने दोनों को हवालात में डाल दिया। महिला ने जब दोनों को छुड़ाने की जिद पकड़ी, तब पुलिस ने मामला शांतिभंग में निपटाते हुए दोनों का चालान कर दिया। पति की गैरमौजूदगी में प्रेमी से हुई नजदीकियां सिकरीगंज थाना क्षेत्र की एक महिला की शादी करीब 10 साल पहले गीडा क्षेत्र के एक गांव में रहने वाले युवक से हुई थी। उनके दो बच्चे, आठ और पांच साल के हैं। पति के बाहर काम की तलाश में जाने के बाद महिला अपने भाई के पास मेडिकल कॉलेज के पास आकर रहने लगी। यहां उसकी मुलाकात गुलरिहा क्षेत्र के एक शादीशुदा युवक से हुई और दोनों के बीच बातचीत शुरू हो गई। समय के साथ यह दोस्ती नजदीकी में बदल गई, जिससे महिला के भाई ने विरोध किया। इस विरोध के बाद महिला अचानक गायब हो गई, जिससे परिवार में चिंता बढ़ गई। थाने में हाईवोल्टेज ड्रामा रविवार को महिला का पति, जो हाल ही में घर लौटा था, अपनी पत्नी को ढूंढने के लिए अपने साले के साथ गुलरिहा थाने पहुंचा। इस बीच, महिला अपने प्रेमी के साथ थाने आ गई। पुलिस ने सभी पक्षों को समझाने की कोशिश की, लेकिन महिला अपने प्रेमी के साथ जाने की जिद पर अड़ गई। इसी दौरान पति और प्रेमी के बीच तीखी बहस छिड़ गई, जिसे संभालने के लिए पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। आखिरकार, पुलिस ने शांति व्यवस्था भंग करने के आरोप में दोनों को हवालात में डाल दिया और मामला शांत करने की कोशिश की।

भूमि विवाद में पूरे परिवार को पीटा

बस्ती। के वाल्टरगंज थाना क्षेत्र के औसापुर गांव में भूमि विवाद के चलते कुछ मनबढ़ों ने एक परिवार पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इस घटना में पिता और पुत्री गंभीर रूप से घायल हो गए। लहूलुहान अवस्था में जब ये लोग थाने पहुंचे, तो पुलिस भी उनकी स्थिति देखकर दंग रह गई।घटना के तुरंत बाद पुलिस टीम मौके पर रवाना हुई, लेकिन मनबढ़ों में से एक व्यक्ति बाइक लेकर थाने के आसपास घूमता रहा, जिससे यह प्रतीत हो रहा था कि उसे पुलिस का कोई खौफ नहीं है। जानकारी के अनुसार, पीड़ित पक्ष को थाना समाधान दिवस के दौरान भी मनबढ़ों ने धमकी दी थी, जिसके चलते रविवार को उन्होंने इस घटना को अंजाम दिया। औसापुर निवासी चंद्रभान बर्नवाल और बानगढ़ निवासी सत्यनाराण यादव के बीच भूमि को लेकर कई वर्षों से मुकदमा चल रहा है। मामला न्यायालय में विचाराधीन है, और दोनों पक्षों में कई बार वाद-विवाद हो चुका है। रविवार को जब सत्यनारायण यादव अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ विवादित भूमि पर लोहे की टंकी रखने लगे, तो चंद्रभान ने इसका विरोध किया। हमला और गंभीर चोटें बताया जा रहा है कि मनबढ़ पहले से ही मारपीट की तैयारी करके आए थे। जैसे ही चंद्रभान ने लोहे की टंकी रखने को लेकर आपत्ति की, सत्यनारायण यादव और उनके साथियों ने लोहे के सरिए और डंडों से चंद्रभान के परिवार पर हमला बोल दिया। इस हमले में चंद्रभान, उनके पिता अदालती, पत्नी सुमन बर्नवाल, और बेटी सलोनी बर्नवाल बुरी तरह घायल हो गए हैं, जिनका इलाज चल रहा है। प्रभारी थानाध्यक्ष रमेश कुमार सहनी ने बताया कि इस मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और गिरफ्तारी के लिए टीम भेजी गई है। घायलों का उपचार कराया जा रहा है, और पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है।

राष्ट्रीय की प्रगति सुनिश्चित करेगा भाजपा का सक्रिय सदस्यता अभियानः सांसद

संवाददाता

कुशीनगर। रविन्द्र नगर भाजपा कार्यालय में जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय और जिला सदस्यता प्रमुख व पूर्व जिलाध्यक्ष लल्लन मिश्र ने सांसद विजय कुमार दूबे और सदर विधायक मनीष जायसवाल को पार्टी की सक्रिय सदस्यता का नवीनीकरण फार्म भरवाकर जनपद में भाजपा का सक्रिय सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया गया। रविवार को भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्यता अभियान में सदस्यता के नवीनीकरण के बाद सांसद विजय कुमार दूबे ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सक्रिय सदस्यता का नवीनीकरण करने पर हमें गर्व है। यह एक आंदोलन है जो जमीनी स्तर पर हमारी पार्टी को और मजबूत करेगा और राष्ट्रीय प्रगति के लिए हमारी पार्टी के कार्यकताओं का प्रभावी योगदान सुनिश्चित करेगा। सक्रिय सदस्यता अभियान कार्यकताओं को राष्ट्रहित में कार्य करने की नई उर्जा प्रदान करेगा।जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि कुशीनगर जनपद में अबतक लगभग चार लाख लोग भाजपा का प्राथमिक सदस्य बानाएं जा चुके हैं।प्राथमिक सदस्यता अभियान की तरह सक्रिय सदस्यता अभियान भी इतिहास बनाएगा। जिला सदस्यता प्रमुख व पूर्व जिलाध्यक्ष लल्लन मिश्र ने कहा कि सक्रिय सदस्यता पार्टी की आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करता है। मैं जिला के सभी कार्यकताओं का आह्वान करता हूं कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्र प्रथम के संकल्प के साथ सतत आगे बढ़ने वाली बीजेपी सक्रिय सदस्य बनें। सदर विधायक मनीष जायसवाल ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्य बनकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। सभी कार्यकर्ता भाजपा का सक्रिय सदस्य बनें और देश को अधिक सशक्त बनाने में अपना योगदान दें। इस अवसर पर विवेकानंद शुक्ल, विश्वरंजन कुमार आनन्द, प्रवीण कुमार गुंजन, भुवनेश्वर त्रिपाठी,रितिक सिंह गौतम,मीनू जिंदल, देवेश मिश्र, अरुण राय, जितेन्द्र सिंह आदि उपस्थित थे।

भन्ते ज्ञानेश्वर बुद्ध बिहार कुशीनगर में मना कठिन चीवर दान महोत्सव

संवाददाता

कुशीनगर। शांति, करुणा, मैत्री के उपदेशक बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर में भदन्त ज्ञानेश्वर बुद्ध बिहार के परिसर में बौद्ध संगठनों का राष्ट्रीय समन्वय भारत के संयोजक एवं भदन्त ज्ञानेश्वर बुद्ध विहार कुशीनगर के अधिपति भन्ते महेंद्र महाथेरो की अध्यक्षता में कठिन चीवरदान महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कठिन चीवर दान महोत्सव के मुख्य अतिथि अभिध्वजा महारथा गुरु, अग्ग महापंडित भन्ते ज्ञानेश्वर महाथेरो ने मंगल गाथा के साथ पंचशील, त्रिशरण प्रदान किया। कठिन चीवर दान महोत्सव में श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड, लद्दाख सहित भारत के विभिन्न राज्यो के बौद्ध भिक्षुओं ने धम्म संदेश दिए। महोत्सव में भारत के कई राज्यों के बौद्ध भिक्षुओं एवं उपासक उपासिकांओं ने हजारों की संख्या में भाग लिया। कठिन चीवर दान में चीवर के अलावा अष्ट आवश्यक वस्तुओं का दान भिक्षु संघ को किया गया। बौद्ध संगठनों का राष्ट्रीय समन्वय के राष्ट्रीय समन्वयक अभय रत्न बौद्ध एवं पर्यटन सचिव जेआर निराला बौद्ध, ईश्वरी बौद्ध व मुन्नी निराला बौद्ध, एडवोकेट द्वारका प्रसाद बौद्ध ने कठिन चीवर दान महोत्सव में हिस्सा लिया। कठिन चीवर दान महोत्सव के पावन अवसर पर प्रमुख बौद्ध कार्यकताओं का फूल मालाओं एवं साल ओढ़ाकर सम्मानित भी किया गया। इसी क्रम में अंतरराष्ट्रीय पहलवान रामाश्रय यादव, प्राचार्य बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय डा. विनोद मोहन मिश्रा, डॉ मैनेजर यादव, चंद्रभूषण यादव, डॉ संजय सिंह, कवि व गीतकार दिनेश तिवारी भोजपुरियन, शिवनाथ सिंह प्रमुख विक्रमा यादव, नपाप अध्यक्ष प्रतिनिधि राकेश जायसवाल आदि सम्मानित अतिथियों को पंचशील, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अंत में पूज्य भदन्त महेंद्र महाथेरो ने कठिन चीवर दान महोत्सव में पधारे सभी बौद्ध भिक्षुओं एवं बौद्ध उपासक उपाशिकांओं का आभार व्यक्त करते हुए करुणा, मैत्री के साथ जीवन जीने के लिए मंगल कामना की। इस दौरान भन्ते मुलायम, विक्रमा यादव, केदारनाथ यादव, पुरन्दर प्रताप यादव, एडवोकेट जितेंद्र पटेल, राम नगीना, राम गुलाब यादव, केदारनाथ यादव, शाकिर अली, जेपी यादव, लक्ष्मण यादव, अशोक यादव, सभासद केशव सिंह, हरिशंकर राजभर, नँद किशोर सिंह सहित हजारों लोग मौजूद रहे।

बिहारी राम की याद में 23 को होगा विराट दंगल

संवाददाता

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश बिहार की सीमा पर गोबरहिया में जन्मे स्वर्गीय बिहारी राम एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए हर कोई तरसता है। बिहारी राम के सुपुत्र पास्टर राजकुमार अपने पिता की कृतियों और सामाजिक सरोकार को देखते हुए उन्हें जीवंत रखने के उद्देश्य से उनकी दूसरी पुण्यतिथि पर 23 अक्तूबर को बांसी में एक भव्य कुश्ती दंगल का आयोजन किए हैं।

कार्यक्रम की तैयारी में जीजान से लगे पास्टर राजकुमार ने कहा की पिता जी एक अच्छे अभिभावक के साथ साथ क्षेत्र में अच्छी पकड़ बनाए थे इसलिए उनके संस्मरण में राष्ट्रीय एकता विराट कुश्ती दंगल का आयोजन किया जा रहा है इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और समाज में बेहतर कार्य करने वाले तमाम व्यक्तियों को सम्मानित भी किया जायेगा।

गो सेवा आयोग उपाध्यक्ष ने की प्रेसवार्ता

बस्ती। में गो सेवा आयोग के उपाध्यक्ष और दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री महेश शुक्ल ने रविवार को सर्किट हाउस में प्रेस वार्ता की। दौरान उन्होंने गोवंश की रक्षा और किसानों की आय बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की गंभीरता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जल्द ही इस दिशा में प्रभावी और व्यवहारिक कदम उठाए जाएंगे। पत्रकारों ने जब गौशालाओं की दयनीय स्थिति, बरसात में पानी भरने, पशु चारों के संकट और उनकी मौतों के मुद्दे उठाए, तो महेश शुक्ल ने आश्वासन दिया कि सभी सुझावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक अधिकारियों से अपेक्षा है कि चारागाह की जमीनों को अतिक्रमण से मुक्त कराया जाए। महेश शुक्ल ने स्पष्ट किया कि सरकार पर सब कुछ नहीं छोड़ा जा सकता। गोसंरक्षण और गोपालन के लिए लोगों को स्वयं आगे आना होगा, ताकि उन्हें शुद्ध दूध, दही और घी मिल सके। उन्होंने साझा प्रयासों के माध्यम से गौशालाओं को समृद्ध बनाने का संकल्प लिया और कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं गोपालक हैं और जमीनी दिक्कतों को समझते हैं। राज्यमंत्री ने कहा कि गो सेवा आयोग का गठन इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए हुआ है।

जौरा विशुनपुरा में श्रीमद्भागवत कथा

संवाददाता

कुशीनगर। फाजिलनगर के जौरा विशुनपुरा में श्रीमद्भागवत कथा का शुभारम्भ होगा। इसके लिए गाजे बाजे के जलयात्रा रमाशंकर उपाध्याय के दरवाजे से शिव मंदिर व ब्रह्मस्थान विशुनपुरा, श्री राम-जानकी मंदिर जौरा बाजार,शिव मंदिर धनहां,होते हुए कनौरा स्थित तीनमुहानी घाट पर पहुंचेगी।जहां आचार्य पंडित चंद्रशेखर पांडेय शास्त्री अपने सहयोगियों के साथ वैदिक मंत्रोच्चार के बीच जल भरवाएंगें। तत्पश्चात जलयात्रा पुनः आयोजन स्थल पर पहुंचेगी जहां नित्य सायंकाल पांच बजे से रात तक श्रीधाम अयोध्या से पधारे आचार्य विनोद जी महाराज संगीतमयी श्रीमद्भागवत कथा का रसपान श्रद्धालुओं को कराएंगें। उक्त आशय की जानकारी आयोजक आशुतोष, पशुपतिनाथ व गंधर्व उपाध्याय नें दी है।

पुलिस स्मृति दिवसःपुष्प चक्र अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

बस्ती। जिले में पुलिस स्मृति दिवस पर पुलिस लाइन परिसर में पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी, अपर पुलिस अधीक्षक ओपी सिंह सहित अन्य पुलिस अधिकारियों ने शहीद स्मारक स्थल पर अपने कर्तव्य पथ पर अपने जीवन की आहुति देने वाले जांबाज पुलिसकर्मियों को पुष्प चक्र अर्पित कर विनम्र श्रद्धांजली अर्पित की। इसके साथ ही वीरगति को प्राप्त शहीद पुलिसकर्मियों के परिजनों को भेंट प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी कहा कि 21 अक्टूबर 1959 का दिन था, लद्दाख के हॉट स्प्रिंग के पास केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की पेट्रोलिंग पार्टी के तीन ऑफिसर्स को भारत-तिब्बत बॉर्डर पर चीनी सैनिकों ने अपनी हिरासत में ले लिया। अगले दिन जब उनकी तलाश में सीआरपीएफ की टीमें गई तो उन पर पहले से घात लगाकर बैठे चीनी सैनिकों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। सीआरपीएफ के जवानों ने भी उस हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया, लेकिन उस अचानक हुए हमले में सीआरपीएफ के 10 जवान शहीद हो गए, सात अन्य जवान घायल हो गए, उसी दिन से उन 10 वीर सीआरपीएफ जवानों की शहादत को याद करते हुए प्रत्येक वर्ष संपूर्ण भारतवर्ष में 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है।उन्होंने कहा कि जनवरी 1960 में भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस महानिरीक्षकों की वार्षिक बैठक में लिए गए निर्णय के बाद से प्रत्येक साल ड्यूटी के दौरान अपनी जान गंवाने वाले और लद्दाख में शहीद हुए वीर पुलिसकर्मियों के बलिदान के सम्मान में हर साल 21 अक्टूबर को (पुलिस स्मृति दिवस) नेशनल पुलिस डे मनाया जाता है ।

एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर बुद्ध पीजी में विवाद प्रतियोगिता 24 अक्टूबर से

संवाददाता

कसया,कुशीनगर। बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर बीएड विभाग द्वारा एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर छात्र - छात्राओं की दो दिवसीय वाद विवाद प्रतियोगिता - 2024 का आयोजन 24 अक्टूबर दिन गुरुवार को भिक्षु चंद्रमणि सभागार में किया गया है। उक्त जानकारी महाविद्यालय के बीएड विभाग के अध्यक्ष डॉ विभ्राट चन्द कौशिक ने एक प्रेस वार्ता में दी बताया कि प्रथम दिन फाजिलनगर विधायक सुरेंद्र कुशवाहा व समापन और पुरस्कार वितरण समारोह के सांसद कुशीनगर विजय कुमार दुबे मुख्य अतिथि होंगे। डॉ कौशिक ने बताया कि भारत सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द की अध्यक्षता में एक राष्ट्र एक चुनाव कराने को लेकर एक सामिति का गठन किया है। उस सामिति ने राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत किया है। लोकसभा में 2/3 के बहुमत से पूरे भारत के 50 प्रतिशत विधान मंडलों से यह पास होकर नया कानून बनेगा। भारत में भी 1967 के पूर्व एक साथ चुनाव होते रहे हैं। और कई महत्वपूर्ण देशों ने इसे स्वीकार भी किया। एक चुनाव एक विषय पर विद्यालयों में परिचर्चा होनी चाहिये। इसी को लेकर वाद विवाद प्रतियोगिता का निर्णय लिया गया है। जिसमें दो दर्जन इंटर व उपर के स्कूलों के नियमित छात्र छात्राएं भाग लेंगे। जिसमें छात्र - छात्राएँ हिंदी या अंग्रेजी में पांच मिनट में अपना ब्याख्यान पक्ष या विपक्ष में प्रस्तुत करेंगे। दो मिनट का अतिरिक्त समय मिलेंगें। इसमें निर्णायक का निर्णय अंतिम और सर्व मान्य होगा।

प्रगाढ़ताः रोटरी क्लब के कपिलवस्तु अध्यक्ष का हुआ स्वागत, सहयोग पर चर्चा

संवाददाता

कुशीनगर। नेपाल के रोटरी क्लब कपिलवस्तु के अध्यक्ष बाल कृष्ण पांड्या और सदस्य अयोध्या प्रसाद भंडारी का बुद्ध स्थली पहुंचने पर रोटरी क्लब कुशीनगर के अध्यक्ष वाहिद अली ने रोटरी फ्लैग, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर उनका स्वागत और सम्मान किया। इस अवसर पर दोनों क्लबों के बीच आपसी सहयोग और सद्भावना को और बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई गई। कहा कि रोटरी क्लब कुशीनगर और रोटरी क्लब कपिलवस्तु के बीच इस तरह की मुलाकातें न सिर्फ दोनों क्लबों के बीच रिश्तों को मजबूत करती हैं बल्कि यह रोटरी इंटरनेशनल के उद्देश्यों के प्रति भी समर्पण को दशार्ती हैं। इस दौरान रोटरी क्लब के रंजीत श्रीवास्तव, आदिल खान, टीके रॉय प्रमुख रूप से शामिल थे।

मेहंदी से बाल हो गए हैं ड्राई तो आप भी ट्राई कर सकती हैं ये होममेड हेयर मास्क

आमतौर पर लोग सफेद बालों को कलर करने के लिए मेहंदी का इस्तेमाल करते हैं। मेहंदी के इस्तेमाल से बालों को अच्छा कलर तो मिल जाता है और कुछ दिनों के लिए बालों के सफेद दिखने की समस्या भी कम हो जाती है। लेकिन कई बार मेहंदी लगाने के बाद बाल ड्राई होने लगते हैं और ड्राई बाल मुख्य रूप से हेयर फॉल का कारण भी बनते हैं। अक्सर मेहंदी अप्लाई करते समय हम कुछ गलतियां करते हैं जिसकी वजह से बाल ज्यादा ड्राई हो जाते हैं। जैसे मेहंदी से पहले बालों में तेल न लगाना और रूखे बालों में ही मेहंदी लगाना।

जब हम रूखे बालों में ही मेहंदी का इस्तेमाल करने लगते हैं तो मेहंदी लगाने के बाद बाल और ज्यादा रूखे और बेजान हो जाते हैं। अगर आपके बाल भी मेहंदी के बाद ज्यादा ड्राई हो जाते हैं तो आप इनकी ड्राइनेस कम करने के लिए बालों में कुछ होममेड हेयर मास्क अप्लाई कर सकती हैं। ये हेयर मास्क वैसे तो पूरे तरह से प्राकृतिक हैं और इनका बालों में कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है लेकिन बालों में ये हेयर मास्क अप्लाई करने से पहले आप विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें क्योंकि सभी के बालों का प्रकार अलग होता है और किसी भी सामग्री का असर आपके बालों पर अलग तरीके से हो सकता है।

बालों में मेहंदी लगाने के बाद इन बातों का रखें ध्यान

यदि आप बालों में मेहंदी अप्लाई करती हैं तो आपको सबसे ज्यादा ध्यान में रखने वाली बात ये है कि मेहंदी लगाने से पहले किसी भी ऑयल जैसे जैतून या नारियल के तेल का इस्तेमाल करें।

ब्राउन शुगर और ऑलिव ऑयल हेयर मास्क

ब्राउन शुगर बालों के लिए एक बेहतरीन एक्सफोलिएंट है जो आपके स्कैल्प से उन मृत त्वचा कोशिकाओं और किसी भी बचे हुए अवशेष के निर्माण से छुटकारा पाने में मदद करता है। वहीं जैतून का तेल हमेशा सूखे बालों के इलाज के लिए प्राकृतिक कंडीशनर के रूप में उपयोग किया जाता है। यह बालों को नमी प्रदान करके बालों की ड्राइनेस को कम करने में मदद करता है।

आवश्यक सामग्री

शुगर – 2 बड़े चम्मच
जैतून का तेल– 1 बड़ा चम्मच

हेयर मास्क बनाने और इस्तेमाल का तरीका

- एक बाउल में चीनी और तेल को एक साथ मिलाकर हेयर मास्क तैयार करें।
- इस हेयर मास्क को अपने बालों में ऊपर से नीचे तक लगाएं।
- हेयर मास्क को अपने बालों पर 15–20 मिनट के लिए लगा रहने दें।
- बालों को शॉवर कैप से ढककर रखें।
- 15 –20 मिनट के बाद बालों को अच्छी तरह से शैम्पू करें और शैम्पू के बाद बालों में कंडीशनर का इस्तेमाल जरूर करें।

मेहंदी बालों से हटाने के तुरंत बाद शैम्पू न करें बल्कि कम से कम 12 घंटे बाद ही बालों को शैम्पू करें। शैम्पू के बाद आप कंडीशनर का इस्तेमाल जरूर करें, क्योंकि मेहंदी बालों को ड्राई कर सकती है।

बालों में मेहंदी के बाद होममेड हेयर मास्क क्यों जरूरी है

यदि आप मेहंदी से ड्राई हो चुके बालों में होममेड हेयर मास्क अप्लाई करती हैं तो ये 20 मिनट से भी कम समय में आपके बालों को ढेर सारे लाभ प्रदान करने में मदद करता है। हेयर मास्क आपके बालों को मुलायम और हाइड्रेटिंग बनाने के साथ बालों की ग्रोथ को बढ़ावा देने, बालों में चमक जोड़ने और यहां तक कि बालों के झड़ने को कम करने में भी मदद करते हैं। आइए जानें मेहंदी का बालों में इस्तेमाल करने के बाद आप कौन से हेयर मास्क का इस्तेमाल अपने बालों में कर सकते हैं।

नारियल तेल का हेयर मास्क

नारियल तेल बालों की ड्राइनेस को कम करने में मदद करता है और मेहंदी से ड्राई हो चुके बालों को भी शाइन प्रदान करने में मदद करता है।

आवश्यक सामग्री

शहद – 1 बड़ा चम्मच
नारियल तेल – 1 बड़ा चम्मच

बनाने और इस्तेमाल का तरीका

- एक कटोरी में 1 बड़ा चम्मच नारियल का तेल और 1 बड़ा चम्मच शहद डालकर आपस में अच्छी तरह से मिलाएं।
- मिश्रण को एक बर्तन में निकाल लें और इसे गर्म करें ताकि शहद और नारियल का तेल एक दूसरे में अच्छी तरह से मिक्स हो जाए।
- मिश्रण को वापस बाउल में डालें और ठंडा होने दें। फिर, अपने बालों पर ऊपर से नीचे तक मास्क लगाएं और अपने पूरे बालों पर पूरी तरह से अप्लाई करें। यदि आपकी जड़ें आमतौर पर काफी ऑयली हैं, तो केवल मध्य लंबाई से नीचे तक मास्क लगाएं।
- बची हुई नमी को बनाए रखने के लिए शॉवर कैप लगाएं।
- 20 मिनट के बाद अपने बालों को गर्म पानी से धो लें और हमेशा की तरह शैम्पू और कंडीशनर करें।
- अगर आपके बाल मेहंदी लगाने के बाद रूखे हो गए हैं तो आपको बालों की ज्यादा देखभाल करने की जरूरत है। इसके लिए यहां बताए हेयर मास्क अप्लाई करें। लेकिन इन मास्क का इस्तेमाल करने से पहले एक्सपर्ट की सलाह जरूर लें।

वेडिंग गिफ्ट जा रही हैं खरीदने तो इन जरूरी बातों को रखें खास ख्याल

शादियों का सीजन शुरू हो गया है, ऐसे में सिर्फ कपड़े–गहने ही नहीं बल्कि गिफ्ट की भी खरीदारी शुरू हो जाती हैं। खासकर अगर शादी घर के किसी सदस्य की हो तो इस बात को सोचना और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है कि आखिर गिफ्ट में दूल्हा और दुल्हन को क्या दिया जाए? बता दें कि इंडियन वेडिंग में महंगे तोहफे देने का रिवाज काफी पुराना है, लेकिन अब समय काफी बदल गया है, ऐसे में बजट के साथ–साथ जरूरत का ख्याल रखना बहुत जरूरी है।

वहीं कुछ लोग वेडिंग गिफ्ट खरीदारी में समय अधिक चला जाता है। दरअसल, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लोग गिफ्ट को लेकर काफी कंफ्यूजन रहते हैं, ऐसे में हम पहले डिसाइड कर लें, तो पैसे और समय दोनों को बचाया जा सकता है। इसलिए वेडिंग गिफ्ट की खरीदारी करते वक्त कुछ बातों का ख्याल रखना बहुत जरूरी है।

वेडिंग गिफ्ट सेलेक्शन

वेडिंग गिफ्ट में क्या दें, यह सबसे बड़ा सवाल होता है। आप इसे बारे में दूल्हा या फिर दुल्हन से सवाल भी नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा दूसरों से पूछने पर वो अलग से आपको आइडिया दे सकते हैं। इस तरह कंफ्यूजन काफी बढ़ जाता है, इसलिए बेहतर है कि आप खुद तय करें कि शादी के बाद दूल्हा और दुल्हन को किन चीजों को जरूरत अधिक पड़ती है। उसे ध्यान में रखते हुए गिफ्ट की खरीदारी करें। इसके अलावा गिफ्ट इस उम्मीद से ना दें, आपको वापस मिल सकता है। गिफ्ट अच्छा और जरूरत को ध्यान में रखकर दें।

कैश रजिस्टरी का ऑप्शन चुने

वेडिंग गिफ्ट के तौर पर कैश रजिस्ट्री का ऑप्शन चुन सकती हैं। वेडिंग गिफ्ट की खरीदारी से पहले आप चाहें तो कैश रजिस्ट्री का ऑप्शन चुन सकती हैं। दरअसल, आज कल डेस्टिनेशन का ट्रेंड चल पड़ा है। ऐसे में साथ में गिफ्ट ले जाना काफी ओल्ड फैशन हो सकता है। आप चाहें तो कैश रजिस्ट्री का ऑप्शन चुन सकती हैं। कैश रजिस्ट्री कराने से न्यूली मैरिड कपल अपनी पसंद और जरूरत के अनुसार चीजें खरीद सकती हैं। वहीं कपल भी चाहें तो इस कैश को आने वाले समय के लिए सेव भी कर सकते हैं।

खरीदारी से पहले बजट सेट करें

वेडिंग गिफ्ट की खरीदारी से पहले बजट तय कर लें। दरअसल, कई बार मार्केट में खरीदने कुछ जाते हैं और खरीदकर कुछ लाते हैं। मार्केट में चीजें की तरह–तरह होती हैं, जिसे लेकर कंफ्यूजन काफी होता है। अगर आप बजट सेट करने से आप कंफ्यूज नहीं होंगे और उतनी ही कीमत में आप गिफ्ट खरीदकर लाएंगे। इस तरह आप फिजूलखर्ची से भी बच सकती हैं।

ऑफलाइन और ऑनलाइन चेक करें

कई बार हम वेडिंग गिफ्ट की खरीदारी आखिरी समय में करते हैं, ऐसे में आप चाहे तो ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों का ऑप्शन चुन सकती हैं। दरअसल, घर की शादी में काफी तैयारी करनी पड़ती है।

ऑफलाइन खरीदारी में काफी समय चला जाता है, ऐसे में आप समय को बचाना चाहती हैं तो ऑनलाइन खरीद सकती हैं। वहीं अगर आप ने तय कर लिया कि आपको दूल्हा और दुल्हन को गिफ्ट में क्या देने वाली हैं तो उसे ऑनलाइन पहले चेक कर लें। इसके बाद समय है तो ऑफलाइन खरीदारी कर सकती हैं।

क्वालिटी जरूर करें चेक

अक्सर ऐसा देखा होगा कि लोग शादी के गिफ्ट के तौर पर एक नहीं कई चीजें देते हैं। हालांकि, जब बाद में उसे चेक करें तो कई चीजें खराब या फिर इस्तेमाल के योग्य नहीं होती। इससे छवि खराब होती है, इसलिए एक साथ कई सारी चीजें तोहफे में देने के बजाय एक ही चीज सेलेक्ट और उसे गिफ्ट करें। कोशिश करें कि खरीदारी करते वक्त वेडिंग गिफ्ट को अच्छी तरह चेक कर लें। उसकी क्वालिटी अच्छी होनी चाहिए।

शादियों का सीज़न चल रहा है और जिनकी शादी होने वाली है, उन्होंने अभी से इसकी तैयारियां भी शुरू कर दी हैं। शादी की तैयारियां केवल शॉपिंग पर खत्म नहीं होती हैं, बल्कि जल्द न्यूली वेड कपल बनने की तैयारी कर रहे जोड़े अपने रूम को सजाने और संवारने के बारे में भी बातें करते हैं।

ऐसा होना चाहिए न्यूली वेड कपल का बेडरूम

दुल्हन का आगमन हजारों खुशियां लेकर आता है। हिंदू धर्म में तो दुल्हन को देवी लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। ऐसे में देवी लक्ष्मी का गृह प्रवेश परिवार में सुख और समृद्धि लेकर आए, इसके लिए घर में जुड़ने वाली नई सदस्या का खुश रहना बहुत जरूरी है। किसी को भी सबसे ज्यादा सुकून उसके अपने कमरे में मिलता है, इसलिए न्यूली वेड कपल का कमरा सेट करते वक्त कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। खासतौर पर वास्तु के हिसाब से न्यूली वेड कपल का कमरा कैसा होना चाहिए, इस परएस्ट्रोलॉजर एवं वास्तु एक्सपर्ट कहती हैं, 'न्यूली वेड कपल के कमरे की दिशा, रंग और उसमें रखे सामान का वास्तु के हिसाब से होना बहुत जरूरी है। इससे उनका रिश्ता बेहतर बनता है और परिवार के लिए भी सब कुछ शुभ होता है।'

बेडरूम की दिशा

वास्तु एक साइंस है और 'वे ऑफ आर्किटेक्चर' है। इसमें दिशाओं का विशेष महत्व होता है।' इसलिए वास्तु के हिसाब से न्यूली वेड कपल का कमरा साउथ–ईस्ट दिशा में होना चाहिए और घर की सबसे ऊपर वाली मंजिल में होना चाहिए। हालांकि, कई बार वास्तु के हिसाब से न्यूली वेड कपल का कमरा सही दिशा में नहीं होता है। ऐसे में वास्तु दोष को दूर करने के लिए कमरे में बेड की सेटिंग इस तरह होनी चाहिए कि दुल्हन का सिर साउथ में और पैर नॉर्थ में हो। इस दौरान ध्यान रखें कि पैर एकदम दरवाजे के सामने नहीं होने चाहिए। अगर इस दिशा में सोने की व्यवस्था नहीं हो पा रही हैं तो ईस्ट की ओर सिर किया जा सकता है। लेकिन जब भी आपको कंसीव करना हो तो अपने सोने की जगह को बदल लें।

बेड कैसा होना चाहिए

सोशल डेकोरेशन को भूल कर आपको लकड़ी का ही बेड अपने लिए चुनना चाहिए। 'मेटल में कोल्ड एनर्जी होती होती है और वुड में वॉर्म एनर्जी होती है। न्यूली वेड कपल्स को वॉर्म एनर्जी की जरूरत होती है।' इसके साथ ही, इस बात का ध्यान रखें कि बेड में अगर बॉक्स भी है तो उसमें कोई भी कबाड़ न रखें और न ही कोई धारदार चीज रखें। यहां तक की बेड पर पड़ा गद्दा भी सिंगल होना चाहिए।

कैसा होना चाहिए कमरे में शीशा

शीशा आपका प्रतिबिंब बनाता है। किसी भी चीज को डबल करना और एनर्जी को फैलाना शीशे की प्रॉपर्टी होती है। इसलिए शीशे का सही दिशा में होना जरूरी है। सोते वक्त शीशे में आप नजर न आएं इसके लिए हमेशा शीशा बेड के बगल में होना चाहिए।

कमरे का डेकोरेशन कैसा होना चाहिए

कमरे के डेकोरेशन में सबसे ज्यादा लोग फोटो फ्रेम्स का इस्तेमाल करते हैं। न्यूली वेड कपल्स को भी अपने कमरे में हमेशा ऐसी तस्वीरें लगानी चाहिए, जो उन्हें खुशी दें। भगवान की तस्वीर कभी न लगाएं, सोलो व्यक्ति की तस्वीर न लगाएं और जंगली जानवरों की तस्वीरें भी न लगाएं। कपल अपनी भी तस्वीर लगा सकते हैं।

कमरे का रंग कैसा होना चाहिए

अपना फेवरेट कलर ही कमरे की दीवारों पर कराएं। हो सके तो कमरे में कहीं न कहीं लाल रंग का इस्तेमाल जरूर करें। क्योंकि यह रंग एनर्जी को बढ़ाता है और कपल के बीच के प्रेम संबंधों को मधुर बनाता है। ज्यादा लाल रंग न इस्तेमाल करें क्योंकि इससे कंसीव करने में दिक्कत आती है और लड़ाई झगड़े भी होते हैं।

घर पर बनाएं मूंग दाल डोसा

साउथ इंडियन खाने का अपना अलग ही मजा है। स्वादिष्ट होने के साथ-साथ दक्षिण भारतीय व्यंजन हेल्दी भी हो सकते हैं, क्योंकि उनमें तेल की मात्रा कम से कम होती है। इडली, डोसा, सांभर, रसम, वड़ा, अप्पम, लेमन राइस जैसे अन्य कई व्यंजनों को देखकर आपके मुंह भी पानी आता होगा? दूसरी सबसे अच्छी बात यह है कि आप इनका आनंद सुबह नाश्ते, ब्रंच, लंच, स्नैक्स और डिनर में भी ले सकते हैं।

आज हर शहर में आप साउथ इंडियन फूड का आनंद ले सकते हैं। इतना ही नहीं, घर पर भी इन्हें बनाया जा सकता है। अब बात करें डोसा की, तो आज हम आपके लिए डोसा की रेसिपी लेकर आए हैं, लेकिन यह आम डोसा नहीं, बल्कि मूंग दाल से बनने वाला डोसा है। इसे आप केवल दो मिनट में बना भी सकते हैं।

बनाने का तरीका

- मूंग दाल का डोसा बनाने के लिए पहले जरूरी सामग्री को इकट्ठा कर लें। मूंग दाल को कुछ देर पहले भीगोकर रखें। उसके बाद एक मिक्सी में भीगी हुई मूंग दाल, थोड़ा–सा पानी, अदरक और हरी मिर्च डालकर ग्राइंड कर लें।
- जब बैटर तैयार हो जाए तो उसे एक भगोने में निकाल कर रख लें। अब तैयार बैटर में स्वादानुसार नमक और दो चम्मच चावल का आटा डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर लें।
- अब एक तवा गर्म करें और उस पर यह बैटर फैला लें। थोड़ी देर सेकने के बाद बैटर के ऊपर हल्का–सा तेल डालें और फिर आलू का मसाला डालने की बजाय उसमें बारीक कटा प्याज, टमाटर और धनिया डालें।
- इसे कुछ सेकंड सेकने के बाद डोसा फोल्ड करें और एक प्लेट पर निकाल लें। स्वादिष्ट टमाटर और नारियल की चटनी के साथ मूंग दाल के इस डोसे को सर्व करें।
- घर पर मूंग दाल का डोसा बनाना बेहद आसान है। इसे बनाने में आपको केवल दो मिनट लगेंगे। आइए जानें इसकी आसान रेसिपी

सामग्री

1 कप मूंग दाल
1 इंच अदरक
2 चम्मच चावल का आटा,
1 हरी मिर्च
आधा कप पानी,
स्वादानुसार नमक
1 बारीक कटा प्याज
1 बारीक कटा टमाटर
1 बड़ा चम्मच बारीक कटा हुआ धनिया

विधि

- भीगी हुई मूंग दाल को एक मिक्सी में डालें और उसमें अदरक और हरी मिर्च डालकर ग्राइंड करें।
- बैटर को एक भगोने में निकालें और उसमें चावल का आटा और नमक डालकर अच्छी तरह से मिक्स करें।
- अब एक तवा गर्म करें और उसमें तैयार बैटर फैलाएं। ऊपर से हल्का–सा तेल डालें और कुछ देर सेक लें।
- अब इसमें बारीक कटा हुआ प्याज, टमाटर और धनिया डालें। डोसा को फोल्ड कर एक प्लेट में निकालें और चटनी के साथ सर्व करें।

सिर्फ सेहत ही नहीं, घर चमकाने के काम भी आता है जैतून का तेल

जैतून तेल का इस्तेमाल सेहत और ब्यूटी से जुड़ी परेशानियों को दूर करने के लिए किया जाता है। मगर क्या आप जानते हैं कि यह घर की सफाई में भी मददगार है। जी हां, जैतून के तेल से आप घर की साफ–सफाई भी कर सकते हैं। चलिए आज हम आपको बताते हैं कि किस तरह जैतून के तेल का इस्तेमाल आपके घर की छोटी–छोटी प्रॉब्लम को दूर करता है।

लकड़ी के फर्श को करें साफ

1 चम्मच ऑलिव ऑयल और 1/2 चम्मच व्हाइट विनेगर को मिक्स करके उसे अपनी घर की फर्श को साफ करें। यह आपके फर्श को नए जैसा चमका देगा और इससे फर्श के दाग–धब्बे भी आसानी से साफ हो जाएंगे।

पुराने फर्नीचर को रखें नए जैसा

लकड़ी के फर्नीचर की अलग सही तरीके से देखभाल न की जाए तो वह खराब होने लगते हैं। ऐसे में आप कपड़े पर हल्का–सा जैतून का तेल लगाकर लकड़ी के फर्नीचर को साफ करें। उसके बाद सूखे कपड़े के फर्नीचर साफ करें। इससे आपका पुरानी वुडन फर्नीचर भी नया लगेगा।

बर्तनों को चमकाएं

रसोई में खाना बनाते हुए कई बार बर्तन जल जाते हैं। ऐसे में सबसे पहले उसपर व्हाइट विनेगर और बेकिंग सोडा डालकर बर्तन को साफ करें। फिर उसपर जैतून का तेल और नमक डालकर स्क्रब की मदद से साफ करें। इससे आपका बर्तन बिल्कुल साफ हो जाएगा।

जूट फर्नीचर की सफाई

जूट के फर्नीचर में गंदगी आसानी से नहीं निकलती और उसकी शाइन खोने लगती है। वैक्यून क्लीनर से सफाई करने के बावजूद भी वह अच्छी तरह साफ नहीं होते। ऐसे में आप कपड़े पर जैतून का तेल लगाकर फर्नीचर की सफाई करें। इससे उसकी धूल–मिट्टी भी आसानी से निकल जाएगा और नया भी लगने लगेगा।

भारत को 2030 तक एक लाख कंपनी सचिवों की आवश्यकता होगी: आईसीएसआई

नई दिल्ली ।

कंपनी सचिवों के शीर्ष निकाय आईसीएसआई का कहना है कि तेज आर्थिक वृद्धि और बढ़ते हुए कंपनी संचालन के दौरान भारत को 2030 तक लगभग एक लाख कंपनी सचिवों की जरूरत होगी। वर्तमान में 73,000 से अधिक कंपनी सचिव हैं और इनमें से लगभग 12,000 कंपनी सचिव कार्यरत हैं। कंपनी सचिव कंपनियों में विभिन्न सांविधिक जरूरतों का अनुपालन सुनिश्चित कर कॉरपोरेट संचालन ढांचे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (आईसीएसआई) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था को देखने के नजरिये में महत्वपूर्ण बदलाव आया है और कंपनी सचिव भारत को दुनिया के सबसे पसंदीदा निवेश स्थलों में से एक बनाने में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गये हैं। उन्होंने हाल ही में कहा कि भारत को 2030 तक लगभग एक लाख कंपनी सचिवों की आवश्यकता होगी। विभिन्न अनुमानों के अनुसार भारत के 2030 तक 7,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है। वित्त मंत्रालय की इस साल जनवरी में जारी रिपोर्ट में कहा गया था कि वित्तीय क्षेत्र और हाल के तथा भविष्य के संरचनात्मक सुधारों के दम पर आने वाले वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर सात प्रतिशत से ऊपर रहेगी। मुद्रास्फीति रुख और विनिमय दर के आधार पर, भारत 2030 तक 7,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। संस्थान ने पेशे में अधिक युवा प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए कंपनी सचिव कार्यकारी कार्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों का सीधा पंजीकरण भी शुरू किया है। आईसीएसआई ने अन्य उपायों के अलावा कॉरपोरेट निदेशक मंडल में अपनाई जाने वाली सचिव स्तर की गतिविधियों में एकरूपता लाने के लिए मानक पेश किये हैं।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें लगभग सभी राज्यों में स्थिर

नई दिल्ली ।

सरकारी तेल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल के भाव अपडेट कर दिए हैं। रे विवार को भी फ्यूल की कीमतों में किसी भी तरह का बदलाव नहीं हुआ है। पेट्रोल और डीजल पुरानी कीमतों पर ही खरीदा जा सकेगा। मालूम हो कि पेट्रोल पर जीएसटी नहीं लगता है लेकिन, पेट्रोल का रिटेल सेलिंग प्राइस एक्साइज ड्यूटी, डीलर कमिशन, वैट जुड़ने के बाद फाइनल होता है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की ऑफिशियल वेबसाइट के मुताबिक अलग-अलग महानगरों और शहरों में पेट्रोल-डीजल की ताजा कीमत इस प्रकार है- दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल 94.72 रुपये और डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 103.44 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 89.97 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 104.95 रुपये प्रति लीटर और डीजल 91.76 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.34 रुपये प्रति लीटर है। वहीं नोएडा में पेट्रोल 94.83 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.96 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 95.19 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.05 रुपये प्रति लीटर, बेंगलुरु में पेट्रोल 102.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.94 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.24 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.40 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.65 रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.88 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.36 रुपये प्रति लीटर और पटना में पेट्रोल 105.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.04 रुपये प्रति लीटर है।

महाराष्ट्र में नये सोयाबीन फसल की आवक के बीच सोयाबीन तिलहन टूटा

नई दिल्ली । महाराष्ट्र के सांगली मंडी में खरीफ सोयाबीन के नये फसल की आवक शुरु होने के दौरान देश के खाद्य तेल-तिलहन बाजार में शनिवार को सोयाबीन तिलहन के दाम में गिरावट के साथ बंद हुए। शिकागो एक्सचेंज में शुक्रवार रात लगभग दो प्रतिशत के सुधार के बीच यहां सरसों तेल तिलहन, सोयाबीन तेल, कच्चा पामतेल (सीपीओ) एवं पामोलीन तथा बिनौला तेल के दाम सुधार के साथ बंद हुए। सूत्रों ने कहा कि सहकारी संस्था नाफेड अलग अलग राज्यों में तेल मात्रा की प्रतिशत के हिसाब से सरसों तिलहन की बिक्री 5,150 से 5,550 रुपये प्रति क्विंटल के भाव पर कर रही है। हालांकि सरसों के नये एमएसपी के हिसाब से सरसों के दोनों भाव एमएसपी से कम ही हैं। इसके अलावा प्रति क्विंटल सरसों के लिए लगभग 150 रुपये का वारदाना मुफ्त दिया जा रहा है। सूत्रों ने कहा कि मौजूदा समय में आयातित तेलों के थोक दाम बेहद सस्ते हैं। तेल तिलहन की महंगाई की चिंता करने वाले समीक्षकों व संबद्ध अधिकारियों को इस सुनहरे वक्त का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचाने का इंतजाम करना चाहिये। तेल-तिलहनों के भाव इस प्रकार रहेः सरसों तिलहन 5,925-5,965 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली 6,425-6,700 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल मिल डिलिवरी (गुजरात) 15,350 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली रिफाइंड तेल 2,290-2,590 रुपये प्रति टिन, सरसों तेल दादरी 11,600 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों पक्की घानी 1,875-1,975 रुपये प्रति टिन, सरसों कच्ची घानी 1,875-2,000 रुपये प्रति टिन, तिल तेल मिल डिलिवरी 18,900-21,000 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन तेल मिल डिलिवरी दिल्ली 10,100 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन मिल डिलिवरी इंदौर 9,775 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन तेल डीगम, कांडला 8,350 रुपये प्रति क्विंटल, सीपीओ एक्स-कांडला 8,750 रुपये प्रति क्विंटल, बिनौला मिल डिलिवरी (हरियाणा) 9,575 रुपये प्रति क्विंटल, पामोलिन आरबीडी, दिल्ली 9,925 रुपये प्रति क्विंटल, पामोलिन एक्स कांडला- 9025 रुपये (बिना जीएसटी के) प्रति क्विंटल, सोयाबीन दाना 4,300-4,330 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन लूज 4,110-4,235 रुपये प्रति क्विंटल और मक्का खल (सरिस्का) 4,150 रुपये प्रति क्विंटल।

एफपीआई ने अगस्त में अब तक 21,201 करोड़ के शेयर बेचे

नई दिल्ली ।

विदेशी निवेशकों ने अगस्त में भारतीय शेयर बाजारों में अब तक कुल 21,101 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर बेचे। इसकी वजह येन मुद्रा में कैरी ट्रेड यानी निम्न ब्याज दर वाले वाले देश से कर्ज लेकर दूसरे देश की परिसंपत्तियों में निवेश का बंद होना, अमेरिका में मंदी की आशंका और वैश्विक स्तर पर बढ़ता तनाव है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार एफआईआई ने जुलाई में 32,365 करोड़ रुपये और जून में 26,565 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे थे। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने आर्थिक वृद्धि निरंतर बने रहने, सुधार जारी रहने, कंपनियों के तिमाही परिणाम उम्मीद से बेहतर रहने और राजनीतिक स्तर पर स्थिरता की उम्मीद में इन दो महीनों में निवेश किये। इससे पहले एफपीआई ने लोकसभा चुनावों के दौरान मई में 25,586 करोड़ रुपये और मॉरीशस के साथ भारत के कर समझौते में बदलाव तथा अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में लगातार वृद्धि पर चिंताओं के बीच अप्रैल में 8,700 करोड़ रुपये से अधिक की निकासी की थी। आंकड़ों के मुताबिक एफपीआई ने इस महीने 1-17 अगस्त तक शेयर बाजार से 21,201 करोड़ रुपये की पूंजी निकासी की है। एफपीआई ने इस साल अब तक इक्विटी शेयर में 14,364 करोड़ रुपये का निवेश किया है। अगस्त में एफपीआई की निकासी का मुख्य कारण वैश्विक और घरेलू कारक हैं। बाजार के जानकार कहते हैं कि वैश्विक स्तर पर, येन कैरी ट्रेड के समाप्त होने, वैश्विक मंदी की आशंका, धीमी आर्थिक वृद्धि और वैश्विक स्तर पर जारी संघर्षों को लेकर चिंताओं के कारण बाजार में अस्थिरता और जोखिम से बचने का रुख बना है। बैंक ऑफ जापान ने मुख्य ब्याज दर में 0.25 प्रतिशत तक की वृद्धि की है। इसके बाद में येन कैरी ट्रेड के समाप्त होने से पूंजी निकासी शुरू हुई। घरेलू स्तर पर जून और जुलाई में शुद्ध लिवाल होने के बाद कुछ एफपीआई ने पिछली तिमाहियों में मजबूत तेजी के बाद मुनाफा वसूली का विकल्प चुना होगा। इसके अलावा कंपनियों के तिमाही परिणाम मिले-जुले होने तथा अपेक्षाकृत उच्च मूल्यांकन ने भारतीय शेयर बाजार को कम आकर्षक बना दिया है।

भारत को 2030 तक 14.8 करोड़ अतिरिक्त रोजगार पैदा करने की जरूरत: गोपीनाथ

नई दिल्ली ।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रथम उप प्रबंध निदेशक गीता गोपीनाथ ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए देश को 2030 तक 14.8 करोड़ अतिरिक्त रोजगार पैदा करने की जरूरत है। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के हीरक जयंती कार्यक्रम में कहा कि 2010 से शुरू होने वाले दशक में भारत की औसत वृद्धि दर 6.6 प्रतिशत रही, लेकिन रोजगार दर दो प्रतिशत से कम रही। गोपीनाथ ने कहा कि इसलिए भारत की रोजगार दर अन्य जी-20 देशों की तुलना में काफी कम है। यदि आप जनसंख्या वृद्धि के लिहाज से भारत के अनुमानों को देखें तो भारत को अब से लेकर 2030 तक कुल मिलाकर छह करोड़ से 14.8 करोड़ अतिरिक्त नौकरियां पैदा करनी होंगी। हम पहले से ही 2024 में हैं, इसलिए हमें कम समय में बहुत सारी नौकरियां पैदा करनी होंगी। इसके लिए भूमि सुधार और श्रम संहिताओं को लागू करने सहित बुनियादी सुधारों की जरूरत होगी। उन्होंने कहा कि अधिक नौकरियां के अवसर देने के लिए निजी निवेश बढ़ाने की भी जरूरत है, क्योंकि यह सकल घरेलू उत्पाद में सात प्रतिशत वृद्धि के अनुरूप नहीं है। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक निवेश अच्छा चल रहा है, लेकिन निजी निवेश में सुधार करना होगा। गोपीनाथ ने यह भी कहा कि भारत को अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहिए, ताकि वह अपने वर्कफोर्स के स्किल विकास कर सके।

मारुति सुजुकी फ्रोंक्स की हो रही शानदार बिक्री

नई दिल्ली । भारत और विदेश में मारुति सुजुकी फोंक्स की शानदार बिक्री हो रही है। कंपनी इस गाड़ी की दोनों बाजारों में 2 लाख से ज्यादा यूनिट्स बेच चुकी है। मारुति सुजुकी फोंक्स अब भारत से जापान निर्यात कर रही है। फोंक्स को अब लैटिन अमेरिका, मध्य पूर्व और अफ्रीका के कई देशों में निर्यात किया जा रहा है। हाल ही में इसे जापान में भी निर्यात करना शुरू कर दिया गया है। जापानी कंपनी सुजुकी ने फॉन्क्स के डिजाइन के लिए भारत में मारुति के साथ साझेदारी की है। इस कार का निर्माण भारत के गुजरात में किया जाता है। हालांकि सुजुकी द्वारा इसे डिजाइन किया गया है। भारत में बनने के कारण उम्मीद है कि यह जापान में भी पसंद की जाएगी। बता दें मारुति सुजुकी फोंक्स ऑटो एक्सपो 2023 में लॉन्च की गई थी। इसकी बिक्री 24 अप्रैल 2023 से शुरू हुई थी। इस गाड़ी की 10 महीनों के अंदर 1 लाख से ज्यादा यूनिट बिक गईं थी।

कारखानों के ज्यादातर मजदूरों का वेतन 20,000 से कम: रिपोर्ट

नई दिल्ली। देश में कारखानों में काम करने वाले ज्यादातर मजदूरों का वेतन 20,000 रुपये प्रतिमाह या उससे कम है। एक रिपोर्ट में कहा गया है, इससे पता चलता है कि कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा वित्तीय तनाव से झेल रहा है तथा आवास, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहा है। प्रौद्योगिकी से जुड़े एक श्रम प्रधान भर्ती मंच ने रिपोर्ट में कहा कि 57.63 प्रतिशत से अधिक श्रम प्रधान नौकरियां 20,000 रुपये प्रति माह या उससे कम वेतन सीमा में आती हैं। यह दिखाता है कि कई श्रमिक न्यूनतम मजदूरी के करीब कमाते हैं। रिपोर्ट से पता चला है कि लगभग 29.34 प्रतिशत श्रम प्रधान नौकरियां मध्यम आय वर्ग में हैं, जिनमें वेतन 20,000-40,000 रुपये प्रति माह है। इसमें कहा गया है कि इस श्रेणी में आने वाले श्रमिकों को वित्तीय सुरक्षा में मामूली सुधार का अनुभव होता है, लेकिन वे आरामदायक जीवन स्तर प्राप्त करने से बहुत दूर हैं। रिपोर्ट के अनुसार इस सीमा में आय से आवश्यकताएं तो पूरी हो जाती हैं, लेकिन बचत या निवेश के लिए बहुत कम गुंजाइश बचती है, जो इस श्रेणी के कार्यबल के एक बड़े हिस्से की आर्थिक कमजोरी को उजागर करता है। आंकड़ों से पता चलता है कि श्रम क्षेत्र में कम वेतन वाली नौकरियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और उच्च आय के लिए सीमित अवसर हैं।

वैश्विक रुख और विदेशी निवेशक तय करेंगे शेयर बाजार की चाल: विश्लेषक

- एफआईआई के पूंजी प्रवाह और कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव पर भी नजर रहेगी

मुंबई ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजार की चाल वैश्विक रुख और विदेशी निवेशकों की कारोबारी गतिविधियों से तय होगी। कंपनियों के वित्तीय परिणाम जारी हो चुके हैं, ऐसे में इन दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह बात विशेषज्ञों ने कही है। इस सप्ताह जारी होने वाले अमेरिकी फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक के ब्योरे पर निवेशकों की नजर होगी। बाजार के विश्लेषकों ने कहा कि चूंकि कंपनियों के वित्तीय परिणाम आ चुके हैं, ऐसे में इस सप्ताह, वृहद आर्थिक मोर्चों पर ऐसी कोई महत्वपूर्ण गतिविधियां नहीं हैं, जिससे निवेशक संकेत लें। हालांकि, वैश्विक स्तर पर आर्थिक आंकड़े महत्वपूर्ण होंगे। इसमें जापान में मुद्रास्फीति आंकड़े और अमेरिकी एफओएमसी बैठक का ब्योरा महत्वपूर्ण हैं, जिसपर निवेशकों की नजरें होंगी। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता की स्थिति बाजार के लिए जोखिम बनी हुई है। उन्होंने कहा कि कारोबारियों की विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) के पूंजी प्रवाह और कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव पर भी नजर होगी।अमेरिका में मंदी की आशंका कम होने से शुक्रवार को वैश्विक बाजार में तेजी आई। अमेरिका में मुद्रास्फीति में नरमी और खुदरा बिक्री के मजबूत आंकड़े जैसे सकारात्मक आंकड़ों ने मंदी की आशंकाओं को दूर किया है। इसके अलावा अमेरिकी फेडरल रिजर्व के अगले महीने की शुरुआत में नीतिगत दर में कटौती की संभावना से भारत सहित वैश्विक शेयर बाजारों में एक बड़ी तेजी आई। बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि बाजार का रुख एफओएमसी बैठक के ब्योरे, अमेरिका में घरों की बिक्री के आंकड़ों से तय होगा। इस सप्ताह सभी की नजरें अमेरिकी फेडरल रिजर्व की बैठक के ब्योरे पर होंगी। कुल मिलाकर हम उम्मीद करते हैं कि बाजार मजबूत होगा और वैश्विक गतिविधियों से संकेत लेगा।

देश की शीर्ष 10 कंपनियों में सात का मार्केट कैप 1.40 लाख करोड़ बढ़ा

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और इन्फोसिस सबसे ज्यादा लाभ में रहीं

नई दिल्ली । बीते सप्ताह देश की शीर्ष 10 कंपनियों में से सात का बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) संयुक्त रूप से 1,40,863.66 करोड़ रुपये बढ़ा। बीएसई सेंसेक्स में एक प्रतिशत की तेजी के साथ कंपनियों का बाजार मूल्यांकन बढ़ा है। बेहतर कारोबारी उम्मीद के साथ टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और इन्फोसिस सबसे ज्यादा लाभ में रहीं। पिछले सप्ताह अवकाश के कारण कारोबारी दिवस कम था। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार पूंजीकरण (एमकैप) 67,477.33 करोड़ रुपये बढ़कर 15,97,946.44 करोड़ रुपये, इन्फोसिस का मूल्यांकन 36,746.21 करोड़ रुपये बढ़कर 7,72,023.49 करोड़ रुपये, भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 11,727.55 करोड़ रुपये बढ़कर 8,45,123.87 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण 10,913.96 करोड़ रुपये बढ़कर 8,36,115.19 करोड़ रुपये, आईटीसी का मूल्यांकन 8,569.73 करोड़ रुपये बढ़कर 6,28,399.10 करोड़ रुपये, रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण 5,311.4 करोड़ रुपये बढ़कर 20,00,076.41 करोड़ रुपये और हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार पूंजीकरण 117.48 करोड़ रुपये बढ़कर 6,45,926.13 करोड़ रुपये रहा। हालांकि भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसीआई) का बाजार पूंजीकरण 47,943.48 करोड़ रुपये घटकर 6,69,058.26 करोड़ रुपये पर रहा। एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 13,064 करोड़ रुपये घटकर 12,43,441.53 करोड़ रुपये और भारतीय स्टेट बैंक का मूल्यांकन 10,486.42 करोड़ रुपये घटकर 7,25,080.10 करोड़ रुपये रहा। बाजार पूंजीकरण के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज ने सबसे मूल्यवान कंपनी का दर्जा बरकरार रखा है। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, भारतीय स्टेट बैंक, एलआईसी, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी का स्थान रहा।

बीपीसीएल अगले पांच साल में करेगी 1.7 लाख करोड़ का निवेश

नई दिल्ली । सार्वजनिक क्षेत्र की भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा है कि कंपनी अगले पांच साल में 1.7 लाख करोड़ रुपये के निवेश करने पर विचार कर रही है। कंपनी यह निवेश अपने मुख्य कारोबार तेल शोधन और ईंधन विपणन को बढ़ाने के साथ-साथ पेट्रोरसायन तथा हरित ऊर्जा जैसे नये क्षेत्रों में करेगी। बीपीसीएल के पास वर्तमान में देश की कुल तेल शोधन क्षमता का लगभग 14 प्रतिशत और ईंधन खुदरा नेटवर्क का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। कंपनी नये क्षेत्रों में दस्तक देने के साथ अपने मुख्य कारोबार को बढ़ाने की योजना बना रही है। कंपनी के अधिकारी ने सालाना रिपोर्ट में कहा है कि बीपीसीएल अब प्रोजेक्ट एस्पायर के रूप में कई दशक की आकांक्षी यात्रा के पहले चरण को लागू कर रही है। इसका पांच साल का रणनीतिक ढांचा दो मूलभूत स्तंभों पर आधारित है। इसमें मुख्य कारोबार को बढ़ावा और दूसरा भविष्य की परियोजनाओं में निवेश है। अे धिकारी ने कहा कि हमारी मध्यम अवधि की रणनीति जारी है। इसके तहत एक एक तरफ जहां हम अपने मुख्य कारोबार पेट्रोलियम उत्पादों की रिफाइनिंग और विपणन तथा खोज और उत्पादन गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ पेट्रोरसायन, गैस, हरित ऊर्जा, गैर-ईंधन खुदरा और डिजिटल जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर समान रूप से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

पेज एक का शेष

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान...

शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए मॉडल स्कूल का संचालन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत लोगों को अनुदानित दर पर ऋण उपलब्धकराकर रोजगार से जोड़ने का काम निरंतर चल रहा है। खाद्य सुरक्षा योजना से आच्छादित सभी परिवारों को साल में दो बार वस्त्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

सब कुछ सही हुआ होता तो यह योजना एक वर्ष पहले धरातल पर उतर गई होती : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि अगर सब कुछ अच्छा हुआ होता तो यह महत्वाकांक्षी योजना आज नहीं बल्कि एक साल पहले धरातल पर उतर गई होती। राज्य सरकार की योजनाओं पर कुछ तत्वों द्वारा अनेक प्रकार से रोड़ा लगाने का काम किया जाता है। ऐसे लोगों से हम सभी को सावधान रहने की जरूरत है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छी बात यह है कि देर से ही सही पर दुरुस्त तरीके से यह योजना अब अनवरत बिना रुकावट चलती रहेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि ह्वझारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजनाह्व के तहत आज पाकुड़ जिला की 81 हजार से अधिक पात्र बहन-बेटियों को डीबीटी के माध्यम से उनके बैंक खाते में 1 हजार रुपए की सम्मान राशि भेजी गई। इन महिलाओं को प्रत्येक वर्ष 12 हजार रुपए भेजे जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि रिमोट का बटन दबाकर आज अपनी बहन-बेटियों यह सम्मान राशि भेजने में हमने सफलता पायी है। यहां की बहन-बेटियों को यह सम्मान अनवरत मिलती रहे इस संकल्प के साथ उनकी सरकार आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के सभी जिलों की महिलाओं के बैंक खाते में महीने के 15 तारीख तक इस योजना के तहत मिलने वाली सम्मान राशि भेजा जाना सुनिश्चित किया गया है। यह योजना कितना महत्वपूर्ण है यह इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि जिस घर में 21 वर्ष से 50 वर्ष के उम्र की दो-तीन,चार अथवा पांच महिलाएं हैं उस घर में प्रति वर्ष सम्मान राशि के रूप में कितने रुपए भेजी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह योजना राज्य की नारी शक्ति को समर्पित योजना है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने पाकुड़ जिलावासियों को दी इन महत्वपूर्ण योजनाओं की सौगात : मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 105.8015 करोड़ रुपए की 215 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। इसमें 32.877 करोड़ रुपए की 14 योजनाओं का उद्घाटन और 72.9244 करोड़ रुपए की 201 योजनाओं की आधारशिला रखी। मौके पर मुख्यमंत्री ने कुल 65948 लाभुकों के बीच 126.1593 करोड़ रुपए की परिसंपत्तियों का वितरण भी किया।इस अवसर पर मंत्री सत्यानंद भोक्ता, मंत्री बेबी देवी, मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह, विधायक दिनेश विलियम मरांडी, विधायक कल्पना सोरेन, जिला परिषद अध्यक्ष जुली क्रिस्टमनी हेमब्रम, पूर्व मंत्री हेमलाल मुर्मू, महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के सचिव मनोज कुमार, संताल परगना प्रमंडल के आयुक्त श्री लालचंद डाडेल सहित पाकुड़ जिले के उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक एवं अन्य पदाधिकारीगण तथा बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

पीएम मोदी के...

एमपॉक्स का आखिरी मामला मार्च 2024 में पता चला था।प्रधान सचिव मिश्रा ने निर्देश दिया कि निगरानी बढ़ाई जाए और मामलों का शीघ्र पता लगाने के लिए प्रभावी उपाय किए जाएं। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि प्रारंभिक उपचार के लिए परीक्षण प्रयोगशालाओं के नेटवर्क को तैयार किया जाना चाहिए। वर्तमान में 32 प्रयोगशालाएं परीक्षण के लिए सुसज्जित हैं। उन्होंने निर्देश दिया कि बीमारी की रोकथाम और उपचार के लिए प्रोटोकॉल बड़े पैमाने पर प्रसारित किए जा सकते हैं। इसके बाद उन्होंने स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच बीमारी के संकेतों और लक्षणों के बारे में जागरूकता अभियान एवं निगरानी प्रणाली को समय पर सूचित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

188 हिंदू प्रवासियों...

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि आजादी के समय भारत का विभाजन धर्म के आधार पर किया गया और उस समय भीषण दंगे हुए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बंगलादेश में रहने वाले करोड़ों हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन और ईसाई समुदाय के लोग अपनी वेदना नहीं भूल सकते। उन्होंने कहा कि उस वक्त विभाजन का फैसला करते हुए तत्कालीन सरकार ने वादा किया था कि पड़ोसी देशों से आने वाले हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन और ईसाई संप्रदायों के लोगों को भारत की नागरिकता दी जाएगी।शाह ने कहा कि चुनाव आते-आते तत्कालीन सरकार के नेता इन वादों से मुकरते गए और 1947, 1948 और 1950 में किए गए इन वादों को भुला दिया गया। उन्होंने कहा कि उस समय की सरकार ने इन लोगों को इसी लिए नागरिकता नहीं दी कि इससे उनका वोट बैंक नाराज हो जाएगा। उन्होंने कहा कि तुष्टिकरण की नीति के कारण इन लाखों-करोड़ों लोगों को नागरिकता से वंचित रखा गया और इससे बड़ा पाप कोई नहीं हो सकता।

शरिया कानून से...

उन्होंने कहा कि संविधान में एक संघवादी राजनीतिक संरचना और बहुलवादी समाज की परिकल्पना की गई है, जहां धार्मिक संप्रदायों और सांस्कृतिक इकाइयों को अपने धर्म का पालन करने और अपनी संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार है। उन्होंने प्रधानमंत्री की ओर से संवैधानिक शब्द समान नागरिक संहिता के स्थान पर ह्वसेक्युलर सिविल कोडह्न का प्रयोग करने की आलोचना की। इलियास ने प्रधानमंत्री की मंशा पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि वह केवल शरिया कानून को ही निशाना बना रहे हैं।

जहरीली होती हवा से गहराता सांसों का संकट

ललित गर्ग

अभी से दिल्ली की आबोहवा बच्चों और बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से खतरनाक होने लगती है। दिल्ली की हवा में उच्च सांद्रता है, जो बच्चों को सांस की बीमारी और हृदय रोगों की तरफ धकेल रही है। शोध एवं अध्ययन में यह भी पाया गया है कि यहां रहने वाले 75.4 फीसदी बच्चों को घुटन महसूस होती है। 24.2 फीसदी बच्चों की आंखों में खुजली की शिकायत होती है। सर्दियों में बच्चों को खांसी की शिकायत भी होती है। बुजुर्गों का स्वास्थ्य तो बहुत ज्यादा प्रभावित होता ही है।

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में अभी दीपावली आने में कुछ दिन है, उससे पहले ही जहरीली हवा एवं वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनने लगा हैं और जहरीली होती हवा सांसों पर भारी पड़ने लगी है। एयर क्वालिटी इंडेक्स यानी एक्यूआइ बहुत खराब की श्रेणी में पहुंच चुका है। दिल्ली में औसत एक्यूआइ 293 पहुंच गया है। दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में यह अभी से 300 पार जा चुका है। अतीत का अनुभव बताता है कि आने वाले दिनों में यह और बढ़ेगा। बढ़ते वायु प्रदूषण से जनता की सांसों पर गहराते संकट के समाधान के लिए सरकार के पास विभिन्न चरणों में लगाए जाने वाले प्रतिबंधों के अलावा कोई योजना नजर नहीं आती। दिल्ली सरकार जो भी तर्क दें, पर हकीकत यही है कि लोगों का दम घुटेगा, बच्चों एवं बुजुर्गों के सामने बड़ा संकट खड़ा होगा, अगर दिल्ली सरकार सचमुच इससे पार पाने को लेकर गंभीर नहीं हैं, वह गंभीर होती तो पहले से कोई ठोस योजना बनाती। दिल्ली के वायु प्रदूषण एवं हवा के जहरीले होने में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा जलाई जाने वाली पराली का बड़ा योगदान बताया जाता है। उससे निपटने के प्रयासों के दावे भी राज्य सरकारों द्वारा किए जाते हैं पर वांछित परिणाम नजर नहीं आते। वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए बना आयोग भी जिम्मेदारी के निर्वाह में नाकाम नजर आता है।

प्रश्न है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रही दिल्ली को कोई समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती। सरकारें एवं राजनेता एक दूसरे पर जिम्मेदारी ठहराने की बजाय समाधान के लिये तत्पर क्यों नहीं होते? वैसे प्रदूषण कम करने और दिल्ली सहित देश के अन्य महानगरों-नगरों को रहने लायक बनाने की जिम्मेदारी केवल सरकारों की नहीं है, बल्कि हम सबकी है। हालांकि लोगों को सिर्फ एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी है, एंटीडस्ट अभियान भी निरन्तर चलाया जाना चाहिए। लोगों को खुद भी पूरी सतर्कता बरतनी होगी। लोगों को खुली जगह में कूड़ा नहीं फैंकना चाहिए और न ही उसे जलाया जाए। वाहनों का प्रदूषण लेवल चैक करना चाहिए। कोशिश करें कि हम निजी वाहनों का इस्तेमाल कम से कम करें और सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें। प्रदूषण से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण-क्षण अग्नि-परीक्षा देता है। पर हां!

अग्नि परीक्षा से कोई अपने शरीर पर फूस लपेट कर नहीं निकल सकता।

सुप्रीम कोर्ट राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण को लेकर कठोर टिप्पणियां करने के साथ सरकार को कठोर एवं प्रभावी कदम उठाने के लिये जागरूक करती रही है। हाल ही सुप्रीम कोर्ट ने पराली जलाने से रोकने में पंजाब सरकार की नाकामी पर सख्त टिप्पणी भी की। पंजाब और दिल्ली, दोनों ही राज्यों में आम आदमी पार्टी की सरकारें हैं, इसलिए यह आप और भाजपा के बीच राजनीतिक आरोप प्रत्यारोप का मुद्दा भी बनता रहता है। ध्यान रहे कि पंजाब और दिल्ली के बीच स्थित राज्य हरियाणा में भाजपा की सरकार है। उत्तर प्रदेश में भी भाजपा सरकार है, जिसके पश्चिमी क्षेत्र के किसानों पर पराली जलाने का आरोप लगता रहता है। आम आदमी की सेहत ही नहीं, जीवन से भी जुड़े इस जानलेवा मुद्दे पर राजनीति नहीं, बल्कि ठोस समाधान की राह निकलनी चाहिए। हमारे राजनीति दल संवेदनहीन नहीं बल्कि संवेदनशील बने। दीपावली पर आतिशबाजी न हो, इसके लिये व्यापक प्रयत्न किये जाये। क्योंकि पटाखे जलाने से न केवल बुजुर्गों बल्कि बच्चों के जीवन पर खतरनाक प्रभाव पड़ने और अनेक रोगों के पनपने की संभावनाएं हैं। आम जनता की जिंदगी से खिलवाड़ करने वाली पटाखे जलाने की भौतिकतावादी मानसिकता को विराम देना जरूरी है। प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की वैश्विक अभिधारणा को मूर्त रूप देने के लिये इको फ्रेंडली दीपावली मनाने की दिशा में पिछले कुछ सालों में कई पायदान हम ऊपर चढ़े हैं, एक सकारात्मक वातावरण बना। लेकिन पटाखों से ज्यादा खतरनाक हैं पराली का प्रदूषण। पराली आज एक राजनीतिक प्रदूषण बन चुका है।

तमाम बंदीशों एवं चेतावनियों के दीपावली की रात आतिशबाजी जमकर होती है, इसके कारण पिछले साल अगले दिन वायु प्रदूषण 999 के बेहद खतरनाक स्तर पर पहुंच गया था। यह आम आदमी की सेहत, खासकर बुजुर्गों और बच्चों के लिए कितना खतरनाक साबित हो सकता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 401 से 500 तक के एक्यूआइ को ही ह्यगंभीरह्ल एवं खतरनाक माना जाता है। वायु प्रदूषण से जुड़े आंकडे हमें बार-बार सतर्क एवं सावधान करने के साथ डराते भी है। यह डराने वाला ही आंकड़ा है कि भारत में हर साल वायु प्रदूषण से 20 लाख मौतें होती हैं। देश में होने वाली मौतों का यह पांचवां बड़ा कारण है। दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में पराली और पटाखों की ही तरह वाहनों एवं भवन-निर्माण से जुड़ा प्रदूषण भी खतरनाक होता है। भू-विज्ञान मंत्रालय के एक रिसर्च के अनुसार वायु निर्माण में 41 प्रतिशत हिस्सेदारी वाहनों की रहती है। भवन निर्माण आदि से उड़नेवाली धूल 21.5 प्रतिशत के दूसरे स्थान पर है। दिल्ली परिवहन विभाग के आंकड़े के मुताबिक पिछले 30 साल में वाहन और उनसे होने वाला प्रदूषण तीन गुणा बढ़ गया है। फिर भी सार्वजनिक यातायात व्यवस्था को बेहतर और विश्वसनीय बनाने की दिशा में कुछ खास नहीं किया गया। इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। क्या हमें किसी चाणक्य के पैदा होने तक इन्तजार करना पड़ेगा, जो जड़ों में मठ्ठा डाल सके।...नहीं, अब तो प्रत्येक राजनीतिक मन को चाणक्य बनना होगा। तभी विकराल होती वायु प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिलेगी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली के प्रदूषण में पराली के धुएं की हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत के आसपास है। अभी से हर दिन पराली जलाने की घटनाएं दर्ज होने लगी है। क्या इसे रोकना वाकई इतना कठिन है? आखिर दिल्ली, पंजाब के साथ केंद्र सरकार इसके लिए क्या कर रही है कि किसान पराली न जलाएं? सच यह है कि इसके लिए कोई प्रभावी कोशिश हो ही नहीं रही है। किसानों से बात करने का साहस कोई भी सरकार नहीं दिखा रही है। ऐसा माहौल बना दिया गया है, मानो खेती के नाम पर कुछ भी करने की छूट है। इसका कारण राजनीतिक ही है। कोई किसान है, इसका यह अर्थ नहीं कि उसे वातावरण को दमघोंटू बनाने एवं लोगों के जीवन को संकट में डालने का अधिकार है।

अभी से दिल्ली की आबोहवा बच्चों और बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से खतरनाक होने लगती है। दिल्ली की हवा में उच्च सांद्रता है, जो बच्चों को सांस की बीमारी और हृदय रोगों की तरफ धकेल रही है। शोध एवं अध्ययन में यह भी पाया गया है कि यहां रहने वाले 75.4 फीसदी बच्चों को घुटन महसूस होती है। 24.2 फीसदी बच्चों की आंखों में खुजली की शिकायत होती है। सर्दियों में बच्चों को खांसी की शिकायत भी होती है। बुजुर्गों का स्वास्थ्य तो बहुत ज्यादा प्रभावित होता ही है। सर्दियों के मौसम में हवा में घातक धातुएं होती हैं, जिससे सांस लेने में दिक्कत आती है। हवा में कैडमियम और आर्सेनिक की मात्रा में वृद्धि से कैंसर, गुर्दे की समस्या और उच्च रक्तचाप, मधुमेह और हृदय रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसमें पराली के प्रदूषण से घातकता कई गुणा बढ़ जाती है। पटाखों का प्रदूषण उससे भी घातक है। 300 से अधिक एक्यूआइ वाले शहरों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले सांस के रूप में जहर खींचने को क्यों विवश है, इसके कारणों पर इतनी बार चर्चा हो चुकी है कि उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं।

संपादकीय

घाटी में फिर खून-खराबा

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में आतंकवादियों के हमले में 7 लोगों के मारे जाने की घटना वाकई चिंता का सबब है। राज्य में नई सरकार के गठन के चार दिन के भीतर आर्तकियों ने दूसरी बार दुस्साहस किया। इस घटना में जहां 5 श्रमिक बाहरी राज्यों के हैं वहीं इससे पहले की गई कायराना हरकत में भी एक बाहरी श्रमिक की हत्या कर दी गई थी। आतंकवादियों ने बड़ी परियोजना के क्षेत्र में हाल के वर्षों में इस तरह का हमला किया है। एक और तथ्य विचारणीय है कि जिस इलाके में यह हमला किया गया है, वह आमतौर पर आतंकी हमलों से अछूता है। यानी अब आतंकी गुट उन इलाकों और लोगों को टारगेट कर रहे हैं जो ज्यादा चर्चित नहीं हैं। हालांकि बाहर के राज्यों के लोगों को मारने (टारगेट किलिंग) का सिलसिला काफी दिनों से चल रहा है, मगर साल भर से यह थमा हुआ था। दरअसल, राज्य में लोकतंत्र की मजबूती से पाकिस्तान और दुश्मन देश बौखला गए हैं, उनमें इस बात को लेकर गहरी निराशा है कि राज्य में बिना किसी हंगामे और हिंसा के विधानसभा और इससे पहले लोक सभा के चुनाव संपन्न हो गए। पाकिस्तान यह कभी नहीं चाहेगा कि कश्मीर में अमन बहाल हो। सीमा पार से आंतक फैलाना और राज्य की अर्थव्यवस्था को चोट पहुंचाने की उसकी करतूतों को पूरी दुनिया जान और समझ गई है। इसके बावजूद वह बाज नहीं आ रहा है। वैसे देखा जाए तो केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद से आतंकवादी गुटों पर सख्ती हुई है। मोदी सरकार तो यहां तक दावा करती है कि कश्मीर में आतंकवाद खत्म होने के कगार पर है। हालांकि विपक्षी दलों का आरोप है कि राज्य में मोदी सरकार के बाद आतंकी घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ी है, बहुत सारे निरपराध लोग मारे गए हैं और अनेक सुरक्षाकर्मी शहीद हुए हैं। दरअसल, राज्य के भूगोल और इतिहास पर दृष्टिपात करें तो तमाम प्रयासों और सख्ती के बावजूद यहां से आतंकवाद को समूल नष्ट करना बेहद दुष्कर है। इसकी वजह है स्थानीय लोगों का दहशतगर्दों को खुला समर्थन। इस बात को खुद दो वर्ष पहले सरकार ने भी माना था कि राज्य का दर्जा खत्म करने और कर्फ्यू के दौरान स्थानीय युवाओं की आतंकी समूहों में भर्ती बढ़ी है। हकीकत यह है कि जब तक युवाओं को रोजगार नहीं मिलेगा वो गलत रास्ते पर जाएंगे ही। इन सब प्रतिकूल हालात के बीच अच्छी बात यह हुई कि जनता ने आतंकियों, उनके परिवार के लोगों को चुनाव में जबरदस्त चोट पहुंचाई है। फिर भी अभी बहुत कुछ करना शेष है।

दिल्ली ब्लास्टः कहीं बड़ी साजिश का ट्रायल तो नहीं?

करवा चौथ के दिन और दीपावली त्योहार के समय दिल्ली में ब्लास्ट होने की घटना को सामान्य तो कतई नहीं कहा जाएगा। हो सकता है, इसके पीछे कोई बड़ी साजिश का ट्रायल किया गया हो?

शायद दहशतगर्द या आतंकी संगठन ये देखना चाहते हों कि बम के ट्रायल पर दिल्ली की कानून-व्यवस्था कितनी चाक-चौबंद है और जांच तंत्र क्या रिएक्ट करेगा? यह भी हो सकता है कि वो हमारी जांच एजेंसियों की जांच को भी परखना चाहते हों? ऐसी आंशका इसलिए जग रही है, क्योंकि दिल्ली पुलिस ने भी किसी बड़ी साजिश से फिलहाल इनकार नहीं किया है। दिल्ली में पहले भी कई मर्तबा बम ब्लास्ट और आतंकी घटनाएं हुई हैं। पर, उनमें और इस घटना में कुछ फर्क है। 20 अक्टूबर को सुबह फटे बम के बाद दूर-दूर तक धुआं ही धुआं फैल गया। लोगों को सांस लेने में दिक्कत हुई। तेज बदबू इलाके में फैल गई। आसपास के घरों की नींव भूकंप की भांति हिल गई।

गौरतलब है कि गृह मंत्रालय की खुफिया एजेंसी आईबी के पास इस तरह के इनपुट थे कि त्योहारों के वक्त दिल्ली-एनसीआर में कहीं न कहीं कोई आतंकी घटना घटने की आशंका है। कमोबेश वैसा होता भी दिखाई दिया। खुफिया इनपुट के बावजूद अगर ऐसी घटना घटती है तो कानून तंत्र, खुफिया विभाग, एंटी टेरर विंग पर सवालिया निशान उठना लाजिमी हो जाता है। अगर वह गहरी नींद में न सोते, तो ये हादसा शायद नहीं होता। पर, अकसर होता यही है जिम्मेदार एजेंसियां इस तरह की नाकामी कभी अपने पर नहीं लेतीं। दिल्ली में कुछ महीनों बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। बॉर्डर पर किसानों का पहरा है। भीड़भाड़ तो सदैव दिल्ली में रहती ही है। इसके अलावा पूरी केंद्र सरकार, ब्यूरोक्रेट लॉबी सभी यहीं बसती है। इसलिए

देश की राजधानी दिल्ली में खुफिया एजेंसियों और कानून तंत्र को चौबीसों घंटे चौकन्ना रहना चाहिए। पर, अफसोस ऐसा होता नहीं? दहशतगर्द उनकी नाक के नीचे घटनाओं को अंजाम देकर चुपके से निकल जाते हैं, उसके बाद जांच के नाम पर लाठी पीटी जाती है। फिलहाल, ऐसी बातों पर गौर न कर, मौजूदा घटना की जड़ तक पहुंचने की आवश्यकता है।

गनीमत ये समझा जाए कि घटना का दिन रविवार था। जिस सीआरपीएफ स्कूल की बाउंड्री के पास ब्लास्ट हुआ वो बंद था। साथ ही वक्त सुबह का था और स्थानीय लोगों की आवाजाही भी न के बराबर थी। खुदा न खास्ता अगर ये घटना वर्किंग डे में हुई होती, तो जानमाल के नुकसान का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। एकाएक दिमाग में सभी के यही आ रहा है कि कहीं कानून-व्यवस्था की तैयारियों का जायजा तो नहीं लेना चाहते थे बम ब्लास्ट करके आतंकी? ऐसे अंदेशा पुलिस को भी है। पर जो भी हो, रविवार तड़के स्कूल के बाहर फटे इस बम की तेज आवाज ने पूरी दिल्ली में दहशत जरूर फैला दी है। घटना के वक्त आधी दिल्ली सोई हुई थी। पुलिस ने एहतियातन पूरी दिल्ली को अलर्ट पर रखा है और सर्तकता बढ़ा दी है।

यह घटना सुबह करीब 7 बजे के आसपास हुई। एनएसजी, एंटी टेरर विभाग, दिल्ली पुलिस व अन्य जांच एजेंसियां पड़ताल में एक्टिव हैं। सफेद रंग की कुछ पुड़िया और ज्वलंत पदार्थ सामग्री बरामद की गई है। शुरूआती जांच में बम देशी बताया गया है। लेकिन उसकी क्षमता से एजेंसियों का दिमाग चकराया हुआ है। अमूमन देसी बमों में इतनी ताकत और तेज आवाज नहीं होती। इसलिए हादसा दूसरी ओर भी इशारा करता है। घटना रोहिणी जिले के प्रशांत विहार स्थित सीआरपीएफ स्कूल के बाहर घटी। स्कूल में ज्यादातर छात्र डिफेंस से जुड़े अधिकारी-कर्मचारियों के पढ़ते हैं। हादसे के संदेश क्या हैं? ये तो जांच की थ्योरी से ही पता चलेगा? लेकिन दिल्ली वासियों में दहशत अच्छी-खासी पैदा हो गई है। खासकर उस स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों और अभिभावकों में। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि जब बम फटा तो उसकी आवाज 200-250 मीटर तक सुनाई दी। चारों ओर धुआं ही धुआं दिखा। धमाके से गंदी बदबू भी फैली, जो जांच एजेंसियों के लिए पहेली बनी हुई है। धमाके से आसपास खड़ी गाड़ियों के शीशे चटक गए और दुकानों को भी नुकसान हुआ।

अंत में जो नहीं होना चाहिए, वह होना आरंभ हुआ। ब्लास्ट की घटना पर राजनीति भी शुरू हो गई है। प्रदेश की मुख्यमंत्री आतिशी ने केंद्र सरकार पर हमला करते हुए दिल्ली की कानून-व्यवस्था को रामभरोसे बता दिया। उन्होंने कहा कि जब आईबी के पास इनपुट पहले से थे कि दिवाली से पहले दिल्ली में कोई हादसा हो सकता है, तो फिर केंद्र सरकार और उनकी पुलिस क्यों सतर्क नहीं हुई? लेकिन ऐसे मौकों पर राजनीति नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। घटनाएं कहीं भी हो सकती हैं। रोकने में कमियां कहां रह गईं और बेहतर क्या किया जाना चाहिए? उसपर मंथन करना चाहिए। खुफिया विभाग और स्थानीय रक्षा तंत्र की नाकामी तो है ही? जो सामने भी दिख रही है। फिलहाल दिल्ली के सभी जिले अलर्ट पर हैं। शुरूआती जांच में दिल्ली पुलिस ने किसी साजिश से इनकार नहीं करते हुए एक्सप्लोसिव एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की है। मामले की जांच एनआईए और दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल करेगी।

डॉ. रमेश ठाकुर (लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

चिंतन-मनन

अहंकार त्यागने वाले ही महापुरूष होते हैं

बहुत से लोग दिन-रात प्रयास करते हैं कि उन्हें किसी तरह उच्च पद मिल जाए। खूब सारा पैसा हो और आराम की जिन्दगी जियें। जब ये सब प्राप्त हो जाता है तो इसे ईश्वर की कृपा मानने की बजाय अपनी काबिलियत और धन पर इतराने लगते हैं। जबकि संसार में किसी चीज की कमी नहीं है। अगर आप धन का अभिमान करते हैं तो देखिए आपसे धनवान भी कोई अन्य है। विद्या का अभिमान है तो ढूंढ़कर देखिए आपसे भी विद्वान मिल जाएगा। इसलिए किसी चीज का अहंकार नहीं करना चाहिए। जो लोग अहंकार त्याग देते हैं वही महापुरूष कहलाते हैं। महाभारत में कथा है कि दुर्योधन के उत्तम भोजन के आग्रह को ठुकरा कर भगवान श्री कृष्ण ने महात्मा विदुर के घर साग खाया। भगवान श्री कृष्ण के पास भला किस चीज की कमी थी। अगर उनमें अहंकार होता तो विदुर के घर साग खाने की बजाय दुर्योधन के महल में उत्तम भोजन ग्रहण करते लेकिन श्री कृष्ण ने ऐसा नहीं किया।

भगवान श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खाये जबकि लक्ष्मण जी ने जूठे बेर फेंक दिये। यहीं पर राम भगवान की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उनमें भक्त के प्रति अगाध प्रेम है, वह भक्त की भावना को समझते हैं और उसी से तृप्त हो जाते हैं। अहंकार उन्हें नहीं छूता है, वह ऊंच-नीच, जूठा भोजन एवं छप्पन भोग में कोई भेद नहीं करते। शास्त्रों में भगवान का यही स्वभाव और गुण बताया गया है। महात्मा बुद्ध से संबंधित एक कथा है कि एक बार महात्मा बुद्ध किसी गांव में प्रवचन दे रहे थे। एक कृषक को उपदेश सुनने की बड़ी इच्छा हुई लेकिन उसी दिन उसका बैल खो गया था। इसलिए वह महात्मा बुद्ध के चरण छू कर सभा से वापस बैल ढूंढने चला गया। शाम होने पर कृषक बैल ढूंढ़कर वापस लौटा तो देखा कि बुद्ध अब भी सभा को संबोधित कर रहे हैं। भूखा प्यासा किसान फिर से बुद्ध के चरण छूकर प्रवचन सुनने बैठ गया। बुद्ध ने किसान की हालत देखी तो उसे भोजन कराया, फिर उपदेश देना शुरू किया।

विस : क्षेत्रीय दलों के लिए सीख-संदेश

प्रो. नवल किशोर

हरियाणा एवं जम्मू-कश्मीर के चुनावी नतीजे घोषित हो चुके हैं। हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान कॉंग्रेस के पक्ष में चर्चित लहर और भाजपा के खिलाफ सत्ता विरोधी जनभावना के बावजूद भाजपा तीसरी दफा जनादेश हासिल करने में सफल रही है।

बेहद दिलचस्प बात है कि लोक सभा चुनाव में भाजपा अपनी गिरी साख को हरियाणा जनादेश से राहत की सांस लेने की कोशिश कर रही है वहीं कांग्रेस के बढ़े हौसलों को अप्रत्याशित आहत मिला है। हालांकि दोनों के वोट फीसद में मामूली अंतर है। वहीं जम्मू-कश्मीर की जनता ने भाजपा की तमाम चुनावी रणनीति को खारिज करते हुए नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन को 48 सीटों के साथ स्पष्ट बहुमत दिया है। दोनों राज्यों के चुनाव पर नजर रखने वाले धुरंधरों को चुनावी जनादेश ने चौंका दिया है। एक चीज और हुई है। दोनों राज्यों में क्षेत्रीय दलों का लगभग सफाया हो गया है। हरियाणा में आईएनएलडी और जेजेपी का प्रदर्शन दयनीय रहा। दोनों दल महज पांच फीसद मत व तीन सीट पर सिमट गए हैं। ज्ञात हो कि दुष्यंत चौटाला ने 2018 में आईएनएलडी से अलग होकर जेजेपी का गठन किया था। मात्र एक साल बाद विधानसभा चुनाव 2019 में जेजेपी का प्रदर्शन अभूतपूर्व था जब उसे 10 सीट पर जीत मिली थी। उसके समर्थन से ही भाजपा वहां पर सरकार बना पाई थी। खंडित जनादेश आने बाद सरकार गठन के दौरान जेजेपी ने एनडीए गठबंधन में शामिल होने का निर्णय लिया था। जनविमर्श में इस निर्णय को जनता के साथ विश्वासघात की नजर से देखा गया। जेजेपी के उभार में किसान मतदाताओं का अपार समर्थन मिला थाङ्क लेकिन किसान आंदोलन के दौरान वे भाजपा के साथ रहे। यह निर्णय महंगा साबित हुआ। लोक सभा चुनाव से पूर्व ही भाजपा ने भी इनसे नाता तोड़ लिया था। राष्ट्रीय दल के बरक्स क्षेत्रीय दलों के प्रासंगिक होने के तत्व-बिंदु कुछ अलग हैं। क्षेत्रीय दलों को इस पर विचार करना अतिआवश्यक है। ज्ञात हो कि पीडीपी ओर जेजेपी दोनों ही दल वैचारिक भिन्नता के बावजूद सियासी फायदे के लिए भाजपा के साथ सरकार में रह चुके हैं। क्या इन दलों ने अपने वैचारिकी से समझौता किया। क्या अपने सियासी निर्णय से आधार वोट समूह को संतुष्ट कर पाए? क्या क्षेत्रीय दलों के लिए इस जनादेश में कोई सीख संदेश छिपी है? ऐसे कुछ बुनियादी सवालों के नजरिए से इस जनादेश को देखना दिलचस्प होगा। जम्मू कश्मीर में पीडीपी का 28 सीट से घटकर तीन सीट पर सिमटना और हरियाणा में दुष्यंत चौटाला समेत लगभग सभी उम्मीदवारों का जमानत जब्त होना बेहद चौंकाने वाली घटना है। किसी भी दल और नेतृत्व के जनपसंद होने में उसकी वैचारिकी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। जेजेपी के उदय में किसानों का अपार समर्थन मिला, लेकिन किसान आंदोलन के साथ नहीं खड़ा होना घातक साबित हुआ। सभी क्षेत्रीय दलों के लिए यह विचारणीय पाठ है। यूपी में सपा/बसपा, बिहार में राजद/जदयू/लोजपा और महाराष्ट्र में शिवसेना/रांकपा जैसी पार्टियां अपनी वैचारिकी और नेतृत्व की बदौलत ही बरकरार है। बिहार में विगत दो दशक से सत्ता के बाहर रहने के बावजूद राजद अभी भी सबसे बड़े दल के रूप में जनता की पसंद बनी हुई है। वैचारिक तौर पर सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और समावेशी विकास राजद की पूंजी रही है। ओबीसी के लिए मंडल आयोग की सिफारिश लागू कराने में लालू प्रसाद यादव की भूमिका निभाने से लेकर आडवाणी के रथयात्रा को सांप्रदायिक बताकर उन्हें समस्तीपुर में गिरफ्तार कर क्रमशः सामाजिक न्याय और धर्मनिपेक्षता के प्रति वैचारिक स्पष्टता ही राजद को एक समय ऐतिहासिक जनस्वीकृति प्रदान किया था। उसी प्रकार दूसरी पीढ़ी के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव के खिलाफ भी नौवीं फेल और परिवारवाद का नैरेटिव ध्वस्त होता नजर आया। उनके कार्यों का जिक्र 'सत्रह महीना बनाम सत्रह साल' लोकविमर्श में आ चुका है। यह एनडीए के लिए आज भी यक्ष प्रश्न बना हुआ है। केंद्र में तीसरी बार शासन में रहने के बावजूद भाजपा बिहार की राजनीति में जद (यू) के पीछे चलने को बाध्य है।

पिछले तीन दशक से कांग्रेस अपने आधार वोट को वापस नहीं ला पा रही है। कहीं-न-कहीं वैचारिक स्पष्टता राज्य की राजनीति में मायने रखती है। यही कारण है कई क्षेत्रीय पार्टियां अपना जलवा कायम

रखने में सफल रही है। राज्यों की मनोदशा को जमीनी स्तर पर समझने एवं उसकी समस्याओं का समुचित निष्पादन करने में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्रबल होती है। क्षेत्रीय पार्टियां बुनियादी स्तर पर 'धरती पुत्र' की भावना से ओतप्रोत हुआ करती हैं। उनका दर्शन है कि जब प्रत्येक राज्य मजबूत होगा तो स्वाभाविक रूप से भारतवर्ष को मजबूती मिलेगी। ऐसे में दीवार पर लिखी इबादत स्पष्ट कह रही है कि क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियां अपने मूल संरचना एवं वैचारिकी से समझौता न करें। यह उनके अपनी पार्टी एवं राज्य दोनों के ही हित में है। अंततः भारतवर्ष की विविधता के मद्देनजर क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों का भविष्य उज्जवल प्रतीत होता है।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादकः श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार` मैनेजिंग एडिटरः डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादकः डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादकः तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

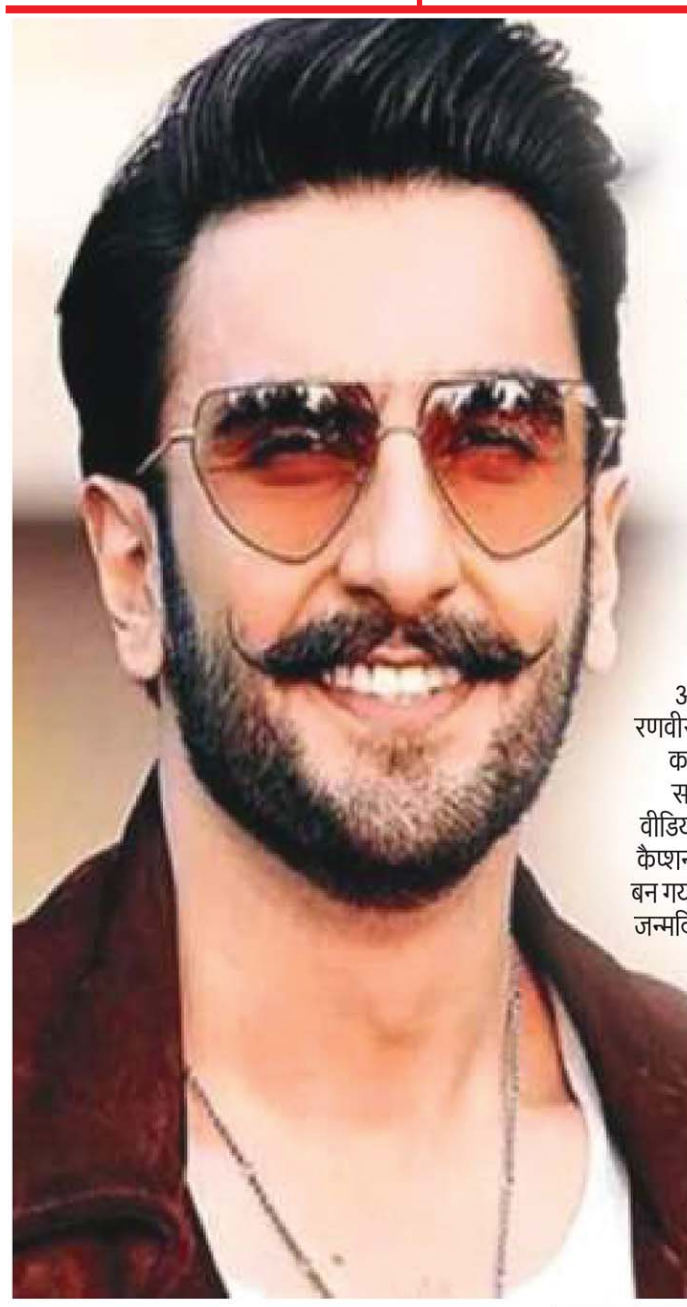

रणवीर सिंह ने भी पूछा सवाल ये ओरी करता क्या है?

अभिनेता रणवीर सिंह और ओरहान अवतरमणी (ओरी) का एक वीडियो रणवीर सिंह के इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया गया है। वीडियो में रणवीर सिंह मजाकिया अंदाज में एक सवाल पूछते हैं- ये ओरी करता क्या है? वीडियो की शुरुआत में रणवीर ने ओरी के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, अक्सर हमारे देश में लोग दो सवाल पूछते हैं। पहला, 'कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा?' और दूसरा, 'ये ओरी करता क्या है?'卐 यह सवाल सुनकर ओरी ने हंसते हुए अपने सनग्लास पहनने की कोशिश की, लेकिन रणवीर ने मजाक में उन्हें रोकते हुए कहा, कोई मौका नहीं। वीडियो के बैकग्राउंड में एक महिला भी कहती है, आप चश्मे के साथ सनग्लास नहीं पहन सकते। ओरी ने इस मजेदार वीडियो को पोस्ट करते हुए कैप्शन में लिखा, 'ये वो सवाल हैं जो हमें परेशान करते हैं।' वीडियो ने तुरंत सोशल मीडिया पर धमाल मचा दिया और फैंस के बीच चर्चा का विषय बन गया। इससे पहले, ओरी कई बॉलीवुड सितारों जैसे अनन्या पांडे, जान्हवी कपूर, खुशी कपूर और सुहाना खान के साथ राधिका मर्चेंट की भव्य जन्मदिन पार्टी में शामिल हुए थे। ओरी ने इस पार्टी की कई झलकियां भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर की थीं, जिससे फैंस ने भी पार्टी के शानदार पलों का आनंद उठाया। वहीं, रणवीर सिंह हाल ही में अपने न्यू डैड बनने की खुशियों में व्यस्त हैं। उनकी पत्नी और अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने पिछले महीने एक बेटी को जन्म दिया था। इस जोड़े ने इंस्टाग्राम पर इस खुशखबरी की घोषणा की थी, जिससे उनके फैंस बेहद उत्साहित हुए। रणवीर और दीपिका दोनों जल्द ही रोहित शेट्टी की बहुप्रतीक्षित फिल्म सिंघम अगेन में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में अजय देवगन, करीना कपूर, अक्षय कुमार, टाइगर श्रॉफ, अर्जुन कपूर और जैकी श्रॉफ जैसे बड़े सितारे भी शामिल हैं। सिंघम अगेन 1 नवंबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। बता दें कि बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह और ओरहान अवतरमणी (ओरी) का हाल ही में एक मजेदार वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

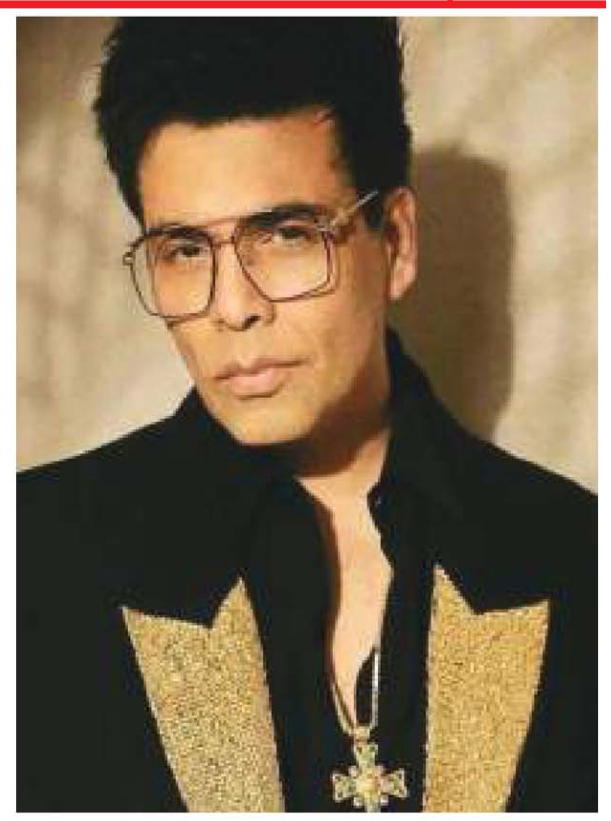

करण जौहर ने की अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा

प्रसिद्ध फिल्म निर्माता करण जौहर ने अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा कर दी है। बॉलीवुड के सुपरस्टार अक्षय कुमार इस फिल्म में बैरिस्टर नायर की भूमिका निभाएंगे, जबकि आर. माधवन और अनन्या पांडे भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। धर्मा प्रोडक्शंस ने सोशल मीडिया पर फिल्म का पोस्टर साझा करते हुए बताया कि यह फिल्म 14 मार्च, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। पोस्टर पर लिखा है, 'एक अनकही कहानी, एक अनसुना सच।'卐 करण जौहर और अक्षय कुमार के फैंस इस फिल्म को लेकर काफी उत्साहित हैं, क्योंकि यह स्वतंत्रता पूर्व भारत की एक सच्ची घटना पर आधारित है। फिल्म का निर्देशन करण सिंह त्यागी करेंगे, जो इससे पहले कई चर्चित प्रोजेक्ट्स पर काम कर चुके हैं। यह फिल्म रघु पलट और पुष्पा पलट की किताब द केस दैट शूक द एम्पायर पर आधारित होगी, जो जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए अत्याचारों और इसे छिपाने की कोशिशों पर केंद्रित है। फिल्म में सी. शंकरन नायर के जीवन को दिखाया जाएगा, जिन्होंने पंजाब के तत्कालीन गवर्नर माइकल ओडायर के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया था। यह मुकदमा ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक साहसिक कदम था और स्वतंत्रता संग्राम में इसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। फिल्म को अक्षय कुमार की कंपनी केप ऑफ गुड फिल्म्स, करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस और लियो मीडिया कलेक्टिव द्वारा प्रोड्यूस किया जा रहा है। अक्षय कुमार इस फिल्म में एक शक्तिशाली और ऐतिहासिक किरदार निभाते नजर आएंगे, जिससे फैंस को उनसे बड़ी उम्मीदें हैं। अक्षय के पास इस समय कई बड़े प्रोजेक्ट्स हैं, जिनमें हाउसफुल 5 और वेलकम टू द जंगल शामिल हैं। दूसरी ओर, आर. माधवन भी इस फिल्म का हिस्सा होंगे और उनके फैंस उन्हें इस भूमिका में देखने के लिए उत्साहित हैं। अनन्या पांडे इस फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी, जो उनके करियर के लिए एक नई दिशा हो सकती है। फिल्म के साथ-साथ इसका विषय और ऐतिहासिक महत्व इसे एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट बनाते हैं, जिसका दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

माधुरी ने की पाणी की प्रशंसा तो प्रियंका ने जताया आभार

अंतरराष्ट्रीय अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा जोनस की मराठी फिल्म पाणी को लेकर माधुरी दीक्षित ने फिल्म की सराहना की। माधुरी द्वारा सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए की गई प्रशंसा के बाद प्रियंका ने उनका आभार व्यक्त किया। माधुरी ने अपने इंस्टाग्राम पर फिल्म के ट्रेलर को साझा करते हुए इसके विषय और कलाकारों की प्रशंसा की, साथ ही दर्शकों से सिनेमाघरों में जाकर इसे देखने का आग्रह किया। प्रियंका ने इस पोस्ट को रीपोस्ट करते हुए लिखा, धन्यवाद माधुरी दीक्षित नेने। माधुरी दीक्षित ने फिल्म की रचनात्मकता और कड़ी मेहनत की सराहना करते हुए कहा, फिल्म की पूरी टीम को बधाई। यह फिल्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे पर आधारित है, और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने अपनी पोस्ट में प्रियंका चोपड़ा और फिल्म के निर्देशक आदिनाथ एम. कोठारे को भी टैग किया। फिल्म पाणी का निर्माण प्रियंका चोपड़ा और उनकी मां मधु चोपड़ा के प्रोडक्शन हाउस पर्पल पेबल पिक्चर्स के तहत किया गया है। यह फिल्म पानी की कमी के गंभीर वैश्विक मुद्दे को उठाती है और इसमें आदिनाथ, रुचा वैद्य, सुबोध भावे, राजित कपूर, किशोर कदम, नितिन दीक्षित और सचिन गोस्वामी जैसे मंझे हुए कलाकार शामिल हैं। पाणी को 2019 में 66वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में पर्यावरण संरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म के खिताब से नवाजा गया था, जो इसके विषय की प्रासंगिकता और प्रस्तुति की उत्कृष्टता को दर्शाता है। प्रियंका ने फिल्म की स्क्रीनिंग के दौरान अपने विचार साझा करते हुए कहा, पाणी मेरे लिए एक जुनूनी परियोजना है। यह फिल्म न केवल एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे पर आधारित है, बल्कि यह एक व्यक्ति की प्रेरणादायक यात्रा को भी दर्शाती है, जो अपने समुदाय के लिए समाधान खोजने का प्रयास करता है। बता दें कि फिल्म की रिलीज से पहले मुंबई में इसकी विशेष स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें प्रियंका चोपड़ा अपनी मां मधु चोपड़ा और भाई सिद्धार्थ चोपड़ा के साथ शामिल हुईं। इस अवसर पर फिल्म निर्माता सूरज बड़जात्या, महेश मांजरेकर और फिल्म की पूरी कास्ट और क्रू भी उपस्थित थे।

मजदूरों के साथ जमीन पर सोते नजर आए सुनील ग्रोवर

कॉमेडियन सुनील ग्रोवर की फोटो देखकर लोगों ने फोटोग्राफर साथ रखने की उनकी जरूरत पर तंज कसा, जो कॉमेडियन की फोटो तब भी खींच रहा है, जब वे फर्श पर सो रहे थे। कॉमेडियन इंस्टाग्राम रील में मां गंगा का आशीर्वाद लेते हुए नजर आए। उन्होंने सफेद टीशर्ट और नीली जींस पहनी हुई थी। वे एक अनजान शख्स के बगल में नींद लेते हुए दिखाई दे रहे हैं। वीडियो देखकर फोटोग्राफर का पता नहीं चलता।

सुनील ग्रोवर ने कैप्शन में लिखा, 'और क्या चाहिए, बताओ।' सुनील के वीडियो पर लोग जमकर कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने कहा कि कॉमेडियन जमीन से जुड़े होने का दिखावा कर रहे हैं। वह लिखता है, 'अमीर लोगों को डाउन-टू-अर्थ दिखने के लिए कैमरामैन भी साथ ले जाना होता है।' दूसरा व्यक्ति सहमति जताते हुए कहता है, 'गुड एक्टर, चलो वीडियो बन गया। अब जाकर अपने 5 स्टार होटल के कमरे में जाकर सो जाओ। सुनील ग्रोवर जब भी स्क्रीन पर नजर आए, दर्शकों को खूब हंसाया। वे अब 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' से लोगों को हंसाते-गुदगुदाते नजर आ रहे हैं। फिलहाल, वे काम से दूर घूमने-फिरने का आनंद उठा रहे हैं। उन्होंने ताजा इंस्टाग्राम पोस्ट से बताया कि वे सरल और तनाव से दूर पहाड़ों में फुरसत के पल गुजार रहे हैं, लेकिन उन्होंने जैसा सोचा होगा, लोगों ने वीडियो पर वैसा रिएक्शन नहीं दिया। वे कॉमेडियन को ट्रोल कर रहे हैं। सुनील से तीसरा यूजर पूछता है, 'इतना दिखावा करने की क्या जरूरत है। जमीन पर लेबर सो रहे हैं, क्योंकि वे थके हुए हैं और यहां तुम वीडियो बना रहे हो।' बता दें कि कॉमेडियन 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' का हिस्सा हैं, जिसका दूसरा सीजन नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रहा है। हर शनिवार रात 8 बजे इसका नया एपिसोड दिखाया जा रहा है।

मुरलीकांत की असाधारण कहानी पर आधारित है चंदू चैंपियन

बालीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन की फिल्म, चंदू चैंपियन युद्ध नायक मुरलीकांत पेटकर की असाधारण कहानी पर आधारित है। मुरलीकांत पेटकर भारत के पहले पैरालम्पिक गोल्ड मेडलिस्ट बने, की जीवन यात्रा को पर्दे पर दर्शाने का जिम्मा लिया है निर्देशक कबीर खान और अभिनेता कार्तिक आर्यन ने। इस फिल्म में कार्तिक आर्यन ने मुरलीकांत पेटकर का किरदार निभाया है, जो 1972 के पैरालंपिक खेलों में भारत के लिए पहला गोल्ड मेडल जीतने वाले खिलाड़ी थे। युद्ध में बुरी तरह घायल होने के बावजूद, पेटकर ने कभी हार नहीं मानी और खेल की दुनिया में सफलता हासिल की। कार्तिक आर्यन ने इस किरदार को जीवंत करने के लिए कड़ी मेहनत की, जिसमें उन्होंने बॉक्सिंग और गहरे पानी में तैराकी जैसे कौशल सीखे। उन्होंने अपने शरीर का फैट 39प्रतिशत से घटाकर 7प्रतिशत तक लाने के लिए डेढ़ साल तक ट्रेनिंग की। यह उनके करियर की सबसे चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं में से एक रही है। कार्तिक ने कहा, इस फिल्म ने मुझे असली सहनशीलता और साहस का मतलब सिखाया। यह मेरे लिए सीखने और डर पर काबू पाने का सफर था।फिल्म का निर्देशन कबीर खान ने किया है, जिन्हें बजरंगी भाईजान और 83 जैसी हिट फिल्मों के लिए जाना जाता है। कबीर ने कहा, मुरलीकांत पेटकर की कहानी इंसानी जज्बे की जीत पर रोशनी डालती है। कार्तिक ने किरदार को पूरी तरह से आत्मसात किया, और उनके समर्पण ने फिल्म में जान डाल दी। चंदू चैंपियन का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर 20 अक्टूबर, रविवार को रात 8 बजे सिर्फ ज़ी सिनेमा पर होगा। यह फिल्म न केवल एक अद्वितीय खिलाड़ी की उपलब्धियों को दर्शाती है, बल्कि यह धैर्य, साहस और उम्मीद की प्रेरणादायक कहानी भी है, जो दर्शकों को अपने सपनों का पीछा करने के लिए प्रेरित करेगी। फिल्म में विजय राज, बृजेन्द्र काला, श्रेयस तलपड़े और राजपाल यादव जैसे अनुभवी कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे, जो इस कहानी में और भी गहराई और इमोशंस जोड़ते हैं।

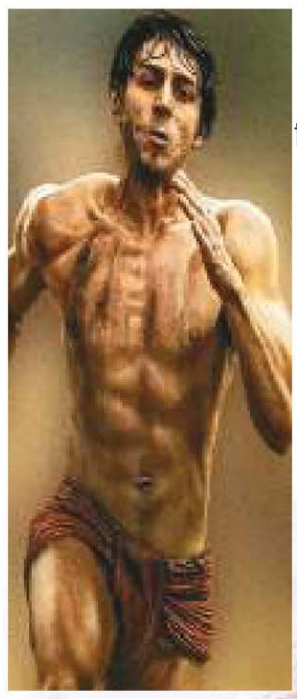

ऋचा चड्ढा ने पति के लिए खास अंदाज में किया प्यार का इजहार

अपने पति अभिनेता अली फज़ल के जन्मदिन पर बॉलीवुड अभिनेत्री ऋचा चड्ढा ने एक भावुक और प्यारी पोस्ट शेयर की। इस पोस्ट में उन्होंने अपने पति के लिए खास अंदाज में अपने प्यार का इजहार किया। ऋचा ने इंस्टाग्राम पर एक पुरानी वीडियो पोस्ट की, जिसमें अली के बचपन की झलकियाँ शामिल हैं। वीडियो में दो अलग-अलग क्लिप हैं पहले क्लिप में अली को धुंधले शॉट में दिखाया गया है, जबकि दूसरे क्लिप में उनके बचपन की बर्थडे पार्टी की एक पुरानी यादगार वीडियो है, जो 90 के दशक की सैर कराती है। ऋचा ने इस वीडियो के साथ एक भावुक कैप्शन दिया, मुझे पता है कि मैं कितनी भाग्यशाली हूं, अली फज़ल। हमने यह एक मिलियन बार किया है, है ना? मेरे बचपन के दोस्तों वत्सल और चिंटू को प्यार के लिए धन्यवाद, और कक्कड़ अंकल को पुराने पलों की याद दिलाने के लिए शुक्रिया। यह एक ऐसा दिन है जिसे मनाना और संजोया जाना चाहिए। जब हम किसी से प्यार करते हैं और उनसे शादी करते हैं, तो हमें इंटरनेट पर किसी को जवाब देने की जरूरत नहीं है।ऋचा और अली फज़ल ने कई सालों तक डेटिंग करने के बाद 4 अक्टूबर, 2022 को शादी की थी। इस साल जुलाई में इस जोड़े ने अपने पहले बच्चे का स्वागत किया। इस खुशी को उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए फैंस के साथ साझा किया, जिसमें नवजात के नन्हे पैर की तस्वीर दिखाई गई थी। फिलहाल, ऋचा अपनी अपकमिंग फिल्म अभी तो पार्टी शुरू हुई है की शूटिंग में व्यस्त हैं। वहीं, अली फज़ल मेट्रो इन दिनों और लाहौर 1947 सहित कई प्रोजेक्ट्स में काम कर रहे हैं। बता दें कि फुकरे और हीरामंडी जैसी फिल्मों में अपनी दमदार अदाकारी से अभिनेत्री ऋचा चड्ढा दर्शकों की जमकर सराहना बटोरने चुकी है।

तहलका मचा दिया कैटरीना की हॉट तस्वीरों ने

हाल ही में अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री कैटरीना कैफ ने कुछ शानदार तस्वीरें शेयर की हैं। कैटरीना ने फ्लोरल पैटर्न वाली खूबसूरत क्रीम रंग की ड्रेप्ड ड्रेस में अपनी ग्लैमरस तस्वीरें पोस्ट की हैं। कैटरीना ने इस पोस्ट के साथ कैप्शन दिया, दिल गुलाबी।तस्वीरों में कैटरीना ने बेहद सटल मेकअप लुक अपनाया है, जो उनकी खूबसूरती को और निखारता है। पहली तस्वीर में वह कैमरे की ओर देखते हुए पोज़ देती नजर आ रही हैं, जबकि दूसरी तस्वीर में वह कैमरे से दूर नजर आ रही हैं। उनके इस लुक ने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया, और फैंस ने जमकर तारीफों के साथ प्यार भी बरसाया। यह पहली बार नहीं है जब कैटरीना की कोई पोस्ट सुर्खियां बटोर रही हो। हाल ही में नवरात्रि के अवसर पर उन्होंने साड़ी में अपनी कुछ शानदार तस्वीरें साझा की थीं, जिसने भी फैंस का दिल जीत लिया था। कैटरीना कैफ ने अपने करियर में कई बड़ी हिट फिल्में दी हैं और हिंदी सिनेमा में एक सफल स्थान बनाया है। उन्हें राजनीति, जिंदगी ना मिलेगी दोबारा, एक था टाइगर, बैंग बैंग, टाइगर जिंदा है, सूर्यवंशी और अब टाइगर 3 जैसी सुपरहिट फिल्मों के लिए पहचाना जाता है। हाल ही में वह 2023 में रिलीज हुई फिल्म मेरी क्रिसमस में नजर आई थीं, जिसमें उन्होंने मिस्ट्री थ्रिलर के दिलचस्प किरदार मारिया को निभाया। इस फिल्म में उनके साथ विजय सेतुपति भी मुख्य भूमिका में थे। कैटरीना कैफ जल्द ही फरहान अख्तर द्वारा निर्देशित फिल्म जी ले जरा में प्रियंका चोपड़ा और आलिया भट्ट के साथ नजर आएंगी।

दो नहीं तीन साल के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के चेयरमैन बन सकते हैं जय शाह

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) बोर्ड ने अपने चेयरमैन और स्वतंत्र निदेशक का कार्यकाल दो साल के बजाय तीन साल करने की सिफारिश की है। आईसीसी के सदस्य देश अगर इन सिफारिश को मंजूर कर लेते हैं तो इसका मतलब होगा कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह तीन साल के लिए विश्व क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था के चेयरमैन बनेंगे। शाह इस साल एक दिसंबर को आईसीसी के सर्वोच्च पद का कार्यभार संभालेंगे। आईसीसी बोर्ड की मंजूरी मिलने के बाद वह अपने दूसरे कार्यकाल में अगले तीन साल के लिए भी इस पद पर आसीन हो सकते हैं। शाह के पहले कार्यकाल का बड़ा हिस्सा बीसीसीआई में उनके अगले साल सितंबर में शुरू होने वाले तीन साल के 'कूलिंग ऑफ पीरियड' के साथ चलेगा। आईसीसी बोर्ड की बैठक के दौरान महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए भी कुछ फैसले किए गए। वैश्विक संस्था ने महिला एसोसिएट सदस्य टी20 प्रतियोगिताओं की एक श्रृंखला को भी मंजूरी दी।

आईसीसी ने बयान में कहा,''हमारी योजना 2025 और 2028 के बीच दो वार्षिक टी20 अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट की शुरुआत करना है जिससे कि आईसीसी महिला टी20 विश्व कप में टीमों की संख्या बढ़ाई जा सके।'' आईसीसी बोर्ड ने 2025 से लेकर 2029 तक महिलाओं के भविष्य के दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) को भी मंजूरी दी जिसे जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा। बयान के अनुसार,''आईसीसी मुख्य कार्यकारी समिति (सीईसी) ने इसे भी मंजूरी दे दी है कि महिलाओं की रैंकिंग का वार्षिक अपडेट अब प्रत्येक वर्ष एक अक्टूबर से एक मई तक चलेगा और टीमों को अब कम से कम आठ मैच खेलने होंगे जो महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 से हॉकी के हटने पर बोले हरमनप्रीत, हमारा लक्ष्य इस बार स्वर्ण पदक जीतना था

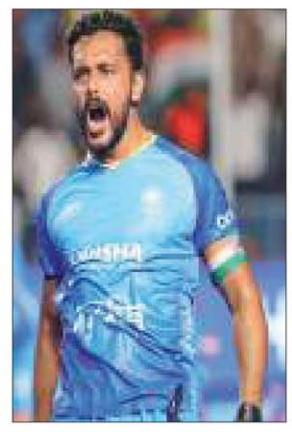

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेल 2026 से हॉकी को हटाये जाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए भारतीय हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा कि राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतना उनकी टीम का लक्ष्य था। भारत की राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने की संभावनाओं को करारा झटका लगा है क्योंकि मेजबान शहर ग्लासगो ने हॉकी, बैडमिंटन, कुश्ती, क्रिकेट और निशानेबाजी जैसे प्रमुख खेलों को 2026 में होने वाले खेलों के कार्यक्रम हटा दिया है तथा केवल 10 खेलों को इसमें जगह दी गई है।

लागत को सीमित करने के लिए टेबल टेनिस, स्क्वाश और ट्रायथलॉन को भी हटा दिया गया है। जर्मनी के खिलाफ यहां मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम पर 23 और 24 अक्टूबर को होने वाले टेस्ट मैचों से पहले प्रेस कांफ्रेंस में हरमनप्रीत से जब इस फैसले पर प्रतिक्रिया के लिए पूछा गया तो उन्होंने कहा, 'मुझे अभी पता चला है कि यह फैसला लिया गया है। यह अच्छा टूर्नामेंट था। हमारा लक्ष्य इस बार उसमें स्वर्ण पदक जीतना था।' भारतीय टीम 2022 में बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से 0-7 से हार गई थी जबकि 2018 में गोल्ड कोस्ट खेलों में इंग्लैंड से 1-2 से हारकर चौथे स्थान पर रही थी। भारतीय पुरूष हॉकी टीम ने राष्ट्रमंडल खेलों में कभी स्वर्ण पदक नहीं जीता जबकि महिला टीम ने 2002 में मैनचेस्टर खेलों में पीला तमगा अपने नाम किया था। पेरिस ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता टीम के कप्तान हरमनप्रीत ने कहा, 'लेकिन जो हमारे हाथ में नहीं है, उसके बारे में सोचने से कोई फायदा नहीं है। अभी हमें जर्मनी जैसी मजबूत टीम से खेलना है और फोकस उसी पर है।' वहीं कोच क्रेग फुल्टोन ने भी कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन अभी इसके प्रभाव के बारे में सोचने का समय नहीं है। दक्षिण अफ्रीका के इस कोच ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि यह आधिकारिक है या नहीं। अगर है तो दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन इसके बारे में सोचने का अभी समय नहीं है क्योंकि हमारा ध्यान अभी कल और परसों के मैच पर है।'

कोहली या स्मिथ नहीं, केवल ये खिलाड़ी कर सकता है जो रूट की बराबरी : एलेस्टेयर कुक

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलेस्टेयर कुक का मानना है कि 'समय के सटीक क्षण' पर फॉर्म में चल रहे जो रूट की बराबरी केवल न्यूजीलैंड के केन विलियमसन कर सकते हैं। रूट और विलियमसन 'फैब फोर' के प्रसिद्ध चेहरों में से हैं जिसमें विराट कोहली और स्टीवन स्मिथ जैसे दिग्गज भी शामिल हैं। हालांकि समय के साथ, रूट ने धीरे-धीरे अपने शीर्ष प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर टेस्ट क्रिकेट में अपना दबदबा कायम किया है।

अब उन्हें ऐसा खिलाड़ी माना जाता है जो इतिहास की किताबों को फिर से लिख सकता है। 33 वर्षीय खिलाड़ी के वर्तमान रन 12,716 रन हैं, जो भारत के 'क्रिकेट के भगवान' सचिन तेंदुलकर को पछाड़कर टेस्ट इतिहास में सबसे सफल बल्लेबाज बनने से केवल 3,206 रन दूर हैं। हाल के वर्षों में रूट ने हर बार बल्ले से क्रीज पर कदम रखते ही अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, चाहे उनके सामने कोई भी प्रतिद्वंद्वी क्यों न हो। जैसे-जैसे वह क्रिकेट की दुनिया को अपने अथाह कौशल से मंत्रमुग्ध करते जा रहे हैं, कुक को अपने दोस्त के करीब केवल एक ही खिलाड़ी नजर आता है।

कुक ने आईसीसी द्वारा आयोजित एक राउंड-टेबल इंटरव्यू के दौरान कहा, 'मुझे लगता है कि इस समय, मुझे जो रूट जितना अच्छा खेलते हुए किसी और को देखना मुश्किल लगता है। पिछले एक साल में तथाकथित 'बिग फोर' के दौरान मुझे लगता है कि विलियमसन और वह शायद इस समय सबसे बेहतरीन फॉर्म में हैं। वे सभी शानदार, वास्तव में शानदार खिलाड़ी, अपने खेलने के तरीकों और तरीकों में सभी बहुत अलग हैं। लेकिन एक चीज जो उन्हें एकजुट करती है, वह है सुधार करते रहने और रन बनाते रहने की भूख और इच्छा।'

पूर्व विस्फोटक बल्लेबाज वार्नर भारत के खिलाफ खेलने के लिए संन्यास से वापसी करने को तैयार

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने कहा कि अगर उनकी टीम को जरूरत होगी तो वह संन्यास से वापस आकर आगामी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत के खिलाफ खेलने को तैयार हैं। इस 37 साल के पूर्व खिलाड़ी ने इस साल पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू टेस्ट श्रृंखला के बाद संन्यास की घोषणा की थी। वार्नर ने पाकिस्तान के खिलाफ अपने आखिरी टेस्ट में 34 और 57 रन की पारी खेली थी। इस बामहस्त बल्लेबाज ने 'कोड स्पोर्ट्स' से कहा, ''मैं हमेशा उपलब्ध रहता हूं, बस फोन उठाना बाकी है। मैं इस बारे में हमेशा गंभीर रहता हूं। ईमानदारी से कहूं तो फरवरी में मेरे आखिरी टेस्ट मैच के बाद से ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने सिर्फ चार टेस्ट मैच खेले है, इसलिए मेरी तैयारी लगभग वैसी ही है।'' टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के लिए क्वालीफाई करने की संभावना को मजबूत बनाने के लिए ऑस्ट्रेलिया और भारत दोनों के लिए पांच मैचों की यह श्रृंखला काफी अहम है। इसका आगाज 22 नवंबर से पर्थ में होगा। ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ी शेफील्ड शील्ड में भाग लेकर कड़ी तैयारी कर रहे हैं। वार्नर को अपनी फिटनेस हासिल करने और चयनकर्ताओं को फिर से प्रभावित करने के लिए इस घरेलू प्रतियोगिता में कुछ मैच खेलने होंगे।

उन्होंने कहा, '' ईमानदारी से कहूं तो अगर उन्हें इस श्रृंखला के लिए वाकई मेरी जरूरत है, तो मुझे अगला शील्ड मैच खेलने को लेकर बहुत खुशी होगी। उन्होंने कहा, ''मैंने सही कारणों से संन्यास लिया था। उन्हें अगर मेरी जरूरत है तो मैं तैयार हूं। मैं इससे पीछे नहीं हटने वाला हूं।'' ऑस्ट्रेलिया के सामने फिलहाल सलामी बल्लेबाजी की चुनौती है। हरफनमौला कैमरून ग्रीन के चोट के कारण श्रृंखला से बाहर होने के बाद अनुभवी स्टीव स्मिथ फिर से मध्यक्रम में खेलेंगे। वार्नर के संन्यास के बाद स्मिथ ने नियमित सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा के साथ इस भूमिका को निभाई थी लेकिन उन्हें अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

दूसरे टेस्ट पर ध्यान देना बहुत जरुरी, भारत वापसी का रखता है दम : लाथम

बेंगलुरु। न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लाथम ने अपनी टीम को याद दिलाया कि पहला मैच जीतने के बाद खुशी में दूसरे टेस्ट पर अपना ध्यान ना भटकने दें, क्योंकि भारत जवाबी हमला करने तैयार है। न्यूजीलैंड टीम ने रविवार को यहां पहले टेस्ट में भारत को 8 विकेट से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त ले ली है, लेकिन अब उन्हें 24 अक्टूबर से पुणे में होने वाले दूसरे मैच की तैयारी शुरु करनी होगी। न्यूजीलैंड की यह भारत में सिर्फ तीसरी टेस्ट जीत थी। टीम को इस प्रारूप की तीसरी जीत के लिए करीब 36 साल का इंतजार करना पड़ा है। आखिरी बार न्यूजीलैंड ने भारत को 1988 में जॉन राइट की कप्तानी में वानखेड़े स्टेडियम पर 136 रन से हराया था। न्यूजीलैंड के कप्तान लाथम ने मैच के बाद कहा कि मुझे लगता है कि 36 साल बाद हमने यहां जीत हासिल की है। यह हमारी टीम के लिए गर्व की बात है और हम इसका जश्न मनाएंगे। उन्होंने कहा कि हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यह भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट में एक चुनौती होगी, जिनके पास जाहिर तौर पर वापसी करने का दम है।

द हंड्रेड की टीमों के लिए पांच आईपीएल फेंचाइजी ने लगाई बोली

नई दिल्ली - मुंबई इंडियंस, कोलकाता नाइट राइडर्स, राजस्थान रॉयल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपर जाइंट्स उन आईपीएल फ्रेंचाइजियों में शामिल हैं, जिन्होंने इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) की प्रतियोगिता द हंड्रेड में टीमें खरीदने के लिए बोलियां जमा की हैं। रिपोर्ट के अनुसार जीएमआर ग्रुप और मैनचेस्टर यूनाइटेड फुटबॉल क्लब के सह-मालिक अवराम ग्लेजर ने भी टीम खरीदने के लिए बोलियां जमा की है। बोलियां जमा करने की अंतिम तिथि 18 अक्टूबर थी। ईसीबी ने आठ फ्रेंचाइजी में से प्रत्येक में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी के लिए बोलियां आमंत्रित की थी। इस तरह से ईसीबी ने बड़ा हिस्सा अपने पास सुरक्षित रखा है जिससे उसका प्रतियोगिता पर नियंत्रण बना रहेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि कई आईपीएल फ्रेंचाइजियों ने शुरू में टीम खरीदने के लिए दिलचस्पी दिखाई थी लेकिन सभी ने बोलियां नहीं लगाईं। इसमें कहा गया है, 'पंजाब किंग्स ने बाहर होने का विकल्प चुना, जबकि इसकी पुष्टि नहीं हुई है कि पांच बार के आईपीएल चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स और गुजरात टाइटन्स के मालिक सीवीसी कैपिटल पार्टनर्स ने बोलियां जमा की हैं या नहीं।'

रणजी ट्राफी : चेतेश्वर पुजारा ने तोड़ा ब्रायन लारा का रिकॉर्ड

- अब निशाने पर आए राहुल द्रविड़, सचिन-गावस्कर के...

नई दिल्ली । चेतेश्वर पुजारा ने रणजी ट्रॉफी के दूसरे दौर में छत्तीसगढ़ के खिलाफ खेलते हुए सौराष्ट्र के लिए शानदार प्रदर्शन किया और अपना 25वां रणजी ट्रॉफी शतक जड़ा। पुजारा ने 197 गेंदों में यह शतक पूरा किया, जो फर्स्ट क्लास क्रिकेट में उनका 66वां शतक है। इस उपलब्धि के साथ पुजारा ने महान बल्लेबाज ब्रायन लारा को पीछे छोड़ दिया, जिनके फर्स्ट क्लास क्रिकेट में कुल 65 शतक हैं। अब पुजारा के निशाने पर भारतीय दिग्गज राहुल द्रविड़ हैं, जिनके नाम 68 शतक दर्ज हैं। पुजारा यदि दो और शतक लगाते हैं, तो वे द्रविड़ की बराबरी कर लेंगे, और तीन शतक लगाकर वे उन्हें पीछे छोड़ सकते हैं। फर्स्ट क्लास क्रिकेट में शतक बनाने के मामले में पुजारा अब सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर, और राहुल द्रविड़ के बाद चौथे स्थान पर हैं। पुजारा ने दिसंबर 2005 में सौराष्ट्र के लिए फर्स्ट क्लास डेब्यू किया था और तब से उन्होंने घरेलू क्रिकेट में लगातार शानदार प्रदर्शन किया है। उनका घरेलू करियर बेहद प्रभावशाली रहा है, जिसमें उन्होंने कई मौकों पर सौराष्ट्र के लिए बड़े रन बनाए हैं। रणजी ट्रॉफी 2017-18 में, पुजारा ने सिर्फ़ चार मैचों में 437 रन बनाए थे, और 2019-20 सीजन में उन्होंने अपना 50वां फर्स्ट क्लास शतक लगाया। हालांकि, फिलहाल पुजारा भारतीय टीम से बाहर चल रहे हैं, और उनकी वापसी अब मुश्किल मानी जा रही है।

हमें राष्ट्रमंडल खेलों के लिए टीम नहीं भेजनी चाहिए: गोपीचंद, विमल ने भी लगाई फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिग्गज बैडमिंटन खिलाड़ी पुलेला गोपीचंद और विमल कुमार ने मंगलवार को 2026 ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों से बैडमिंटन जैसे खेलों को बाहर करने के फैसले की आलोचना की और देश से इन खेलों में टीम नहीं भेजने का आग्रह किया क्योंकि इसका उद्देश्य भारत की प्रगति को रोकना है।

राष्ट्रमंडल खेलों में भारत की पदक की संभावनाओं को उस समय झटका लगा जब ग्लासगो ने बैडमिंटन, हॉकी, कुश्ती, क्रिकेट और निशानेबाजी जैसे प्रमुख खेलों को 2026 में होने वाले खेलों के कार्यक्रम हटा दिया है तथा केवल 10 खेलों को इसमें जगह दी गई है जो पिछले खेलों की तुलना में नौ कम हैं। लागत को सीमित करने के लिए टेबल टेनिस, तीरंदाजी, स्क्वाश और ट्रायथलन को भी हटा दिया गया है। इन खेलों को हटाने से भारतीय खेल जगत स्तब्ध है और गोपीचंद तथा विमल ने सबसे कड़ी प्रतिक्रिया दी।

पूर्व भारतीय कोच विमल ने कहा, 'राष्ट्रमंडल खेलों की कोई जरूरत नहीं है। मेरे नजरिये से उन्हें इन्हें खत्म कर देना चाहिए। राष्ट्रमंडल खेलों की जगह ओलंपिक और एशियाई खेलों का आयोजन करना बेहतर है। यह दयनीय है, मैं बेहद निराश हूं। राष्ट्रमंडल खेल अपनी चमक, संदर्भ खो रहे हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हमें राष्ट्रमंडल खेलों के लिए टीम नहीं भेजनी चाहिए। इसकी जरूरत नहीं है।'

उन्होंने कहा, 'राष्ट्रमंडल खेलों की जगह यह महत्वपूर्ण है कि ओलंपिक और एशियाई खेलों के खिलाड़ियों को बेहतर सुविधा मुहैया कराने के तरीकों पर गौर किया जाए। राष्ट्रमंडल खेलों की जरूरत नहीं है। कार्यक्रम में अच्छे शारीरिक खेल होने चाहिए, अगर आप इन सभी को हटा दोगे तो फिर क्या जरूरत है।' गोपीचंद ने खेल के आयोजकों के इस कदम को भयावह करार दिया। इस पूर्व ऑल इंग्लैंड चैंपियन ने कहा, ''मैं 2026 के राष्ट्रमंडल खेलों से बैडमिंटन को बाहर करने के निर्णय से बेहद स्तब्ध और निराश हूं। ऐसा लगता है कि यह फैसला भारत जैसे देशों की प्रगति को रोकने के उद्देश्य से किया गया है।'

गोपीचंद ने कहा कि बैडमिंटन ने हमें बहुत गौरव और सफलता दिलाई है और यह हमारे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर चमकने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। उन्होंने कहा, 'यह निर्णय ना केवल भारतीय बैडमिंटन के लिए बल्कि दुनिया भर में इस खेल के लिए एक महत्वपूर्ण चूक है जिसमें स्पष्ट तौर पर तर्क का अभाव है और इसके विकास को खतरे में डाल रहा है।'

गोपीचंद ने कहा कि भारत को इस निर्णय पर कड़ी आपत्ति जतानी चाहिए और उचित अधिकारियों के समक्ष इस मामले को उठाना चाहिए। उन्होंने कहा, 'यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी आवाज उठाएं और इस मुद्दे को उचित अधिकारियों के समक्ष उठाएं जिससे कि यह सुनिश्चित हो सके कि बैडमिंटन भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करना जारी रखे।'

राष्ट्रमंडल खेलों के 23वें सत्र का आयोजन 23 जुलाई से दो अगस्त 2026 तक होगा जिसके साथ मेजबान के रूप में ग्लासगो की 12 साल बाद वापसी होगी। भारत ने 2022 बर्मिंघम खेलों में 16 खेलों के लिए 210 खिलाड़ियों का दल भेजा था। देश ने 61 पदक जीते और इसमें से 30 पदक उन खेलों में आए जो 2026 ग्लासगो खेलों का हिस्सा नहीं होंगे।

भारत के दिग्गज स्क्वाश खिलाड़ी सौरव घोषाल ने लॉस एंजिलिस ओलंपिक में इस खेल को शामिल किए जाने के बाद ग्लासगो खेलों के आयोजकों के कदम को खेल को पीछे ले जाने वाला बताया। उन्होंने कहा, 'बेशक यह काफी निराशाजनक है कि स्क्वाश राष्ट्रमंडल खेलों में नहीं होगा, विशेषकर पिछले साल 2028 के लिए ओलंपिक में जगह बनाने के बाद।'

चोटिल नाओमी ओसाका हांगकांग ओपन से हटीं

हांगकांग । चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन जापान की नाओमी ओसाका ने चोट के कारण हांगकांग ओपन टेनिस चैंपियनशिप से हटने की घोषणा की है हांगकांग, चीन टेनिस संघ (एचकेसीटीए) ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि पूर्व विश्व नंबर वन ओसाका टूर्नामेंट में भाग नहीं लेंगी। उन्होंने कहा कि ओसाका ने पुष्टि की है कि वह अभी भी टूर्नामेंट में भाग लेंगी और इस आयोजन के दौरान अपने हांगकांग टेनिस प्रशंसकों से मिलने सहित कई गतिविधियों में भाग लेंगी। बयान में नाओमी के हवाले से कहा गया कि मुझे वास्तव में खेद है कि मुझे प्रूडेंशियल हांगकांग टेनिस ओपन और इस टेनिस सत्र के बाकी हिस्सों में प्रतिस्पर्धा करने से हटना पड़ा है। उन्होंने कहा मुझे टूर्नामेंट में जाना बहुत पसंद है और खेलने में असमर्थ होने की निराश होने के बावजूद मैं अपने सभी अद्भुत हांगकांग प्रशंसकों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि मैं अभी भी इस कार्यक्रम में भाग लूँगी। मैं आप सभी से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूं।

काइल वेरेन का शतक, तीसरे ही दिन बांग्लादेश पर हार का खतरा

मीरपुर (एजेंसी)। काइल वेरेन (114) और वियान मुल्डर (54) रनों की शानदार पारियों के बाद गेंदबाजों के दमदार प्रदर्शन की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन मंगलवार को पहली पारी में 308 के स्कोर के साथ 202 रन की बढ़त साथ बंगलादेश के दूसरी पारी में 101 रन पर 3 विकेट झटक कर मैच पर अपनी पकड़ बना ली हैं।

दक्षिण अफ्रीका 308 के स्कोर पर रोकने के बाद दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी बंगलादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही। तीसरे ही ओवर में कगिसो रबड़ा ने शादमान इस्लाम (1) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद मोमिनुल हक (0) को अपना शिकार बना लिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान नजमुल शान्तो ने पारी को संभालने का

प्रयास किया। 19वें ओवर में केशव महाराज ने शांन्तो को (23) रन पर पगबाधा आउट कर दिया।

दिन का खेल खराब रोशनी के कारण रोके जाने पर बंगलादेश ने दूसरी पारी में 3 विकेट पर 101 रन बना लिए है। हालांकि वह अभी पहली पारी के आधार 101 रन पीछे है। महमुदुल हसन जॉय (नाबाद 38) और मुशफिकुर रहीम (नाबाद 31) क्रीज पर मौजूद थे। दक्षिण अफ्रीका की ओर कगिसो रबाडा ने 2 विकेट लिए। केशव महाराज को एक विकेट मिला। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने आज कल के 6 विकेट पर 140 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। 227 के स्कोर पर वियान मुल्डर के रूप में दक्षिण अफ्रीका का 7वां विकेट गिरा। इसी स्कोर पर केशव महाराज भी आउट कर पवेलियन लौट गए। दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी की शुरुआत भी बहुत ज्यादा अच्छी नहीं रही।

रबाडा ने एक और बड़ी उपलब्धि किया हासिल

ढाका। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कैगिसो रबाडा ने सोमवार को एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए इतिहास रच दिया। उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में 300 टेस्ट विकेट पूरे कर 12,000 से कम गेंदों में यह मुकाम हासिल करने वाले सबसे तेज गेंदबाज बनने का रिकॉर्ड अपने नाम किया। रबाडा ने यह उपलब्धि मीरपुर के शेरे बांग्ला नेशनल स्टेडियम में प्राप्त की। रबाडा ने दिन के पहले सत्र में मुशफिकुर रहीम को आउट कर वकार यूनिस (12,602 गेंद) और डेल स्टेन (12,605 गेंद) को पीछे छोड़ते हुए सबसे तेज 300 टेस्ट विकेट लेने का रिकॉर्ड बनाया। रबाडा दक्षिण अफ्रीका के ऐसे छठे गेंदबाज बन गए हैं जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 300 विकेट पूरे किए हैं। इस सूची में उनका नाम स्टेन, शॉन पोलक, मखाया एंटिनी, एलन डोनाल्ड और मोर्ने मोर्कल के साथ शामिल हो गया है। भारत के रविचंद्रन अश्विन ने सबसे तेज 300 टेस्ट विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम किया था, जिन्होंने 54 मैचों में यह उपलब्धि हासिल की थी, लेकिन रबाडा ने गेंदों के लिहाज से यह रिकॉर्ड अपने नाम किया। उनके पास अब तक का 39.3 का स्ट्राइक रेट है, जो 300 या उससे अधिक टेस्ट विकेट लेने वाले सभी गेंदबाजों में सबसे ज्यादा है। इस शानदार उपलब्धि के बाद रबाडा ने मैच में 3-26 के आंकड़े के साथ जबरदस्त वापसी की। उनके साथ वियान मुल्डर और केशव महाराज ने भी तीन-तीन विकेट लेकर बांग्लादेश को पहली पारी में केवल 106 रन पर समेट दिया। इससे पहले, बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हुसैन शांतो ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया, लेकिन डेन पीट और मुल्डर ने शुरुआती झटके देकर बांग्लादेश के फैसले को गलत साबित कर दिया। टीम शुरुआती झटकों से उबरने में नाकाम रही और महज 41 ओवर में ही पूरी टीम ऑल आउट हो गई।

यह उसकी निजी राय है, मैं उससे सहमत नहीं हूं : साक्षी के दावों पर बोली विनेश फोगाट

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार पहलवान और कांग्रेस विधायक विनेश फोगाट ने मंगलवार को साक्षी मलिक के उन दावों पर असहमति जताई कि एशियाई खेलों के ट्रायल से छूट लेने के उनके और बजरंग पूनिया के फैसले से बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ उनका प्रदर्शन कमजोर पड़ा।

ओलंपिक कांस्य पदक विजेता साक्षी ने अपनी किताब 'विटनेस' में दावा किया है कि विनेश और बजरंग के फैसले से उनका आंदोलन 'स्वार्थपूर्ण' लगने लगा। विनेश ने कहा, 'यह उसकी निजी राय है। मैं इससे सहमत नहीं हूं। जब तक मैं कमजोर नहीं हूं, लड़ाई कमजोर नहीं हो सकती। यह मेरा मानना है। जब तक साक्षी, विनेश और बजरंग जिंदा है, यह लड़ाई कमजोर नहीं हो सकती।' उन्होंने कहा, 'जिन्हें जीतना है, उन्हें कभी कमजोर नहीं होना चाहिए। उन्हें हमेशा मैदान पर डटकर लड़ना चाहिए। इसके लिए कठोर होना और चुनौतियों का सामना करना जरूरी है। हम लड़ाई के लिए तैयार हैं।'

साक्षी ने किताब में बताया कि जब बजरंग और विनेश के करीबी लोगों ने उनके दिमाग में लालच भरना शुरू किया तो उनके विरोध प्रदर्शन में दरार आने लगी। इन तीनों ने भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व प्रमुख बृजभूषण पर अपने कार्यकाल के दौरान महिला पहलवानों के साथ यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था और मामला दिल्ली की अदालत में चल रहा है। डब्ल्यूएफआई के निलंबन के बाद तदर्थ समिति ने कुश्ती का कामकाज देखना शुरू किया जिसने बजरंग और विनेश को 2023 एशियाई खेलों के ट्रायल्स में छूट दी लेकिन साक्षी ने अपने साथियों के सुझाव के बावजूद ऐसा नहीं करने का फैसला किया। अंत में साक्षी एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले सकीं लेकिन विनेश खेलों से पहले चोटिल हो गईं और बजरंग पदक जीतने में असफल रहे।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी एसो के निदेशक ने कहा- ट्रूडो की हरकतों ने दुनिया भर में सिखों को मुसीबत में डाला

वाशिंगटन, एजेंसी। उत्तरी अमेरिकी पंजाबी एसोसिएशन (एनएपीए) के कार्यकारी निदेशक सतनाम सिंह चहल का कहना है कि भारत और कनाडा के बीच चल रही कूटनीतिक दरार उत्तरी अमेरिका और उसके बाहर सिख समुदाय के भीतर बढ़ती चिंता का कारण बन रही है। सिख प्रवासी समुदाय में एक प्रमुख आवाज़ चहल ने चेतावनी दी है कि दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण संबंधों के न केवल कनाडा में बल्कि दुनिया भर में सिखों के लिए दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। चहल ने एक साक्षात्कार में कहा, भारत और कनाडा के बीच बढ़ते संघर्ष को रचनात्मक बातचीत के माध्यम से सुलझाने की आवश्यकता है ताकि दुनिया भर में सिख समुदाय के अधिकारों और कल्याण की रक्षा की जा सके। भारतीय प्रवासियों की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध संगठन एनएपीए के नेता के रूप में, चहल विशेष रूप से कनाडा के सर्रे में खालिस्तान कार्यकर्ता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद भड़के तनाव से परेशान हैं। निज्जर की हत्या और उसके बाद के कूटनीतिक नतीजों ने सिखों के सामने पहचान, सुरक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बारे में पश्चिमी देशों में रहने वालेआने वाली जटिल चुनौतियों को उजागर किया है। 1997 से संयुक्त राज्य अमेरिका में रह रहे चहल ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि यह स्थिति सिख प्रवासियों को कैसे प्रभावित कर रही है। उन्होंने बताया, विश्व स्तर पर, सिखों की अपने समुदायों के लिए परोपकार और सेवा के लिए लंबे समय से प्रतिष्ठा है, लेकिन शत्रुता के मौजूदा माहौल ने हमारे अपने गुरुद्वारों के भीतर भी विभाजन पैदा कर दिया है।

विश्व के सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया के 8वें राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो ने ली शपथ

जकार्ता, एजेंसी। प्रबोवो सुबियांतो ने विश्व के सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया के आठवें राष्ट्रपति के रूप में रविवार को शपथ ली। पूर्व रक्षा मंत्री प्रबोवो सुबियांतो (73) ने देश के सांसदों और अन्य देशों से आमंत्रित किए गए गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष मुस्लिमों के पवित्र धर्म ग्रंथ 'कुरान पर हाथ रखकर राष्ट्रपति पद की शपथ ली, जिसके बाद सड़कों पर मौजूद हजारों समर्थकों ने उनका स्वागत किया। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में आयोजित हुए शपथ ग्रहण समारोह में 40 से अधिक देशों के नेता और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए, जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, सऊदी अरब, रूस, दक्षिण कोरिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया और अन्य दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश सम्मिलित हैं। सुबियांतो लंबे समय से बेहद लोकप्रिय राष्ट्रपति जोको विडोडो के प्रतिद्वंद्वी रहे हैं और उन्होंने इससे पहले दो बार 2014 और 2019 में उनके खिलाफ राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा, लेकिन दोनों ही मौकों पर जोको विडोडो ने अपनी हार स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। हालांकि, विडोडो ने पुनः राष्ट्रपति बनने के बाद सुबियांतो को रक्षा प्रमुख नियुक्त किया था। सुबियांतो के साथ-साथ देश के नए उपराष्ट्रपति जिब्रान राकाबुमिंग राका (37) ने भी शपथ ली। वह सुरकार्ता के मेयर रह चुके हैं। सुबियांतो ने विडोडो के बेटे को उप-राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में संदिग्ध आतंकवादियों ने पुलिस अधिकारी की हत्या की

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में रविवार को मोटरसाइकिल सवार अज्ञात बंदूकधारियों ने आतंकवाद निरोधक विभाग के एक अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उप निरीक्षक शेर अली की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वह बन्नू जिले में एक मस्जिद से नमाज अदा करके बाहर निकल रहे थे। हमले में एक व्यक्ति घायल हो गया।

नेपाल की धरती पर चीन विरोधी गतिविधियां नहीं होने दी जाएंगी : प्रधानमंत्री ओली

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल के प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली ने कहा कि देश में चीन विरोधी गतिविधियां नहीं होने दी जाएंगी और यह 'एक चीन' नीति का समर्थन करता है। ओली ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्य चेन जिनिंग के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय चीनी प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक में यह टिप्पणी की। यह बैठक काठमांडू के बालूवातार में उनके आधिकारिक आवास पर हुई। 'एक चीन' नीति के प्रति नेपाल की प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए ओली ने प्रतिनिधिमंडल से कहा कि नेपाल की सीमा में कोई भी चीन विरोधी गतिविधि नहीं होने दी जाएगी। चीन के साथ राजनयिक संबंध रखने वाले सभी देशों के लिए एक चीन नीति का पालन करना अनिवार्य है। बैठक के दौरान ओली ने नेपाल के आर्थिक विकास के लिए चीन से निरंतर समर्थन की आशा भी व्यक्त की।

अमेरिका का पेनसिल्वेनिया राज्य तय करेगा, कौन बनेगा राष्ट्रपति ! पानी की तरह पैसे बहा रहे ट्रंप और कमला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव 5 नवंबर को होने वाले हैं और दोनों ही उम्मीदवारों, डेमोक्रेटिक पार्टी की कमला हैरिस और रिपब्लिकन पार्टी के डोनाल्ड ट्रंप के बीच कांटे की टक्कर होने का अनुमान है, लिहाजा कौन राष्ट्रपति बनेगा, ये अब स्विंग स्टेट पर निर्भर हो गया है। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाला राज्य पेंसिल्वेनिया 2024 के राष्ट्रपति चुनावों के लिए ग्राउंड जीरो बनकर उभरा है। राजनीतिक एक्सपर्ट्स का मानना है, कि डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कमला हैरिस और उनके रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप के बीच राज्य में कड़ी टक्कर होने वाली है। राष्ट्रपति पद की दौड़ जीतने के लिए 270 इलेक्टोरल कॉलेज वोटों की जरूरत होती है और अमेरिका के 50 राज्यों में से प्रत्येक में इलेक्टोरल कॉलेज वोटों की संख्या अलग-अलग है। पेंसिल्वेनिया में 19 जबकि डेमोक्रेटिक गढ़ कैलिफोर्निया में 54 इलेक्टोरल कॉलेज वोट हैं, उसके बाद टेक्सास, जो रिपब्लिकन का गढ़ है, वहां 40 इलेक्टोरल कॉलेज हैं। आपको बता दें, कि 5 नवंबर को जो वोटिंग होने वाली है, उसमें जो उम्मीदवार जीतेगा, उसे विजेता नहीं माना जाएगा, बल्कि जो उम्मीदवार इलेक्टोरल कॉलेज में 270 से ज्यादा वोट लेकर आएगा, उसे विजयी माना जाएगा। लिहाजा आप कह सकते हैं, कि पॉपुलर वोट का कोई मतलब नहीं होता है।

अमेरिका में सात स्विंग स्टेट : प्रत्येक राज्य में राजनीतिक समर्थन को देखते हुए, विशेषज्ञों ने पिछले मतदान पैटर्न के आधार पर किसी उम्मीदवार को मिलने वाले इलेक्टोरल कॉलेज वोटों की संख्या का पहले ही पता लगा लिया है, सिवाय सात बैटलग्राउंड राज्यों के। ये सात राज्य हैं नेवादा, जिसके पास 6 इलेक्टोरल कॉलेज वोट हैं, एरिजोना (11), विस्कॉन्सिन (10), मिशिगन (15), पेंसिल्वेनिया (19), जॉर्जिया (16) और नॉर्थ कैरोलिना (16)। तेजी से बदलते राजनीतिक माहौल के साथ, दोनों उम्मीदवार अब पेनसिल्वेनिया को जीतना जरूरी मानते हैं। कमला हैरिस और ट्रंप, दोनों के चुनाव अभियानों के हजारों स्वयंसेवक मतदाताओं को अपने नेताओं के लिए वोट देने के लिए मनाने के लिए इस युद्ध के मैदान वाले राज्य में पहुंचे हैं। हिल के डिसीजन डेस्क मुख्यालय ने हाल ही में एक पूर्वानुमान और मतदान औसत के विश्लेषण में बताया है, कि हमें नहीं लगता कि कोई भी उम्मीदवार पेनसिल्वेनिया जीते बिना 270 इलेक्टोरल वोट तक पहुंच पाएगा। प्रतिष्ठित वेबसाइट ने कमला हैरिस को 226 इलेक्टोरल कॉलेज वोट और ट्रंप को 219 वोट दिए हैं। एनबीसी न्यूज इलेक्शन डेस्क के मुताबिक, पेंसिल्वेनिया 2024 के चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण युद्ध के मैदान वाले राज्य के रूप में उभर रहा है। दोनों उम्मीदवारों ने झोंकी ताकत द न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, डोनाल्ड ट्रंप ने 2016 में पेंसिल्वेनिया में एक प्रतिशत से भी कम अंतर से जीत हासिल की थी और 2020 में लगभग एक प्रतिशत से हार गए थे। कमला हैरिस वहां प्रतिस्पर्धी बनी हुई हैं, लिहाजा राज्य को टॉस-अप के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यही कारण है कि हैरिस और ट्रंप, दोनों किसी भी अन्य स्थान की तुलना में पेंसिल्वेनिया में ज्यादा धन, समय और ऊर्जा डाल रहे हैं, और पूरे राज्य में विज्ञापन युद्ध छेड़ रहे हैं। द न्यू यॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में कहा गया है, कि 2024 में व्हाइट हाउस की दौड़ में सात मुख्य युद्धक्षेत्र हो सकते हैं, जिनमें से सभी निर्णायक साबित हो सकते हैं। लेकिन पेंसिल्वेनिया एक ऐसा राज्य है, जिसे कमला हैरिस और ट्रंप दोनों के शीर्ष रणनीतिकारों ने चुनाव में सबसे ज्यादा बढ़त के लिए चुना है। डेली के अनुसार, ट्रंप या खास तौर पर कमला हैरिस के लिए, इसके बिना जीत के लिए जरूरी 270 इलेक्टोरल कॉलेज वोट तक पहुंचना चुनौतीपूर्ण है। जानकार सूत्रों ने पीटीआई को बताया है, कि डेमोक्रेटिक नेशनल फाइनेंस कमेटी ने हाल ही में फिलाडेल्फिया में अपने फॉल रिट्रीट प्रोग्राम के दौरान इसी निष्कर्ष पर पहुंची कि पेंसिल्वेनिया जीते बिना कमला हैरिस के जीतने का कोई रास्ता नहीं है। वहीं, ट्रंप अभियान भी यही मानता है। कमला हैरिस, ट्रंप का जोरदार अभियान डेमोक्रेट्स ब्लू वॉल जीतने पर भरोसा कर रहे हैं, जिसमें मिशिगन, विस्कॉन्सिन और पेंसिल्वेनिया शामिल हैं, जबकि ट्रंपप अभियान, तीनों राज्यों में कमला हैरिस को कड़ी टक्कर दे रहा है। ट्रंप ने 2016 में तीनों राज्य जीते थे। पीबीएस न्यूज ने बताया है, कि कमला हैरिस और ट्रंप, दोनों अभियान राज्य के 19 इलेक्टोरल वोटों को राष्ट्रपति चुनाव जीतने के लिए आवश्यक 270 तक पहुंचने के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं, जबकि वहां का मुकाबला, कैपिटल हिल (अमेरिकी संसद) पर नियंत्रण भी निर्धारित कर सकती हैं। एनबीसी न्यूज के अनुसार, दोनों अभियानों ने हाल के महीनों में राज्य को कवर किया है।

अमेरिकी चुनाव-मैकडॉनल्ड्स में रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने बनाए फ्राइज

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को फिलाडेल्फिया के मैकडॉनल्ड्स फ्रैंचाइज में लोगों को सर्व करते दिखे. वहीं, उपराष्ट्रपति और डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार कमला हैरिस ने अटलांटा में समर्थन जुटाने के लिए पूजा-अर्चना में भाग लिया. शर्ट और टाई के ऊपर एप्रन पहने ट्रंप ने फ्राइज बनाए और मैकडॉनल्ड्स के कर्मचारियों से बातचीत की. ट्रंप ने कहा कि वास्तव में, इसे सही तरीके से और तेजी से करने के लिए बहुत विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है. उन्होंने कहा कि मुझे यह काम पसंद है. अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, ट्रंप का मैकडॉनल्ड्स का दौरा हैरिस के कॉलेज के दिनों में फास्ट-फूड चेन में काम करने के बयान के जवाब में हुआ. दूसरी ओर, हैरिस ने अटलांटा में अपने 60वें जन्मदिन पर दो पूजा-अर्चना में भाग लिया. जॉर्जिया के जोन्सबोरो में डिवाइन फेथ मिनिस्ट्रीज़ इंटरनेशनल की अपनी यात्रा के दौरान, प्रसिद्ध संगीतकार स्टीवी वंडर ने अपना हिट हायर ग्राउंड और बॉब मार्ले के रिडेम्पशन सॉन्ग का एक संस्करण गाकर पेश किया. अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार कि उन्होंने हैरिस के लिए हैप्पी बर्थडे भी गाया. जॉर्जिया में जनता को संबोधित करते हुए हैरिस ने कहा कि इस समय हमारे देश में, हम जो देख रहे हैं वह यह है कि कुछ लोग हमारे बीच विभाजन को गहरा करने, नफरत फैलाने, डर फैलाने और अराजकता पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि इस समय, हमारा देश एक चौराहे पर है और हमें कहां जाना है यह हम पर निर्भर करता है. इससे पहले मिशिगन में हैरिस के अभियान के दौरान गायिका और रैपर लिजो ने डेमोक्रेट को अपना समर्थन दिखाया।

मिस्र बना मलेरिया मुक्त, डब्ल्यूएचओ ने की घोषणा

जिनेवा/काहिरा, एजेंसी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने रविवार को मिस्र को मलेरिया मुक्त देश घोषित कर दिया। यह उपलब्धि हासिल करने वाला वह दुनिया का 44वां देश है। डब्ल्यूएचओ ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि 10 करोड़ की आबादी वाले मिस्र की सरकार की करीब 100 साल की कोशिश के बाद उसने यह उपलब्धि हासिल की है। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक डॉ. तेद्रोस ए. गेब्रेयेसस ने एक बयान में कहा, मलेरिया रोग उतना ही पुराना है, जितनी मिस्र की सभ्यता। फराओ को मात देने वाली यह बीमारी अब उसके इतिहास की बात बन चुकी है, न कि भविष्य की। उन्होंने कहा कि मिस्र की यह उपलब्धि वाकई ऐतिहासिक है और वहां के लोगों तथा सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। साल 2010 के बाद पूर्वी मेडिटरेनियन क्षेत्र में पहली बार किसी देश को मलेरिया मुक्त घोषित किया गया है। इस क्षेत्र में संयुक्त अरब अमीरात और मोरक्को के बाद सफलतापूर्वक मलेरिया उन्मूलन करने वाला यह तीसरा देश है। मिस्र के उप-प्रधानमंत्री डॉ. खालिद अब्दुल गफ्फार ने कहा कि मलेरिया उन्मूलन का यह प्रमाणन एक नए चरण की शुरुआत है। अब इस उपलब्धि को बनाए रखने के लिए अथक प्रयास की जरूरत है। डब्ल्यूएचओ किसी देश को मलेरिया मुक्त होने का प्रमाणन तब देता है।

उत्तरी गाजा में इजरायली एयर स्ट्राइक, 73 की मौत, 100 से ज्यादा घायल

येरूशलम, एजेंसी। उत्तरी गाजा के एक शहर बेत लाहिया पर इजरायली हमले में शनिवार शाम को कम से कम 73 फिलिस्तीनी मारे गए, यह जानकारी एन्क्लेव के सरकारी मीडिया कार्यालय ने दी। हमले में 100 से ज्यादा लोग घायल हुए और कई लोग लापता हैं। मिडिल ईस्ट आई की रिपोर्ट के मुताबिक गाजा पट्टी के डॉक्टर्स ने बताया कि इजरायली एयर स्ट्राइक ने एक बहुमंजिला इमारत को निशाना बनाया और आस-पास के कई घरों को नुकसान पहुंचाया। सरकारी मीडिया कार्यालय ने कहा कि इजरायली सेना ने बेत लाहिया में भीड़भाड़ वाले रिहायशी इलाकों पर बमबारी की, साथ ही कहा कि हताहतों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं।

मीडिया कार्यालय ने कहा, यह नरसंहार और जातीय सफाए का युद्ध है। मिडिल ईस्ट आई ने अल जजीरा की रिपोर्ट के हवाले से जानकारी दी कि इस हमले ने शहर के पूरे पश्चिमी हिस्से को हिलाकर रख दिया और लोग जब अंदर थे, तब इमारतें ढह गईं। निवासियों को अपने घर छोड़ने की कोई चेतावनी नहीं दी गई। कई लोग मलबे के नीचे फंस गए, पैरामेडिक्स और नागरिक सुरक्षा दल इजरायली बमबारी की तीव्रता के कारण तुरंत उस क्षेत्र में नहीं पहुंच पाए।

बेत लाहिया में कमाल अदवान अस्पताल के निदेशक होसम अबू साफिया ने कहा कि हमले में घायल हुए कई लोग संसाधनों, चिकित्सा आपूर्ति और विशेष कर्मियों की भारी कमी के कारण नहीं बच पाए। उन्होंने कहा कि मलबे के नीचे दर्जनों लोग लापता हैं और संसाधनों की कमी और चल रहे हमलों के कारण उन्हें बचाया नहीं जा सका।

वहीं इजरायल डिफेंस फोर्सेज ने एक बयान में कहा है कि हमास द्वारा नियंत्रित मीडिया गाजा में हताहतों के आंकड़े बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा है। द टाइम्स ऑफ इजरायल के मुताबिक आईडीएफ ने कहा कि यह दावे इस्तेमाल किए जा रहे सटीक हथियारों और हमास आतंकवादी समूह से संबंधित आतंकवादी लक्ष्य पर हमले की सटीकता से मेल नहीं खाते। आईडीएफ ने कहा कि वह घटना की जांच कर रहे हैं। उसने इस बात पर जोर दिया कि यह एक सक्रिय युद्ध क्षेत्र में हुआ और वह निर्दोष लोगों को नुकसान पहुंचाने से बचने की पूरी कोशिश कर रहा है।

इससे पहले शनिवार को इजरायली सेना ने इंडोनेशियाई अस्पताल को घेर लिया और उस पर बमबारी की, जो बेत लाहिया में ही स्थित है। फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजरायली सेना ने ऊपरी मंजिलों को निशाना बनाया, जहां 40 से अधिक मरीज और चिकित्सा कर्मचारी मौजूद थे। इंडोनेशियाई अस्पताल के निदेशक मारवान सुल्तान ने कहा, इजरायली टैंकों ने अस्पताल को पूरी तरह से घेर लिया, बिजली काट दी और अस्पताल पर बमबारी की, तोपखाने से दूसरी और तीसरी मंजिलों को निशाना बनाया। शनिवार का हमला ऐसे समय में हुआ जब उत्तरी गाजा में जबालिया शरणार्थी शिविर पर इजरायली घेराबंदी का 15वां दिन था।

बांग्लादेश में चुनावी सुगबुगाहट के बीच बीएनपी ने की अंतरिम सरकार की आलोचना

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में आम चुनाव को लेकर हलचल है. इस बीच राजनीतिक दलों की ओर से सवाल उठाए जा रहे हैं कि देश में चुनाव कब होंगे. इस बीच बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने चुनाव आयोग के पुनर्गठन को लेकर समिति गठित करने की बात कही है. बांग्लादेश की सरकारी मीडिया संगबाद के अनुसार मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने आम चुनाव को लेकर आयोग के पुनर्गठन पर जोर दिया है. उन्होंने इसके लिए एक समिति गठित करने की बात कही है. उन्होंने इस दौरान कहा कि समिति में छह सदस्य होंगे. बाद में मुख्य सलाहकार के निजी सहायक महफूज आलम ने चुनाव को लेकर मतदाता सूची तैयार की जाने की बात कही. इस बीच बांग्लादेश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टियों में से एक बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (ब्हक्क) के वरिष्ठ संयुक्त महासचिव ने चुनाव की तारीख की घोषणा नहीं करने के लिए अंतरिम सरकार की आलोचना की. वरिष्ठ संयुक्त महासचिव रूहुल कबीर रिजवी ने कहा कि सरकार चुनाव की तारीख

की घोषणा न करके देश को गतिरोध की ओर ले जा रही है. ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार रिजवी ने अंतरिम सरकार की इस बात के लिए आलोचना की कि वह सुधारों के पूरा होने की निश्चित तिथि के बिना ही उनके बारे में बात कर रही है. पबना के बेरा उपजिला में एक रैली को संबोधित करते हुए रिजवी ने कहा, आप अंतरिम सरकार के तहत सुधारों की बात कर रहे हैं, लेकिन आप में से प्रत्येक चुनाव कब होंगे, इस बारे में अलग-अलग बयान दे रहे हैं. आप इस बारे में कोई निश्चित तारीख नहीं दे रहे हैं कि आपके सुधार कब पूरे होंगे. ढाका ट्रिब्यून के अनुसार उन्होंने आगे कहा कि लोगों के मन में आपके बारे में सवाल होंगे. हम आपसे आग्रह करते हैं कि आप आवश्यक सुधार करें और तुरंत चुनाव कराएं. शनिवार को अंतरिम सरकार के एक सलाहकार ने कहा कि बांग्लादेश का अगला आम चुनाव 2025 में होने की संभावना है. अंतरिम सरकार के सलाहकार डॉ. आसिफ नजरुल ने एक बयान में कहा कि अगले साल के भीतर चुनाव संभव हो सकते हैं, लेकिन इसमें कई कारक शामिल हैं. कहा जाता है कि सुधार और राजनीतिक समझौते चुनावों की ओर ले जाते हैं. अन्य कारक हैं खोज समिति और चुनाव आयोग का गठन, मतदाता सूची तैयार करना आदि. अगर ये कारक पूरे हो जाते हैं, तो अगले साल चुनाव हो सकते हैं. उन्होंने कहा, यह मेरा भी शुरुआती अनुमान है. बांग्लादेश में राजनीतिक स्थिति अस्थिर है, क्योंकि शेख हसीना ने बढ़ते विरोध प्रदर्शनों के मद्देनजर इस साल 5 अगस्त को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था. सरकारी नौकरियों के लिए कोटा प्रणाली को समाप्त करने की मांग करने वाले छात्रों द्वारा किए गए।

इजरायल को बड़ा झटका, उत्तरी गाजा में टैंक से निकलते ही सेना ब्रिगेड कमांडर दक्सा की मौत

येरूशलम, एजेंसी। उत्तरी गाजा के जबालिया में अभियान चला रही इजरायली सेना को बड़ा झटका लगा है। रविवार को एक विस्फोट में सेना के एक ब्रिगेड कमांडर की उस समय मौत हो गई जब वह टैंक से उतरकर क्षेत्र का निरीक्षण कर रहे थे । चार महीने पहले ही वह ब्रिगेड कमांडर बने थे। उत्तरी गाजा में हमास के खिलाफ अभियान के दौरान रविवार 20 अक्टूबर को विस्फोट में ब्रिगेड कमांडर की जान चली गई । इजरायली सेना के प्रवक्ता रियर एडमिरल डैनियल हगारी ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि 401वीं ब्रिगेड के कमांडर कर्नल अहसान दक्सा जबालिया क्षेत्र में मारे गए हैं।

दक्सा अपने टैंक से निकलने के बाद वह एक विस्फोटक की चपेट में आ गए। वह साल भर से चल रहे गाजा युद्ध में मारे गए इजरायली सेना के सबसे वरिष्ठ कमांडरों में से एक थे।कर्नल दक्सा को 2006 में लेबनान के हिजबुल्लाह के खिलाफ युद्ध में घायल सैनिकों को बचाने के लिए सम्मानित किया गया था। इजरायली सेना एक बार फिर हिजबुल्लाह के खिलाफ जंग में है। इजरायल के राष्ट्रपति ने दक्सा को एक नायक बताया। दक्सा की मौत के साथ ही 27 अक्टूबर 2023 को गाजा में जमीनी हमला शुरू करने के बाद से इजरायल के मारे गए सैन्यकर्मियों की संख्या 358 हो गई है। 41 साल के दक्सा इजरायल के द्रूज समुदाय के सदस्य थे और उन्हें चार महीने पहले ब्रिगेड

कमांडर नियुक्त किया गया था। उनकी ब्रिगेड जबालिया में एक अभियान का नेतृत्व कर रही थी। हगारी ने कहा कि घटना में एक अन्य बटालियन कमांडर और दो अधिकारी घायल हुए हैं। इजरायल के रक्षा मंत्री ने बयान जारी कर कहा कि दक्सा हमास आतंकवादियों से लड़ते हुए मारे गए। उन्होंने कहा, वे क्षेत्र का निरीक्षण करने बाहर निकले और विस्फोटक से घायल हो गए। इजरायली सेना ने 6 अक्टूबर को जबालिया और उत्तरी गाजा के अन्य हिस्सों में जमीनी और हवाई हमला शुरू किया था। सेना का कहना है कि उसका उसका उद्येश्य हमास के आतंकवादियों को फिर से संगठित होने से रोकना है। हमास द्वारा संचालित क्षेत्र की नागरिक सुरक्षा एजेंसी ने कहा कि दो सप्ताह से जारी हमले में 400 से अधिक लोग मारे गए हैं।

कनाडा की राजनीति में फिर पंजाबियों की बल्ले-बल्ले ! ब्रिटिश कोलंबिया चुनावों में 10 पंजाबी जीते और 1 आगे

ओटावा, एजेंसी। कनाडा की राजनीतिक में एक बार फिर पंजाबी सफलता के झंडे गाढ़ रहे हैं। एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में, हाल ही में ब्रिटिश कोलंबिया (बीसी) प्रांतीय चुनावों में 10 पंजाबी मूल के उम्मीदवारों ने जीत हासिल की है और एक आगे चल रहा है, जिससे कनाडाई राजनीति में समुदाय का प्रभाव और मजबूत हुआ है। यह जीत ऐसे समय में मिली है जब इंडो-कैनेडियन आबादी, विशेष रूप से पंजाबी समुदाय प्रमुखता से लगातार बढ़ रहा है, खासकर ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत में। कांटे की टक्कर में एनडीपी और कंजर्वेटिव ने क्रमशः 46-45 सीटें जीती हैं, जबकि ग्रीन पार्टी 93 सीटों वाले बीसी हाउस में दो सीटों पर जीत हासिल करने में सफल रही। ये सफल उम्मीदवार विभिन्न राजनीतिक पृष्ठभूमि से हैं, जो न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी और कंजर्वेटिव पार्टी दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे स्वास्थ्य सेवा सुधार, आर्थिक विकास, जलवायु कार्रवाई और अप्रवासी समुदायों के लिए अधिक समर्थन जैसे मुद्दों की वकालत करते हुए विविध मंचों पर चुनाव लड़े।

इस चुनावी जीत को कनाडा की राजनीति में दक्षिण एशियाई, विशेष रूप से पंजाबियों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की दिशा में एक और कदम के रूप में देखा जाता है, जो एक ऐसे समुदाय को और सशक्त बनाता है जो कनाडा के सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है।प्रमुख विजेताओं में मौजूदा आवास मंत्री रवि कहलोन भी शामिल थे, जिन्होंने डेल्टा नॉर्थ सीट को महत्वपूर्ण अंतर से बरकरार रखा। बीसी के राजनीतिक परिदृश्य में एक प्रमुख व्यक्ति कहलोन आवास और जलवायु परिवर्तन से संबंधित नीतियों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। एक अन्य उल्लेखनीय

विजेता ब्रिटिश कोलंबिया की विधान सभा के निवर्तमान अध्यक्ष राज चौहान हैं। उन्होंने रिकॉर्ड छठी बार जीत हासिल की है और इससे पहले 2013 से 2017 तक विधान सभा के सहायक उपाध्यक्ष और 2017 से 2020 तक उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। विपक्ष में रहते हुए, उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य, मानवाधिकार, आव्रजन और बहुसंस्कृतिवाद और श्रम के आलोचक के रूप में कार्य किया। वे पहली बार 2005 में विधायक चुने गए और फिर 2009, 2013, 2017, 2020 और 2024 में फिर से चुने गए। व्यापार राज्य मंत्री जगरूप बरार ने सर्रे फ्लीटवुड से सातवीं बार जीत हासिल की है। वे 2013 में सिर्फ़ एक बार हारे थे और उन्होंने जितने भी चुनाव लड़े, सभी जीते। बरार का जन्म बठिंडा में हुआ था और वे भारतीय पुरुषों की राष्ट्रीय बास्केटबॉल टीम का हिस्सा थे।

ऑक्सीजन सिलेंडर फटने से छह की मौत

बुलंदशहर । यूपी के बुलंदशहर जिले के सिकंदराबाद इलाके में ऑक्सीजन सिलेंडर फटने से छह लोगों की मौत हो गयी। जिला मजिस्ट्रेट चंद्र प्रकाश प्रियदर्शी ने मंगलवार को बताया कि शुरुआत में मृतकों की संख्या पांच थी जो मंगलवार की सुबह बढ़कर छह हो गई। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान रियाजुद्दीन उर्फ राजू (50), उनकी पत्नी रुखसाना (45), सलमान (16), तमन्ना (24), हिफ्जा (तीन) और आस मोहम्मद (26) के रूप में हुई है। मिली जानकारी के अनुसार, सिकंदराबाद की आशापुरी कॉलोनी में यह हादसा हुआ। आशापुरी कॉलोनी में सोमवार रात एक मकान में रखा सिलेंडर अचानक फटने से जोरदार धमाके के साथ मकान ध्वस्त हो गया और छत गिर गयी। सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस और प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंच गए और एंबुलेंस एवं जेसीबी को मौके पर बुलाया गया। बुलंदशहर के जिलाधिकारी (डीएम) चंद्र प्रकाश सिंह ने बताया कि यह घटना आशापुरी कॉलोनी में रियाजुद्दीन के घर में हुई, जिसमें 18-19 लोग रहते थे। घर के 10 लोग पूरी तरह सुरक्षित हैं। वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनपद बुलंदशहर में सिलेंडर फटने से हुए हादसे का संज्ञान लिया। मुख्यमंत्री ने घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर जिला प्रशासन के अधिकारियों को उनके समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है। मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को मौके पर पहुंचकर राहत कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए।

गुरमीत राम रहीम की मुश्किलें बढ़ीं...मान सरकार ने केस चलाने की मूंजरी दी

चंडीगढ़ । डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम की मुश्किलें बढ़ती दिख रही हैं। पंजाब सरकार ने राम रहीम के खिलाफ 2015 के बेअदबी के तीन मामलों में केस चलाने की मंजूरी दे दी है। बेअदबी की इन घटनाओं के बाद सिख समुदाय ने व्यापक स्तर पर प्रदर्शन किया था, इस दौरान झड़प में पुलिस की फायरिंग में दो लोगों की मौत हो गई थी। 2015 के गुरुग्रंथ साहिब की बेअदबी मामले में मुकदमा चलाने पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी थी। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने मार्च 2024 में बेअदबी के आरोप में चल रहे तीन मामलों की जांच पर रोक लगाई थी। इस आदेश को पंजाब की भगवंत मान सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट की ओर से लगाई गई रोक को हटाकर राम रहीम को नोटिस जारी कर चार हफ्ते में जवाब मांगा है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद अब राम रहीम के खिलाफ निचली अदालत में ट्रायल शुरू होगा। पंजाब सरकार ने डेरा सच्चा समिति के तीन सदस्यों प्रदीप क्लेर, हर्ष धुरी और संदीप बरेटा के खिलाफ भी मुकदमा चलाने की मंजूरी दी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पंजाब के फरीदकोट के थाने में दर्ज तीन मामलों में मुकदमा चलाने की मंजूरी दी गई है।

देशभर के सीआरपीएफ स्कूलों में बम की धमकी... दहशत फैलाने की मंशा

नई दिल्ली । दिल्ली के रोहिणी इलाके में सीआरपीएफ स्कूल के करीब बम विस्फोट के बाद देशभर के अन्य राज्यों में सीआरपीएफ स्कूलों में बम विस्फोट को लेकर धमकी दी गई है। बताया जा रहा हैं कि देशभर के सीआरपीएफ स्कूलों को ईमेल के द्वारा धमकी दी गई है। इसमें दो स्कूल दिल्ली और एक हैदराबाद में हैं। हालांकि ईमेल के फर्जी होने का भी संदेह है। इसके बावजूद ताजा धमकी ने दिल्ली सहित सभी स्कूलों में दहशत फैला दी है। माना जा रहा है कि यह ईमेल किसी ने दहशत फैलाने के इरादे से किया गया है। खास बात है कि ई-मेल भेजने वालों ने मेल को लिस्टेड स्कूल के कमरों में नाइट्रेट आधारित आईईडी ब्लास्ट करने की बात कही है। ईमेल भेजने वाले ने सुबह 11 बजे से पहले सभी स्कूलों को खाली करने को कह दिया है। दिल्ली पुलिस ने कहा कि वे रोहिणी के प्रशांत विहार इलाके में सीआरपीएफ स्कूल में हुए विस्फोट के लिए खालिस्तानी लिंक की जांच कर रहे हैं।

मर्सिडीज ने युवक को उड़ाया मौके पर ही मौत, छह माह में हिट एंड रन की चौथी घटना

मुंबई। महाराष्ट्र के ठाणे में मर्सिडीज कार ने एक युवक को टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान दर्शन हेगड़े के रुप में हुई है। पुलिस ने बताया कि यह घटना 20 अक्टूबर देर रात की है। पुलिस ने बताया कि यह हादसा तब हुआ, जब दर्शन खाना खरीदने के बाद घर लौट रहा था। नासिक हाईवे की ओर जा रही मर्सिडीज ने उसे टक्कर मार दी जिससे युवक की मौत हो गई और ड्राइवर मौके से फरार हो गया। पुलिस ने कार को जब्त कर लिया है। ड्रायवर की पहचान अभिजीत नायर के रूप में हुई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। महाराष्ट्र में 6 महीने में हिट एंड रन का ये चौथा मामला है। पुलिस ने बताया कि नउपाड़ा पुलिस स्टेशन में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। यह दुर्घटना महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे के ठाणे स्थित आवास के पास हुई। पुलिस इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। हालांकि, बताया जा रहा है घटना के समय इलाके में लगे कैमरे काम नहीं कर रहे थे।

नांदेड़ में आया 3.8 तीव्रता का भूकंप, नुकसान की जानकारी नहीं

नांदेड़। महाराष्ट्र के नांदेड़ में मंगलवार सुबह 3.8 तीव्रता का भूकंप आया। इसकी जानकारी राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) ने दी। भूकंप सुबह 6:52 बजे आया था। भूकंप का केंद्र 19.38 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 77.46 डिग्री पूर्वी देशांतर पर था, जिसकी गहराई 5 किलोमीटर थी। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी ने एक्स पर पोस्ट किया। इससे किसी प्रकार के नुकसान की जानकारी नहीं मिली है।

देश बदलने का ख्वाब लेकर आए अरविंद केजरीवाल माफी एक्सपर्ट बन गए हैं : रविशंकर प्रसाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा अरविंद केजरीवाल की याचिका खारिज किए जाने का हवाला देते हुए कहा है कि देश को बदलने का ख्वाब लेकर आए अरविंद केजरीवाल अब माफी एक्सपर्ट बन गए हैं। अन्ना आंदोलन के समय कही गई एक भी बात को आज केजरीवाल फॉलो नहीं कर रहे हैं।

भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए रविशंकर प्रसाद ने कहा कि कल सुप्रीम कोर्ट ने मानहानि के मामले पर रोक लगाने की अरविंद केजरीवाल की याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने गुजरात हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी।

प्रसाद ने केजरीवाल पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर अपशब्दों का प्रयोग करने का आरोप लगाते हुए कहा कि एक समय केजरीवाल के मन में पीएम मोदी की शैक्षणिक योग्यता और डिग्री को लेकर जागृति आ गई थी। रोज सवाल पूछते थे कि पीएम कहां से पढ़े हैं, कितना पढ़े हैं, डिग्री दिखाइए। यहां तक कि अपने लोगों से उन्होंने आरटीआई तक लगवाई। गुजरात विश्वविद्यालय के बारे में उस समय अनाश-शनाप बातें भी कही थी। गुजरात विश्वविद्यालय ने अपने रजिस्ट्रार के माध्यम से मानहानि का केस फाइल किया था। जिसके खिलाफ केजरीवाल की याचिका को सेशन कोर्ट और हाईकोर्ट तक ने खारिज कर दिया और अब सुप्रीम कोर्ट ने भी उनकी याचिका को खारिज कर दिया। भाजपा नेता ने आगे दावा किया कि यह सुनने में आया है कि केजरीवाल ने सुनवाई के दौरान ही माफी मांगने की बात कही। लेकिन, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर माफी ही मांगनी थी तो पहले मांगते। अब इस मामले में या तो कोर्ट को फैसला देना होगा या केजरीवाल को यह याचिका वापस लेनी होगी तो उन्होंने उसे वापस ले लिया। ऐसे में अब केजरीवाल पर गुजरात में आपराधिक मानहानि का मामला चलता रहेगा।

प्रसाद ने कहा कि दुनिया को ईमानदारी और भ्रष्टाचार पर लेक्चर देने वाले केजरीवाल का असली चेहरा तो पहले ही सामने आ चुका है। अरविंद केजरीवाल अलग-अलग मामलों में 10 बार माफी मांग चुके हैं। उन्होंने स्वर्गीय अरुण जेटली, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, विक्रम मजीठिया, कपिल सिब्बल और उनके बेटे एवं अवतार सिंह भड़ाना सहित कई मामलों का जिक्र करते हुए बताया कि केजरीवाल ने कब-कब माफी मांगी है। उन्होंने कहा कि देश की राजनीति में आलोचना और विरोध का अधिकार है, लेकिन देश की राजनीति में झूठे और मर्यादा विहीन आरोप लगाने का अधिकार नहीं है। अरविंद केजरीवाल का आचरण गैर-जिम्मेदाराना है और अब उम्मीद कर सकते हैं कि वह अपनी जुबान पर लगाम लगाएंगे। इस मामले में राहुल गांधी भी केजरीवाल के सखा हैं।

जनसंख्या नियंत्रण को लेकर आ रहे बयानों पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण 60-70 वर्षों से इस देश की प्रतिबद्धता है और सबको इसका ख्याल रखना चाहिए। प्रियंका गांधी के वायनाड से चुनाव जीतने के बाद भाजपा के सामने चुनौती बढ़ने के सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि चुनौती से ना तो हम डरते हैं और ना ही हमारे नेता डरते हैं। अगर प्रियंका गांधी चुनाव जीतकर आती हैं तो उनकी तुलना उनके भाई (राहुल गांधी) से होगी।

भारत और चीन के संबंधों को लेकर विपक्षी नेताओं द्वारा दिए जा रहे बयानों को लेकर पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि जहां तक चीन के साथ रिश्तों का सवाल है, यह एक संवेदनशील विषय है। इसमें कूटनीतिक स्तर पर वार्ता हुई और वार्ता के बाद जो भी निष्कर्ष निकला, उसकी जानकारी विदेश सचिव और विदेश मंत्री ने दी है और उन्हें इसके अलावा इस मसले पर कुछ नहीं कहना है। लेकिन, जहां तक राहुल गांधी और ओवैसी साहब की टिप्पणियों का सवाल है, कूटनीति और कूटनीतिक संवाद को लेकर उनकी समझदारी कितनी है, इस पर चर्चा करने की आवश्यकता है। रामगोपाल यादव के सीजेआई को लेकर दिए गए विवादित बयान को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि रामगोपाल यादव ने अपने बयान को वापस ले लिया है। लेकिन न्यायपालिका, सभी न्यायाधीश और मुख्य न्यायाधीश इन सभी लोगों का सम्मान हमें करना चाहिए। एक स्वतंत्र न्यायपालिका देश के लोकतंत्र के लिए आवश्यक है और यह संवैधानिक परंपरा भी है।

हिंदू स्वाभिमान यात्रा में भाजपा सांसद का विवादित बयान... अररिया में रहना है, तब हिंदू बनना होगा

अररिया । बिहार में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने अररिया में एक विवादास्पद बयान देकर दिया है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा के दौरान आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा, अगर अररिया में रहना है, तब हिंदू बनना होगा। इस बयान ने सोशल मीडिया पर तेजी से प्रतिक्रियाएं आ रही हैं, जिसमें लोग उनकी आलोचना कर रहे हैं।

कई लोगों का कहना है कि अररिया में रहना है, तब सामाजिक सद्भाव बनाए रखना चाहिए, न कि धार्मिक पहचान पर जोर देना चाहिए। केंद्रीय मंत्री सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा 21 अक्टूबर को अररिया पहुंची थी, जहां ठाकुरबाड़ी परिसर में सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में केंद्रीय मंत्री सिंह, धर्म गुरु दीपांकरजी महाराज और भाजपा व हिंदू संगठनों के अन्य सदस्य शामिल हुए थे। इस दौरान सांसद सिंह ने कहा, खुद को हिंदू बोलने में भला कैसी शर्म? जब बेटा-बेटी की शादी करनी हो तब जात-पात खोज लीजिए, लेकिन जब हिंदुओं की एकजुटता की बात हो तब पहले हिंदू बनिए, बाद में जाति को ढूंढिए। इस बयान के बाद कई लोग सोशल मीडिया पर सांसद की आलोचना कर रहे हैं, यह कहते हुए कि उनका बयान समाज में नफरत फैलाने वाला है। दूसरी ओर, भाजपा से जुड़े लोगों ने कहा कि प्रदीप सिंह का इरादा किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था, बल्कि वह केवल हिंदुओं की एकजुटता की बात कर रहे थे। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने इस विवादित बयान पर कोई टिप्पणी नहीं की, केवल यह कहा कि हिंदू स्वाभिमान यात्रा उनका व्यक्तिगत कार्यक्रम है।

लद्दाख को लेकर वांगचुक का अनशन खत्म, गृह मंत्रालय ने बातचीत के लिए बुलाया

जम्मू (एजेंसी)। पर्यावरणविद सोनम वांगचुक का 16 दिनों से चला आ रहा अनशन सोमवार को खत्म कर दिया। केंद्रीय गृह मंत्रालय से बातचीत का न्यौता मिलने के बाद उन्होंने अनशन खत्म करने का फैसला किया। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय तीन दिसंबर को वांगचुक से बातचीत करेंगे।

गृह राज्यमंत्री की अध्यक्षता में उच्च अधिकार प्राप्त कमेटी की बैठक होगी। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के संयुक्त सचिव ने अनशन पर बैठे कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और उन्हें गृह मंत्रालय का पत्र सौंपा। लद्दाख बुद्धिस्ट संगठन के प्रधान ने कहा कि हम अपने चार सूत्रीय एजेंडा से पीछे नहीं हट रहे हैं। चार सूत्रीय एजेंडा पर ही बातचीत करेंगे। ना तो इसमें कोई मुद्दा शामिल होगा ना बाहर होगा। मांगों में लद्दाख को राज्य का दर्जा देने, संविधान की छठी अनुसूची लागू करने, स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने और दो लोकसभा की सीटें व एक राज्यसभा की सीट बनाना शामिल है।

लद्दाख को राज्य का दर्जा देने, संविधान की छठी अनुसूची लागू करने और कई मांगों को लेकर सोनम वांगचुक ने लद्दाखियों के साथ एक सितंबर से लेह से पदयात्रा शुरू की थी। देश के कई हिस्सों से होते हुए 30 सितंबर को सोनम वांगचुक की यात्रा दिल्ली पहुंची। दिल्ली बॉर्डर पर उन्हें हिरासत में ले लिया गया था। बाद में दिल्ली पुलिस ने उन्हें दो अक्टूबर को रिहा कर दिया था। रिहा करते समय गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने आश्वासन दिया था कि लद्दाख के मुद्दों को लेकर दिल्ली में उनकी पीएम मोदी व गृहमंत्री शाह के साथ बैठक होगी। इस आश्वासन पर जब बाद में उचित कार्रवाई न हुई तो उन्होंने दिल्ली में अनशन शुरू कर दिया था।

वांगचुक को दिल्ली के जंतर मंतर पर अनशन करने की अनुमति नहीं मिली थी। इस पर उन्होंने कहा था कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की राजधानी में कोई ऐसी जगह नहीं है, यहां पर लोग अपनी बात को उठा सकें। उन्होंने एक्स पर लिखा था कि महात्मा गांधी के देश में उनके पद्चिन्हों पर चलना इतना मुश्किल क्यों है। जंतर मंतर पर अनशन करने की अनुमति न मिलने पर वह लद्दाख भवन में अनशन किया।

यमुना नदी के ऊपर बादलों की तरह छाया जहरीला झाग, स्वास्थ्य के लिए खतरनाक

-वीडियो वायरल, यूजर्स बोले- समुद्र का पानी साफ हो सकता है तो यमुना का क्यों नहीं?

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिल्ली में यमुना नदी में जहरीले झाग की सफेद चादर सुर्खियां बनी हुई है। इसे अंतरिक्ष से सैटेलाइट इमेजरी में भी कैद किया गया है। तस्वीरों में दक्षिण पूर्वी दिल्ली के ओखला इलाके में करीब तीन किमी दूरी पर स्थित दो बैराजों के पास यमुना नदी में झाग बहता दिखाई दे रहा है। इन दिनों सोशल मीडिया पर इसकी वीडियोज खूब वायरल हो रही है, जिनमें नदी के बड़े हिस्से में झाग दिखाई दे रहा था, जो पानी के ऊपर बादलों जैसा नजर आ रहा था। यूजर्स कह रहे हैं कि जब समंदर का पानी साफ हो सकता है तो यमुना का क्यों नहीं?

एक्सपर्ट्स का कहना है कि यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है, खासकर त्योहारों के मौसम के आने पर। सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) ने कहा कि शहर की स्थिति पर सरकार नजर रख रही है। पार्टी ने एक बयान में कहा कि अधिकारियों ने इस समस्या से निपटने के लिए पहले ही डिफोमर्स का छिड़काव करवा दिया है और सरकार स्थिति को संभालने और हल करने के लिए सक्रिय रूप से कदम उठा रही है। मीडिया रिपोर्ट में साउथ एशिया नेटवर्क ऑन डैम्स, रिवर्स एंड पीपल के एसोसिएट कोऑर्डिनेटर ने बताया कि आमतौर पर यमुना के ऊपरी हिस्से में बाढ़ की स्थिति बनी रहती है, लेकिन इस साल हाल ही में खत्म हुए दक्षिण-पश्चिम मानसून में ऐसी कोई स्थिति नहीं बन पाई है।

पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक, इस झाग में अमोनिया और फॉस्फेट की उच्च मात्रा होती है, जो श्वसन और त्वचा संबंधी समस्याओं सहित गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करती है। इस तरह का झाग तब बनता है, जब सड़ते हुए पौधों और प्रदूषकों से निकलने वाली चर्बी पानी में मिल जाती है, लेकिन मानसून के दौरान इसकी मौजूदगी चौकाने वाली है। कोऑर्डिनेटर ने कहा कि यह असामान्य है क्योंकि नदी में हर साल इस सेगमेंट में कम से कम दो बार कम या मध्यम बाढ़ आती है। उन्होंने कहा कि नदी में प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और वन्यजीवों को प्रभावित करने वाली एक गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि नदी में कुछ प्राकृतिक सफाई क्षमता है, लेकिन प्रदूषण का स्तर चिंताजनक है। आम आदमी पार्टी ने कहा कि सरकारी इंजीनियरों को ओखला और आगरा नहर बैराज पर ऑपरेशन की निगरानी करने का काम सौंपा गया है। एक्सपर्ट्स ने सरकार से नदी में प्रदूषण के स्तर को कम करने का आग्रह किया है।

गोपाल राय का उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा को खत... दिल्ली में डीजल बसें न भेजें

नई दिल्ली । दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के संकट के बीच दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने दिल्ली से सटे बीजेपी शासित राज्यों को पत्र लिखा है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा के परिवहन मंत्रियों को लिखे पत्र में राय ने दिल्ली आने वाली बसों के संबंध में कुछ बातें कही हैं। उन्होंने पत्र में लिखा, दिल्ली में डीजल बसें न भेजें, दिल्ली की तरह सीएनजी और ईवी सार्वजनिक बसों की व्यवस्था करें। दिवाली और सर्दी आने से पहले ही दिल्ली की हवा प्रदूषित होने लगी है। जहरीली होती हवा के बीच कहा जा रहा है कि दिल्ली में जल्द ही ग्रैप-2 लागू किया जा सकता है। अगर ऐसा होता है दिल्ली में उन कामों पर रोक लग जाएगी, जिससे प्रदूषण बढ़ने की आशंका रहती है।

बहन को लेकर राहुल गांधी की अपील... वायनाड से प्रियंका से बेहतर प्रतिनिधि की कल्पना नही

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने अपनी बहन और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। पोस्ट में कहा है कि वह वायनाड से प्रियंका गांधी से बेहतर प्रतिनिधि की कल्पना नहीं कर सकते। यह पोस्ट प्रियंका गांधी केरल की वायनाड लोकसभा उपचुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने से एक दिन पहले किया गया है।

राहुल गांधी ने एक पोस्टर साझा किया, जिसमें वे अपनी बहन प्रियंका के साथ दिख रहे हैं। उन्होंने लिखा, वायनाड के लोगों का मेरे दिल में विशेष स्थान है और मैं अपनी बहन प्रियंका से बेहतर उनके प्रतिनिधि की कल्पना नहीं कर सकता। मुझे विश्वास है कि वह वायनाड की जरूरतों की एक धुर समर्थक रहेंगी और संसद में एक सशक्त आवाज बनेंगी।

राहुल गांधी ने कहा, 23 अक्टूबर को हमारे साथ जुड़ें, जब वह वायनाड लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए अपना नामांकन दाखिल करेंगी। आइए हम सब मिलकर सुनिश्चित करें कि वायनाड का प्रतिनिधित्व प्यार से होता रहे। प्रियंका गांधी बुधवार को वायनाड से अपना नामांकन दाखिल करेंगी, जिसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी और राहुल गांधी भी उपस्थित रहने वाले है।

राहुल गांधी ने पहले के चुनावों में वायनाड और रायबरेली संसदीय सीट से जीत हासिल की थी, लेकिन उन्होंने रायबरेली सीट का प्रतिनिधित्व करने का फैसला किया था। प्रियंका गांधी की यह पहली चुनावी एंट्री होगी। अगर वह वायनाड से चुनाव जीत जाती हैं, तब यह पहली बार होगा जब गांधी परिवार के तीनों सदस्य संसद में एक साथ नजर आएंगें। वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव 13 नवंबर को होगा, और इसके परिणाम 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे।

चिराग की दो टूक.... कई लोग हैं जो चाहते हैं कि मेरे और मेरे प्रधानमंत्री के बीच दूरियां आएं

पटना (एजेंसी)। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर उठ रही अटकलों को खारिज किया। मंगलवार को मीडिया से बात करते हुए कहा कि यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) को गठबंधन में केवल एक सीट मिलने से नाराज हैं। केंद्रीय मंत्री पासवान ने स्पष्ट किया, 'मैं एक बात साफ कर दूं कि इसतरह के कई लोग हैं जो चाहते हैं कि मेरे और मेरे प्रधानमंत्री के बीच दूरियां आएं। मैं अपने प्रधानमंत्री से किसी भी तरह से विवाद में नहीं पड़ सकता। उन्होंने कहा कि वह न केवल खुश हैं, बल्कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ गठबंधन से पूरी तरह संतुष्ट हैं। उन्होंने बताया, भाजपा ने हमें वहीं सम्मान दिया है जो हमारे नेता रामविलास पासवान के समय में मिला करता था। हमें 2014 में भी एक सीट मिली थी, और इस बार हमने जो सीटें चुनी थीं, उसी में से हमें गठबंधन के तहत लड़ने का मौका मिला है।'

चिराग ने विश्वास जाहिर कियास कि उनकी पार्टी चुनावी मैदान में पूरी ताकत से उतरेगी और झारखंड में एक मजबूत एनडीए सरकार बनाने की उम्मीद जाहिर की है। उन्होंने कहा, 'हेमंत सोरेन की सरकार में भ्रष्टाचार और विवादों की भरमार है। मुख्यमंत्री तक को भ्रष्टाचार के आरोपों में जेल जाना पड़ा है। इसके बाद राज्य की स्थिति शर्मनाक हो गई है। उन्होंने इंडिया गठबंधन के भीतर के मतभेदों का जिक्र करते हुए कहा कि कांग्रेस और राजद के बीच आरोप-प्रत्यारोप से यह साफ है कि विपक्ष एकजुट नहीं है। उन्होंने कहा, 'जो गठबंधन एक-दूसरे के साथियों को चुनाव लड़ने तक का सम्मान नहीं दे पा रहा, वह कैसे एक मंच पर आकर वोटर्स को रिझाएंगे।'

मजदूरों का घाटी छोड़ना समस्या का हल नहीं, देश में जाएगा गलत संदेश

– महबूबा मुफ्ती ने राज्य सरकार पर लगाए आरोप

जम्मू (एजेंसी)। कश्मीर में बढ़ रहे आतंकी हमलों पर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि कश्मीर समस्या का हल निकालने के लिए राज्य सरकार को सार्थक प्रयास करने चाहिए। सोनमर्ग में हुए बर्बर हमले के बाद स्थानीय प्रशासन नॉन-लोकल मजदूरों पर तुरंत घाटी छोड़ने का दबाव बना रहा है। मैं समझती हूं कि यह प्रशासन की घबराहट है। मगर, उन्हें इस तरह से चले जाने के लिए कहना कोई समाधान नहीं है। ऐसा करने से अधिक कठिनाइयां पैदा होंगी और देश में बहुत बुरा संदेश जाएगा। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में हाल ही में शांतिपूर्ण और आतंक मुक्त चुनाव सम्पन्न हुए हैं। अब ऐसी त्वरित प्रतिक्रिया से दूसरे राज्यों में काम करने और पढ़ने वाले कश्मीरियों के खिलाफ भी नाराजगी हो सकती है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और राज्यपाल मनोज सिन्हा से निवेदन है कि हस्तक्षेप करें और कम से कम उन्हें पर्याप्त समय दिया जाए। मालूम हो कि जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले में श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर सुरंग निर्माण स्थल पर आतंकवादी हमला हुआ। इसमें एक डॉक्टर और 6 श्रमिकों की मौत हो गई।

कश्मीर समस्या हल करने के लिए वास्तविक प्रयासों की आवश्यकता

पीडीपी की नेता व महबूबा मुफ्ती की बेटी इल्तिजा मुफ्ती ने भी गांदरबल हमले पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि चुनाव या अंतरराष्ट्रीय मैराथन जैसे बड़े आयोजन इस सच्चाई को नहीं छिपा सकते कि कश्मीर में एक ऐसी समस्या है जिसे हल करने के लिए वास्तविक प्रयासों की आवश्यकता है। कश्मीर में एक ऐसी समस्या है, जो दशकों से निर्दोष लोगों की जान ले रही है। यह तब तक जारी रहेगी जब तक हम इसे स्वीकार नहीं करते और इसे हल करने के लिए वास्तविक प्रयास नहीं करते।